

डा० योगानन्दझा

एहि पोथीक प्रणेता डा० योगानन्दझा मैथिली भाषा साहित्यक समृद्धिक हेतु प्रतिबद्ध लेखन एवं क्षेत्रानुसंधानमे निपुणता प्राप्त छथि। **लोकजीवन ओ लोकसाहित्य** (निबन्ध 1986), **मैथिली शाक्त साहित्य** (संपादन 1996), **फकीर मोहन सेनापति** (अनुवाद 2000), **आलेख सञ्चयन** (निबन्ध 2002), **बिहारक लोककथा** (अनुवाद 2002), **मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष** (निबन्ध 2006), **स्नेहलता** (विनिबंध 2007) आदि हिनक अन्य प्रकाशित कृति सभ छनि। ई 1998सँ 2002 धरि साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीमे मैथिली परामर्शदातृ समितिक सदस्य रहि चुकल छथि। पी. सी. राय चौधुरी कृत '**द फॉक टेल्स ऑफ बिहार**'क मैथिली अनुवाद '**बिहारक लोककथा**' पर हिनका वर्ष 2005क साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार प्रदत्त छनि। भारतीय साहित्यकार संसद, समस्तीपुर हिनका क्रमश. **पं० रमानाथ झा**, (2003), **आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन'** (2006) एवं **बाबूराव विष्णु गराड़कर** (2007) शिखर साहित्यकार सम्मानसँ समलंकृत कयने छनि। भारती परिषद्, प्रयाग हिनक **सारस्वती समभ्यर्चना** 2004मे कयने छनि।



- डा. योगानन्दजी विलक्षण प्रतिभा रखैत छथि, कियैक तँ प्रतिकूल सेवामे रहितहुँ हिनक मैथिली साहित्यक सार्थक सेवा स्वयंमे एक गोट उपलब्धि थिक। ई कहबामे कनेको संकोच नहि होइत अछि जे ई मिथिलाक सांस्कृतिक ओ साहित्यिक सम्पदाक मर्मज्ञ समालोचकक रूपमे प्रतिष्ठापित भऽ चुकलाह अछि। अनुसन्धान हिनक व्यसन छनि आ ओकरा सरलता, स्वच्छता एवं स्पष्टताक संग पाठकक सोझाँ परसब धर्म।
- डा. योगानन्दजी ओहि समीक्षकलोकनिमे नहि जे अपन आग्रही दृष्टिकेँ रचनाकार पर थोपैत छथि अथवा फेर ई आ ओ लेबलक वस्तु तकबाक लेहाजसँ कलाक बाजारमे अनेरे बौआइत छथि। हिनक सधल दृष्टि आ विनम्र रसज्ञता कवि-व्यक्तिक ओहि तहकेँ खोलैत अछि, जाहिसँ कविता उघरैछ नहि, अपितु आओर बेसी बुझबाक योग्य आ सार्थक लागऽ लगैछ।
- डा. योगानन्दजी वस्तुतः समीक्षकेटा नहि, रसज्ञ सेहो छथि आओर हिनक एहि अन्तःवृत्तिकेँ मैथिलीक कतेको अधीत विद्वानलोकनि बुझबो कयलनि अछि आ मानबो कयलनि अछि।

(पुरोवचनसँ)

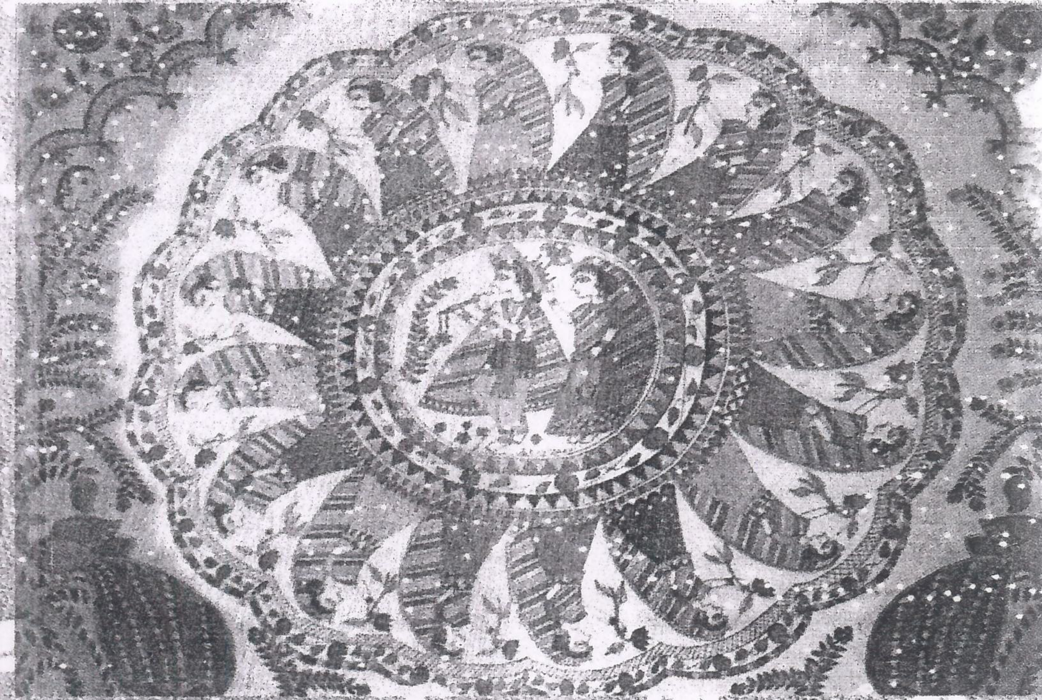
- डा. श्री योगानन्दझा मैथिलीक वरीय साहित्यकार एवं समालोचक छथि। हिनक अवदान सभसँ मैथिलीक कविता, कथा, अनुसंधान, आलोचना एवं भाषान्तरण विधा समृद्ध होइत रहल अछि। हम हिनक निरन्तर वर्द्धिष्णुताक प्रति आशान्वित छी।

डा. इन्द्रकान्तझा
पूर्व प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय
पूर्व निदेशक, मैथिली अकादमी, पटना एवं संस्कृत अकादमी, पटना

Design : Abhay Jha

लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पदा   डा० योगानन्दझा

लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पदा



डा० योगानन्दझा

लेखकक कृति विवेचन

लोकजीवन ओ लोकसाहित्य

मैथिली लोकवृत्तक क्षेत्रमे गम्भीर अनुसन्धान कयनिहार युवा लेखक डा० योगानन्दझाक एक गोट पुस्तक **लोकजीवन ओ लोकसाहित्य** 1986मे प्रकाशित भेल। एहिमे दुइ खण्ड अछि। पहिल खंडमे मिथिलाक छओ गोट जाति डोम, चमार, धोबि, हलुआइ, मलाह ओ कुरंडी जातिक समाजशास्त्रीय दृष्टिसँ परिचय देल गेल अछि। दोसर खंडमे एहि जाति सभक जातीय देवता सम्बन्धी बारह गोट गाथा- श्यामसिंह (बंसीधर बाभन), लालबनबाबा, गरीबन भुइयाँ, मोतीदाइ, गणिनाथ-गोविन्द, फेकूराम, कारिख, दुलरादयाल, गाडोदेवी, जयसिंह, अमरसिंह ओ केवल महराजक कथावस्तु सहित विवेचन अछि। एहिमे एक-दू गाथा-नायककेँ छोड़ि शेष गाथा-नायक ओ तनिक गाथा सब सर्वथा अभिनव अनुसन्धान थिक। अभिनव मूल सामग्रीक संग्रथनसँ ई पुस्तक मैथिली लोकगाथे नहि, लोकवृत्तहुक क्षेत्रमे पथ-प्रदर्शक बनबा योग्य अछि।

मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य

डा. रामदेवझा, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, कबिलपुर,

लहेरियासराय, दरभंगा - 846001, पृ० 41-42



आलेख सञ्चयन

आलेख सञ्चयनमे डा. योगानन्दझाक समय-समय पर लिखल नौ गोट आलेखक संग्रह अछि। ई सभ अनुसंधानपरक आ समीक्षात्मक निबंध अछि। आलोच्य नओ निबंध तथ्य संकलन, तकर विश्लेषण-संयोजन आ अन्ततः पठनीय विवरण प्रस्तुत कऽ सकबाक निस्सन्दिग्ध क्षमताक परिचायक अछि। अपन एहि सर्वथा सुरुचिपूर्ण शोध आ समीक्षा निबंध सभक लेल डा० योगानन्दझा धन्यवादार्ह छथि।

भारती मंडन, अंक 10, पृ० 302-04

डा. रत्नेश्वर मिश्र, पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग

ल. ना. मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा

लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पदा

डा० योगानन्दझा



मिथिला रिसर्च सोसाइटी
कबिलपुर, लहेरियांसराय
दरभंगा – 846 001

LOK, SAHITYA O SHABDA-SAMPADA : A Collection of Literary, Critical & Philological Essays by Dr. Yoganand Jha, 2007, Rs.150/-

प्रकाशक : **मिथिला रिसर्च सोसाइटी**
कबिलपुर, लहेरियाराराय
दरभंगा - 846 001

प्रथम संस्करण : 2007

मूल्य : 150.00 (एक सय पचास टाका) मात्र

पुस्तक प्राप्ति स्थल :
श्री धीरज कुमार झा
आत्मज डा० योगानन्द झा
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा - 846001
दूरभाष : 06272-244161
मो०: 09334493330

कम्प्यूटर संयोजन : **डिजिटल कम्प्यूटर एण्ड कम्यूनिकेशन**
जी०एन०गंज, लहेरियासराय (दरभंगा)
मोबाइल : 9334691073

आवरण शिल्प : **सुश्री बेबी कुमारी**
आत्मजा - श्री रामबहादुर राउत
ग्राम+पोस्ट : फटकी, थाना : मधेपुर
जिला : मधुबनी (बिहार)
दूरभाष : 06272-254958

मुद्रक : **सुधीर प्रिंटिंग वर्क्स**
रोड नं०: 13 सी, राजेन्द्रनगर
पटना-800016
दूरभाष : 0612-2687897

समर्पण



मातृदेवीक कर-कमल मे

अनुक्रमणिका



पुरोवचन

कोनो साहित्यमे निष्पक्ष, निधोख आ निर्णायक समालोचनाक स्थान बड़ पैघ आ महत्त्वपूर्ण होइत छैक, कियैक तँ एकरा माध्यमसँ कृतिकारक रचना-शक्ति, लेखन-शैली, अभिव्यक्ति आ मौलिकताकेँ परेखल जाइत छैक। ई एक गोट सारस्वत कर्म थिक तथा एहिमे इमानदारीक आवश्यकता आन कोनो कार्यसँ बेसी होइत छैक। समालोचनाक अर्थ वस्तुतः रचनाक मूल्यगत निर्णय आ ओहिमे सौन्दर्यमूलक अनुभवक ताक-हेर करब थिक। एकरा आँखि आ रचनाकेँ अयना कहल गेलै अछि। एहिमे रचनाकारक आत्म-चेतना, ओकर रुचि, संस्कार, दृष्टि अर्थात् सभ मिला कऽ ओकर परिवेश आ अनुभूति प्रतिबिम्बित होइत छैक। आ, ई आँखि मात्र आलोचकेटाकेँ होइत छनि, से नहि, प्रत्युत प्रत्येक रचनाकार रचनासँ पूर्व एही आँखिसँ अपन आत्म-मूल्यांकन करैत छथि।

मुदा, ककरो कृतित्वक निष्पक्ष आ सूक्ष्म निरीक्षण-परीक्षण कठिन कार्य तँ अछिए, ई स्वयं एक गोट न्यायपूर्ण साहित्योदात्त कर्त्तव्य सेहो अछि। एहि उत्तरदायित्व भरल निर्णायक लेखन-योगमे वैयक्तिक पक्षपात अथवा अपन समीक्षात्मक दौर्बल्य देखओला सन्ताँ आलोचना-धर्मक हानि तँ होइते छैक, आलोचकक सेहो व्यापक खिधांश होइत छनि आ एकरा संगहि साहित्यमे दुर्गुण आ उच्छृंखलताक निम्नस्तरीय प्रभाव सेहो बढ़ऽ लगैत छैक। ई अकाट्य सत्य अछि जे कथा साहित्यक अपेक्षा काव्य-साहित्यक सूक्ष्म समालोचना बेसी कठिनाह बुझि पड़ैछ, कियैक तँ एहिमे आन गुण सभक अतिरिक्त रसमय भावक उत्कृष्टता आ मर्मस्पर्शी अभिव्यंजनाक खोज कयल जाइत छैक।

रहरहाँ ई देखल गेल अछि जे उत्कृष्ट अथवा सर्वोत्कृष्ट कृतित्वक अवतरणसँ समकालीन समालोचक घबड़ा उठैत छथि अथवा कोनो आन कारणेँ मौन धारण कऽ लैत छथि। फलस्वरूप काल-पंकसँ उत्पन्न काव्य-कमल कोनो सूर्य-समीक्षकक अभावमे अपन पूर्ण सौन्दर्य-सुरभि बिलहबासँ बरखो-बरख धरि वंचित रहि जाइत अछि आ, एहि बीच मध्यम श्रेणीक कृति सभ अनुचित समीक्षात्मक प्रकाश प्राप्त कऽ अपन सामयिक चमक बढ़यबामे प्रायः सफल भऽ जाइत अछि। तेँ , समालोचक, विशेष कऽ

निष्पक्ष आ निर्भीक, उत्तम सर्जनात्मक साहित्यनात्रक पर्यवेक्षक, प्रशंसक वा परीक्षकेटा नहि, अपितु ओकर गुण-गरिमाक सौन्दर्यमर्मी स्थायी ग्राहक आ सहृदय दोष-निर्देशक तथा कउखन रचनात्मक मार्गदर्शक सेहो होइत छथि। वस्तुतः एहने आलोचकके आलोचनाचार्य अथवा आलोचकाचार्य उपाधिसँ विभूषित, सम्बोधित ओ अलंकृत कयल जाइत छनि।

मैथिली आलोचना एम्हर विपथगा जकाँ भऽ गेल अछि। खास कऽ तीन दशकसँ आओर बेसी। ओना मैथिली साहित्यमे आलोचना विधाक अभाव प्रारम्भेसँ रहल अछि। जँ अछियो तँ कतओ पूर्वाग्रहग्रस्त अस्वीकृतिसँ, तँ कतओ अनावश्यके आसमान चढ़ेबाक आतुरतासँ आक्रांत। एहेनमे ई कहल जा सकैत अछि जे वा तँ ई नैष्ठिक आ जड़शास्त्रक अनुगमन कऽ रहल अछि वा फेर कोनो विचार वा वादकें सम्पूर्ण रचनाकर्म पर थोपि कऽ प्रसन्न भऽ जाय चाहैत अछि। सम्पूर्ण रचनात्मक प्रतिभा पारस्परिक रूपें '*अहो रूपं अहो ध्वनिः*' मे जुटल अछि, अथवा कतहु-कतहु माथ फोड़ौअलिक स्थिति सेहो उत्पन्न कयने अछि। एहेन विषम परिस्थितिमे सर्जनात्मक उपलब्धि सभक इमानदार परीक्षण, विश्लेषण आ मूल्यांकनक कार्य कतेक महत्त्वपूर्ण अछि, कहबाक प्रयोजन नहि। डॉ० योगानन्दझाजीक **लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पदा** एम्हर प्रकाशित आन-आन गैर इमानदार पोथी सभसँ एहि अर्थमे बेस फराक अछि। एहिमे एक सहृदय सुधी समीक्षकक दृष्टि स्पष्ट आ पारदर्शी जकाँ देखल जा सकैत अछि।

डॉ० योगानन्दजी विलक्षण प्रतिभा रखैत छथि, कियैक तँ प्रतिकूल सेवाने रहितहुँ हिनक मैथिली साहित्यक सार्थक सेवा स्वयंमे एक गोट उपलब्धि थिक। ई कहबामे कनेको संकोच नहि होइत अछि जे ई मिथिलाक सांस्कृतिक ओ साहित्यिक सम्पदाक मर्मज्ञ समालोचकक रूपमे प्रतिष्ठापित भऽ चुकलाह अछि। अनुसन्धान हिनक व्यसन छनि आ ओकरा सरलता, स्वच्छता एवं स्पष्टताक संग पाठकक सोझाँ परसब धर्म। अनुवाद हो अथवा मूल, हिनक भाषा प्राञ्जल ओ व्याकरणक कसौटी पर कसल हेबेटा करत। हिनक लेख सभ भावक दृष्टिएँ गंभीर सेहो होइत छनि। साहित्योपयोगी शोधपरक पोथी लिखबाक हिनक आकुलता-व्याकुलता विभिन्न पत्र-पत्रिका सभमे छिड़िआयल शताधिक निबन्धकें देखला सन्ताँ स्पष्ट परिलक्षित होइत अछि।

असल बात तँ ई अछि जे डॉ० योगानन्दजी ओहि समीक्षकलोकनिमे नहि जे अपन आग्रही दृष्टिकें रचनाकार पर थोपैत छथि अथवा फेर ***ई*** आ ***ओ*** लेबुलक वस्तु तकबाक लेहाजसँ कलाक बाजारमे अनेरे बौआइत छथि। हिनक सधल दृष्टि आ विनम्र रसज्ञता कवि-व्यक्तित्वक ओहि तहकें खौलैत अछि, जाहिसँ कविता उघरैछ नहि, अपितु आओर बेसी बुझबाक योग्य आ सार्थक लागऽ लगैछ। समीक्षाक एहिसँ बेसी नीक सरोकार आओर की भऽ सकैछ जे ओ कृति धरि पहुँचबाक लेल बाटकें आओर बेसी सुगम बनबैछ। संगहि पाठकलोकनिकें संकेत सेहो दैत अछि जे रसिक समाज अपन युगक अर्थ तकैत चलथु।

डॉ० योगानन्दजी वस्तुतः समीक्षकेटा नहि, रसज्ञ सेहो छथि आओर हिनक एहि अन्तःवृत्तिकें मैथिलीक कतेको अधीत विद्वानलोकनि बुझबो कयलनि अछि आ मानबो कयलनि अछि। जाहि आलोचनाकें लोक मात्र छंद आ शब्द नापयवला फीता भरि बुझैत आयल अछि, जाहि व्यर्थ आ अनर्गल प्रयाससँ आलोचना मात्र बदनामेटा नहि होइत अछि, अपन अस्तित्व सेहो समाप्त कऽ लैत अछि, एहेन स्थितिक ठीक विपरीत डॉ० योगानन्दजीक ई श्लाघनीय प्रयास समकालीन रचनाक संसारमे समीक्षा कर्मकें मान-सम्मान आ विश्वसनीयता सेहो दियौतैक, ई हमर एकान्त आ दृढ विश्वास अछि।

एहि पोथीमे संकलित आलेख सभकें तीन खण्डमे विभक्त कयल गेल अछि। प्रथम **लोक** खण्डमे पाँच, द्वितीय **साहित्य** खण्डमे नौ आ अन्तिम **शब्द-सम्पदा** खण्डमे एक गोट आलेख गोपुच्छाग्रक सादृश्य रखैत अछि। *लोक* खण्डक आलेख सभ मिथिलाक लोकजीवनमे परिव्याप्त लोकश्रुति, लोकगीत, लोकनाट्य, लोकगाथा ओ लोकनृत्यसँ सम्बन्धित अछि। *साहित्य* खण्डमे मैथिली साहित्यक आधुनिक कालक सात गोट मनीषीलोकनिकें हुनकालोकनिक विशिष्टतम कृतिक संगे उपस्थित कयल गेलनि अछि, सेहो, ओहन कृति सभक संग जाहिसँ मैथिलीक सामान्य पाठकलोकनिकें सामान्यतः अपरिचय किंवा अल्प परिचय रहलनि अछि। निबन्धकार अपन अनुसन्धानात्मक ओ समीक्षात्मक विश्लेषण क्षमताक संग विवेच्य कृति ओ कृती सभकें ततेक मनोयोगपूर्वक प्रस्तुत कयलनि अछि जे कतहु-कतहु मौलिकोसँ बेसी रोचक ओ हृदयग्राही भऽ गेल अछि। अन्तिम *शब्द-सम्पदा* खण्डमे मिथिलाक डोम जातिक जातीय व्यवसाय अर्थात् वंश उद्योगक पारिभाषिक ओ तकनीकी शब्दावलीक व्याख्या प्रस्तुत कयल गेल अछि।

पहिल आलेखमे मैथिली साहित्यक जाज्वल्यमान नक्षत्र कविकोकिल महाकवि विद्यापतिक सम्बन्धमे मिथिलामे प्रचलित लोकश्रुतिक आधार पर हुनक **मिथकीय स्वरूपक** वर्णन भेल अछि। हुनक ई स्वरूप वस्तुतः मिथिलाक मानसमे हुनका प्रति आस्थाक अभिव्यक्तिक संगहि हुनक *तिल तिल नूतन* काव्यक प्रति मिथिलाक लोकक अजस्र अनुरागक निदर्शन थिक, जकरा निबन्धकार सहज शब्दावलीक माध्यमे सम्प्रेषित कयलनि अछि। विद्यापतिक स्वप्न वृत्तान्त जे हुनका मृत्युक पूर्वाभास देने छलनि आ ओ गंगालाभक हेतु गामसँ विदा भऽ गेल छलाह, विद्यापतिक द्वारा शिवसिंहकें नसरत शाहक बन्दीखानासँ मुक्त करयबाक सारस्वत प्रयास तथा विद्यापतिक ओहिठाम उगना नामसँ साक्षात् महादेव शिवक चाकरीक वृत्तान्त आदि पर आधारित मिथककें नव

परिप्रेक्ष्यमे देखबाक प्रयास लेखकक एहि निबन्धक प्रतिपाद्य थिकनि।

दोसर आलेखमे **मैथिली लोकगीतमे राष्ट्रिय भावनाकेँ** उदाहृत कय मिथिलाक लोकजीवनमे अदौसँ व्याप्त राष्ट्रियताक प्रति सम्यक् दृष्टिक मूल्यांकन भेल अछि। *'चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुण कर्म विभागशः'* पदेँ राष्ट्रनायक श्रीकृष्ण गीताक माध्यमे जे संदेश देलनि आ जे आइ जाति-पाति, गोत्र-मूल, पूबा-पछिमा आदि अभिधानक संग राष्ट्रकेँ विखण्डित करबाक उपक्रममे लागल अछि, तकरा मिथिलाक लोकजीवनक गीतावली कोन रूपेँ परेखैत रहल अछि, तकरा निबन्धकार एहि आलेखमे फरिछयबामे सफल भेल छथि।

तेसर आलेखमे मिथिलाक लोकजीवनक एक गोट विशिष्ट नाट्यविधा **सामा-चकेबाक** स्थान मैथिल लोकसंस्कृतिमे निरूपित करबाक प्रयास कयल गेल अछि। मिथिलामे भाइ-बहिनिक पारम्परिक स्नेह-सम्बन्धक अद्‌भुत आलेख थिक सामा-चकेबा लोकनाट्यक मिथिलाक जनजीवनमे व्याप्ति, जकरा निबन्धकार स्फुट करबामे सफल भेल छथि।

चारिम आलेखमे मिथिलाक लोकजीवनक एक गोट वीरगाथाक नायक **दीना-भद्रीक** कथा, अनेक उपकथाक संग अभिव्यंजित भेल अछि। क्षेत्रीय अन्वेषण पर आधारित लेखकक ई आलेख मिथिलाक एक गोट विशिष्ट लोकगाथाकेँ जीवन्त बनयबाक दिशामे अन्यतम प्रयास कहल जा सकैछ। अंग्रेज विद्वान डा० ग्रियर्सन द्वारा प्रथम बेर मिथिलाक लोकजीवनसँ प्राप्त एहि गाथाक रिक्थकेँ एक बेर पुनः लोकजगतसँ प्राप्त कऽ साहित्यिक स्वरूप देबाक लेखकक ई प्रयास हुनक अनुन्धित्सु स्वभावक सराहनीय प्रयास थिक।

पाँचम आलेख निबन्धकारक मौलिक चिन्तन पर आधृत विवेचन थिकनि जकरा माध्यमे ओ ई संदेश देबाक प्रयास कयलनि अछि जे मैथिली लोकगीतक अजस्र भंडारमे एखनो अमूल्य-बहुमूल्य मोती सभक दिस अनुसंधित्सुलोकनि ध्यान नहि देलनि अछि। वैश्वीकरणक प्रबल प्रभावसँ आक्रांत अपन एहन सांस्कृतिक धरोहर सभकेँ जँ समय अछैत लिपिबद्ध नहि कऽ लेल जायत, तँ ओकरा सभक विलोपन अवश्यंभावी। एखन धरि राम इकबाल सिंह 'राकेश', डा० अणिमा सिंह, डा० विभूति आनन्द, डा० बालगोविन्द झा 'व्यथित', डा० इन्द्रकान्त झा, श्रीमती पूर्णिमा देवी, श्रीमती कामेश्वरी देवी, श्रीमती तारिणी मिश्र, भोला झा, श्रीराधावल्लभ शर्मा, मंजू देवी, किरण देवी आदिक माध्यमे जाहि लोकगीतावलीक संचयनक प्रयास भेल अछि किंवा नदी गीतक रूपमे श्रीब्रजेश्वर मल्लिक द्वारा *कोशी गीत* अथवा डा० प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' द्वारा नेना भुटकासँ सम्बन्धित *नेना गीत* आदिकेँ संरक्षित करबाक प्रयास भेल अछि, ताहिमे अधिकांश गणकाव्य परम्पराक गीत थिक जकर कविलोकनि ज्ञात छथि किंवा जकर प्रचार-प्रसार सम्भ्रान्त मैथिल परिवारे धरि सीमांकित अछि। लेखक

मिथिलाक सर्वहारा समुदायक सांस्कृतिक पक्षक लोकगीत दिसि इंगित कऽ ओकरा गहबर गीतक नव अभिधान प्रदान कऽ ओकर संकलनक दिशामे अभिनव प्रस्तुतिक हेतु प्रतिबद्धताक आह्वान कयलनि अछि।

दोसर *साहित्य खण्डक* प्रथम आलेख थिक **कविवर जीवनझाक नाट्य गीतमे अलंकार योजना।** कविवर जीवनझा आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्यक प्रवर्त्तक थिकाह। हिनका द्वारा लिखित ओ प्रकाशित *सुन्दर संयोग* प्रथम मैथिली सामाजिक नाटक छल जकर प्रणयन १९०४ मे भऽ चुकल छल। ई नाटक कीर्त्तनिञा नाट्य परम्पराक पुरातन पद्धतिकेँ चुनौती आ लोकरुचिक अनुकूल आधुनिक वस्तु, अभिनेता, रस संबलित नाटकक प्रणयनक दिशामे एकटा साधल डेग छल, जकर परिणामस्वरूप आधुनिक मैथिली नाटकक एहि शताब्दी वर्षमे कविवर जीवनझा शलाका पुरुषक रूपमे प्रतिष्ठित छथि आ मैथिली नाट्यपरम्परा नित्य नव प्रयोगसँ संपुष्ट भऽ दनदना रहल अछि। निबन्धकार कविवरक नाटक सभमे प्रयुक्त पदावलीक माध्यमे हिनक काव्यमे अलंकारक स्थिति ओ विन्यासकेँ रेखांकित करबाक प्रयास कयलनि अछि।

एहि खण्डक दोसर आलेख **नारी शिक्षा आ हरिमोहनझा**मे आधुनिक मैथिली साहित्यमे व्यंग्यसम्राट्क रूपमे प्रख्यात रचनाकार हरिमोहनझाक साहित्यमे मिथिलामे नारी शिक्षाक प्रति हुनक दृष्टिकोणकेँ लेखक स्पष्ट कऽ ई सिद्ध कयलनि अछि जे हरिमोहन बाबू मिथिलामे नारी शिक्षाकेँ ओतहि धरि परिवर्द्धित देखऽ चाहैत छलाह जतऽ धरि नारीक भारतीय नारीत्व सुरक्षित रहनि। लेखकक ई निष्कर्ष हरिमोहनझाक विशाल पाठक समुदायकेँ हुनक साहित्यिक दृष्टिसँ परिचय करौतनि, से सहज विश्वास अछि।

एहि खण्डक तेसर आलेखमे लेखक संस्कृत साहित्यक मर्मज्ञ विद्वान **पंडित आनन्दझाक महेशशतकमे** वर्णित विषयवस्तुकेँ काव्यशास्त्रक निकष पर परेखबाक सराहनीय प्रयास कयलनि अछि। काव्यालोचक काव्य भाषाक ओहि तत्त्व सभक संधान सेहो कयलनि अछि जकर प्रयोग कवि विशेष प्रभावक लेल अपन काव्य रचनामे कयलनि अछि। जतऽ अनावश्यक बुझना गेलनि, डॉ० योगानन्दजी पं० आनन्दझाक भाषा चेतना पर सेहो प्रकाश देलनि अछि। लेखकक ई मन्तव्य सर्वथा सटीक छनि जे *महेशशतक* मैथिली शैव साहित्य ओ राष्ट्रिय भावाभिव्यक्तिक विशिष्ट आयाम थिक।

एहि खण्डक चारिम आलेख थिक **राधाविरहमे शाक्त तत्त्व**। साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा पुरस्कृत पं० काशीकान्तमिश्र 'मधुप'क ई महाकाव्य हिनका *'हम जेबै कुशेश्वर भोर, राङ्गि कय टोर, पहिरि कय काड़ा, झनकाय झनाझन छाड़ा'* आ *'कल बल के भोरे-भोरे ई कोमलांगी औंघैले एली, चौंकि चुप्पे'*क रससिक्त रीतिकालीन कविसँ लगले वास्तविक *कविचूड़ामणि* बना देने छलनि। शब्दालंकारक आग्रही हिनक

मंगलाचरण छल – **सन्तत सन्तति तति सर्जन हित मगन रहैत नगन जे अम्ब** आ कुलदेवी छिन्नमस्तिकाक ई उपासक कृष्णाश्रित काव्यमे शाक्त तत्त्वक अपूर्व समायोजन करबामे सिद्धहस्ततासँ मैथिली जगतकेँ परिचित करा चुकल छलाह। हिनक राधाविरह महाकाव्यमे शाक्त तत्त्वक स्थिति ओ विन्यासकेँ व्याख्यात कऽ लेखक एहि आलेखक माध्यमे मधुपजीक सर्वमान्य छविक भ्रमकेँ तोड़ैत हुनका एक गोट नव रूपमे अवतरित करओलनि अछि।

एहि खण्डक पाँचम आलेख मैथिली साहित्यमे रानाश्रयी वैष्णव सम्प्रदायक सखी साम्प्रदायिक भक्ति साहित्यक एक गोट विशिष्ट कवि **हरेकृष्णलालदासक** व्यक्तित्व ओ कर्त्तृत्वसँ परिचय करबैत अछि। मिथिलाक सांस्कृतिक पक्षक विशिष्ट परिचिति कीर्त्तनक परम्परामे लिखित हिनक हरेकृष्ण विनोद, श्रीसीतारामजन्म संकीर्त्तन ओ सीता स्वंयवर संकीर्त्तन मिथिलामे गणकाव्यक प्रणयनक दिशामे विशिष्ट प्रयास कहल जा सकैत अछि जे लोकानुरंजनक संगहि संस्कार ओ व्यवहारपरक गीतक रूपमे जनकंठमे विद्यमान रहल अछि। तथापि एकर महत्त्व छैक– साम्प्रदायिक रामकाव्यक मैथिलीमे अभिव्यक्तिक रूपमे, जकरा निबन्धकार बिकछयवामे सफल भेल छथि।

छठम आलेख आधुनिक मैथिलीक विशिष्ट विद्वान् ओ अनुसन्धाता-समालोचक डॉ० शैलेन्द्रमोहनझाक भावयित्री प्रतिभासँ व्युत्पन्न हुनक बालसाहित्यक दिग्दर्शन करबैत अछि। पोथी बिनु पढ़नहु लेखकक ई निबन्ध **डॉ0 शैलेन्द्रमोहनझाक बालसाहित्यक** क्षेत्रमे कृत कार्यसँ सम्यक् परिचय करयबामे सफल सिद्ध अछि।

सातम आलेखमे हिन्दी क्षेत्रमे 'नागार्जुन' नामे ख्यातिप्राप्त मैथिलीक कवि-उपन्यासकार पं० वैद्यनाथमिश्र 'यात्री'क मैथिली साहित्यमे युगबोधपरक संवेदनशीलताकेँ रेखांकित करबाक प्रयास करैत डॉ० योगानन्दजी हिनका आधुनिक मैथिली काव्यक क्षेत्रमे युगप्रवर्त्तनक कारक कविक रूपमे प्रतिष्ठापित कयलनि अछि।

आठम आलेखमे आधुनिक मैथिली साहित्यक एकगोट विशिष्ट कवि ओ नाटककार, मौलिक चिन्तनपरक निबन्धकार किरणजीकेँ भाषा आन्दोलनक सशक्त सेनानी आ हुनका द्वारा प्रकाशित मैथिली पत्र **'सत्य सन्देश'केँ** मैथिली भाषा-साहित्य आन्दोलनक विशिष्ट प्रेरक कहैत हुनक प्रखर पत्रकारक रूपकेँ जनचेतनाक प्रतिनिधि स्तम्भ मानल गेलनि अछि।

एहि खण्डक नवम आलेखमे मिथिलाक एक गोट विशिष्ट सारस्वत साधक आ प्रज्ञापुरुष **बबुआजीझा 'अज्ञात'**क व्यक्तित्व ओ हुनक सर्वश्रेष्ठ अवदान **प्रतिज्ञापाण्डवक** समीक्षा कयल गेल अछि। ई ओएह अज्ञात छथि जनिका बिनु जनने, बिनु पढ़ने किछु बउखल लोक **साहित्य अकादेमी पुरस्कार** भेटला सन्ताँ अनघोल मचौने छल। तनिकालोकनिक लेल ई निबन्ध विशेष रूपसँ पठनीय छनि – अपन रुग्ण मानसिकताक चिकित्सार्थ।

अन्तिम *शब्द-सम्पदा* खण्डमे मैथिलीक व्यावसायिक शब्दावलीक एक गोट विशिष्ट अंशक, जे वंशकर्मसँ सम्बद्ध अछि, व्याख्यात्मक अध्ययन प्रस्तुत कयल गेल अछि। मैथिलीक व्यावसायिक शब्दावलीक संकलन, अध्ययन-अनुशीलनक संगहि ओकरा सभक संरक्षणक दृष्टिऐ ई निबन्ध बेस महत्त्वपूर्ण अछि। मैथिलीक भाषाज्ञान ओ कोशक विस्तारक दृष्टिऐ लेखकक श्रमशील मानवताक ई विशिष्ट प्रयास कहल जा सकैत छनि।

समीक्षा ओ समालोचना वस्तुतः कोनो भाषा-साहित्यक पाठक वर्गकेँ तैयार करबामे विशिष्ट भूमिकाक निर्वाह करैत छैक। ई रचनाक प्रातिभ नेओऐ पर अपन भवन तैयार करैत अछि। एहि रूपमे ओ अनुचिन्तन थिक, मुदा थिक चिन्तने। एहि पोथीकेँ पढ़ैत काल यैह बेर-बेर मोनमे अबैत अछि। एहि इमानदार प्रयास पर दृष्टि देबाक ओहि लोक सभकेँ बेसी आवश्यकता छनि जे निराग्रही आलोचनाक भूखल छथि।

डॉ० योगानन्दझा साहित्यिक सर्जना करैत छथि, साहित्यमे जीबैत छथि, अन्तस्मे गवेषणाक पिआस सदति बनल रहैत छनि। तेँ शिष्ट-विशिष्ट शैलीमे लिखल एहि पोथीसँ मैथिली साहित्यक शोधप्रज्ञलोकनि बेसी उपकृत होएताह। मैथिलीक लेल हिनक चिन्तनशीलता सदति बनल रहनि, एहिना मैथिलीक श्रीवृद्धिमे लागल रहथु-ई हमर अशेष मंगलकामना। हिनका पर मिथिला-मैथिलीकेँ बहुत आस-भरोस छैक।

समस्तीपुर
25 दिसम्बर, 2005

(डॉ० नरेश कुमार 'विकल')
रीडर, मैथिली विभाग
यू. पी. कॉलेज, पूसा
मो०: 9934258110

लेखकीय

मिथिलाक विद्वत् परम्परामे नैबन्धिक ओहन रचनाकारलोकनिकेँ कहल गेलनि जेलोकनि वेद, वेदांग, स्मृति, पुराण, उपनिषदादिसँ वस्तु ग्रहण कऽ ओकरा सभकेँ विषयबद्ध करैत गेलाह आ अपन व्याख्या ओ मत प्रस्तुत कऽ शास्त्रीय विवेचनक मार्गकेँ प्रशस्त करैत रहलाह। अखिल भारतीय फलक पर विद्वत्ताक क्षेत्रमे मिथिलाकेँ यैह नैबन्धिकलोकनि प्रतिष्ठा दिऔलनि।

मुदा आजुक युगमे यावन्तो निबन्धलेखन भऽ रहल अछि से अंशतः किंवा पूर्णतः अंग्रेजीक Essay शब्दक अनुगमन करैत अछि जकर सामान्य अर्थ विषय विशेष पर गद्यमे रचनाक प्रयास थिक। प्रसिद्ध अँग्रेज आलोचक डॉ० जॉन्सन एकरा परिभाषित करैत कहने छलाह जे 'An essay is a loose sally of mind, an irregular, undigested piece, not a regular and orderly composition.' *(An introduction to the study of literature - William Henry Hudson, George G. Harrap and Co. Ltd. 182, High Holborn London, W.C.I. pp 331)*

मुदा डॉ० जॉन्सनक ई परिभाषा अव्याप्तिदोषसँ ग्रस्त बूझल गेल आ Murray's Dictionary मे एकरा परिभाषित करैत कहल गेल जे 'Essay is a composition of moderate length on any particular subject or branch of subject,' adding 'originally implying want of finish, but now said of a composition more or less elaborate in style, though limited in range (*Ibid*. pp 331-332).

साहित्यक ई विधा पूर्णतः स्थापित विधा थिक आ आधुनिक कालमे मैथिलीओमे एहि विधामे पुष्कल रचना होइत रहल अछि। आलोचकलोकनि एकरा अत्यन्त कठिन, मुदा तेहने रोचको विधा मानलनि अछि। कहलो गेल अछि जे '*गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति*'। तकर पाछाँ कारण ई अछि जे नीक निबन्धक परिचय पत्रक रूपमे ओकर conciseness संक्षिप्त सारग्रहण आ thoroughness पूर्णत्व दूनू एके संग अर्थात् सघनता (condensation) केँ स्वीकार कयल गेलैक अछि तथा ओकर रचयिताकेँ विषय विशेषक विशेषज्ञ (Master) होयब आवश्यक मानल गेलैक अछि जकरा स्वतःमे पूर्ण रचना कऽ सकबाक सामर्थ्य होइक।

प्रस्तुत निबन्ध संग्रह मैथिली साहित्यक एहि विधाक सम्पोषणमे हमर विनम्र प्रयास सभक एक गोट बानगी थिक। एकर अधिकांश पूर्वहि कतहु ने कतहु प्रकाशित भऽ पाठकलोकनिक दृष्टि पर आबि चुकल छनि। मुदा स्मारिका, असमय कालकवलित मैथिली पत्रिकादिमे छपल रचनाक सद्यः फलकरी प्रभाव जे होअय, परवर्त्ती कालमे लेखकोकेँ ओकरा ताकि कऽ बहार कऽ लेब अत्यन्त पराभवक काज भऽ जाइत छैक। तखन रसास्वादनक तँ कथे नहि होअय। सामान्य पाठककेँ तँ नहिञे। एहि परिस्थितिसँ उबरबाक हेतु आ एहि रचना सभकेँ मोन होइत देरी स्वान्तःसुखाय अवगाहन करबाक हेतु तथा समेकित रूपमे मैथिली पाठककेँ उपलब्ध करयबाक मानसिकतासँ ई संकलन तैयार कयल गेल अछि।

जँ ई निबन्ध-संग्रह आधुनिक मैथिली साहित्यक विकासमे किञ्चितो योगदान कऽ सकल तँ हम अपन श्रमकेँ सार्थक बूझब आ पाठकीय प्रतिक्रियासँ प्रोत्साहित भऽ 'तिल तिल नूतन' प्रकाशनक दिस अग्रसर होयबाक प्रयत्न करैत रहब।

वसन्त पंचमी

3 फरवरी, 2006

डा० योगानन्दझा

कबिलपुर, लहेरियासराय

दरभंगा-846001

दूरभाष : 06272-244161

लोक

मिथक आ विद्यापति

पुराण कथा, कल्पित कथा, अवास्तविक-मनगढ़न्त कथा, गप्पकेँ पाश्चात्य अवधारणामे Myth मिथक कहल जाइत छैक। अपन अभिधेयार्थमे ई Truth अर्थात् यथार्थक सर्वथा विपरीत होइत अछि। मुदा, सामान्य दन्तकथाक अपेक्षा एकर विशेषता होइत छैक जे ई लोक-आस्था सँ जुड़ल रहैत अछि आ एकरा यथार्थ सन लोकमान्यता भेटल रहैत छैक। वस्तुतः Myth आ Truth केँ मानवीय ज्ञानक सीमा फराक कयने रहैत छैक। कोनो Myth तावत् धरि Myth रहैत अछि यावत् धरि मानवीय ज्ञानक सीमामे ओकर असंभाव्यता रहैत छैक, मुदा जखन ओ सहज संभव देखि पड़ैत अछि तँ Truth भऽ जाइत अछि। एहि तरहेँ पुराण कथा यथार्थमे आ यथार्थ पुराण कथामे बदलैत रहैत अछि। वस्तुतः मिथक मानवीय अर्द्धचेतनावस्थाक अलौकिक स्वप्न थिक आ स्वप्नक मानवीकरण मिथक। जेना व्यक्तिगत स्वप्नमे मानवक हृदयगत भाव, आकांक्षा, भय, आशंका आदिक अभिव्यक्ति होइत छैक तहिना कोनो जातिविशेषक अचेतन समूहक सामूहिक चेतना मिथकक माध्यमे अभिव्यक्त होइत अछि। कला आ साहित्यमे अभिव्यक्त मिथकीय कथा सभ ओहि मानव-समुदाय, जाति ओ राष्ट्रक सामूहिक आकांक्षाक अभिव्यक्ति थिक जकरा बीच ओ कला आ साहित्य विद्यमान ओ मान्य रहैत अछि।

प्राच्य वाङ्मय परम्परामे रामायण आ महाभारतकेँ इतिहासक संज्ञा देल गेल अछि, मुदा एकर प्रकरण सभ मानवीय ज्ञानक सीमासँ सर्वथा परे छल आ तेँ पाश्चात्य अवधारणा एकरा Mythology अर्थात् अध्यात्म मात्र कहैत रहल। मुदा साम्प्रतिक वैज्ञानिक युग एहि अवधारणाकेँ सर्वथा बदलि देलक अछि आ कतोक पौराणिक कथ्य आइ सर्वथा यथार्थ सिद्ध भऽ चुकल अछि। उदाहरणक हेतु पुष्पक विमान द्वारा रामक अयोध्या प्रत्यागमन, राइटबन्धुलोकनिक द्वारा वायुयानक आविष्कारसँ पूर्व धरि मानवीय ज्ञानक सीमासँ परे छल तेँ Myth छल मुदा आइ Truth भऽ गेल अछि। नारदादिक द्वारा चन्द्रलोक गमन बीसम शताब्दीसँ पूर्व धरि मिथकीय बूझल जाइत रहल, मुदा आजुक वैज्ञानिक युग ओकरा यथार्थमे परिणत कऽ देलक अछि। संजयक दिव्यदृष्टि द्वारा धृतराष्ट्रकेँ युद्ध क्षेत्रक कथा सुनायब मिथक छल, मुदा दूरदर्शनक आविष्कार एकरा यथार्थ बना देलक अछि। मैथिलीक वरेण्य कविवर ज्योतिषाचार्य सीताराममझा जखन *अजगुत कहिनी* शीर्षक कविताक रचना कयने होयताह तँ ओ सर्वथा मिथकीय बूझल

गेल होयत, यथा –

कते कहू अजगुत जे देखल आ कान सुनल।
भारत मे बैसल अमेरिकाक गान सुनल।।
आगि हयत ठंढा आ पाथर कें गलैत देखब।
बटोही रहत ठाढ़ भेल बाट कें चलैत देखब।।
आगि पानि भूमि आ बसात रहत सत्ता मे।
नाच हयत बम्बइ आ देखब कलकत्ता मे।।
अगहन मे रान्हब से तपते रहत पूस मे।
भारत मे पीढ़ी रहत थारी रहत रूस मे।।

मुदा आजुक वैज्ञानिक चमत्कार एकर अधिकांशकें रेडियो, लिफ्ट, टी.व्ही. फ्रिज आदिक आविष्कारक द्वारा सर्वथा यथार्थ सावित कऽ देलक अछि। आ तें ई मिथकीय कथ्य आजुक सन्दर्भमे (Truth) यथार्थ तथ्य भऽ गेल अछि।

साहित्यक बिम्बविधानमे मिथकक प्रयोग हराहरी होइत अछि आ यथार्थपरक विन्यास सेहो होइत अछि, मुदा ने तऽ खाली मिथक प्रयोगे साहित्य थिक ने यथार्थक रुक्ष अभिव्यक्तिए। साहित्यमे मिथ आ यथार्थ दूनूकें एहि तरहें व्याख्यात कयल जाइत अछि जाहिसँ वास्तविक भाव अगन सम्पूर्ण आ नियत यथार्थकें अभिव्यक्त कऽ सकय।

मिथिलामे लोकश्रुति ओ किंवदन्तीक रूपमे एहन अनेक काल्पनिक कथा सभ प्रचलित अछि जकरा सभक संकलन–अध्ययन–अनुशीलनसँ एहिठामक लोकजीवनक यथार्थकें मिथकीय परिकल्पनाक माध्यमे बेस निकटसँ अनुभव कयल जा सकैछ। उदाहरणक हेतु कलउआ पोखरिक कथा अछि जकरा सम्बन्धमे कहल जाइत छैक जे ओ अपन भीड़ पर रात्रि-विश्रामक हेतु रुकल यात्री समूहकें भोजनार्थ बासन ओ भोज्यपदार्थ मङला पर उपलब्ध करबैत छलैक। मुदा एकटा यात्री द्वारा एक बेर बासन लऽ कऽ चलि देलाक कारणें ओ पोखरि ई सुविधा देब बन्द कऽ देलकैक, किएक तँ नियमानुसार भोजनादिक बाद बासनकें साफ कऽ कऽ पुनः पोखरिमे भसा देबाक प्रावधान छलैक। मिथिलामे कतोक एहन पोखरिक सम्बन्धमे, जे बीहड़ बाट सभ पर एकान्त स्थलमे स्थित भेटत, एहि प्रकारक कथा भेटत आ एकरा प्रति लोकविश्वास सेहो, जे एकरा मिथकीय बना देने छैक। गप्प लगितो, जे जड़ पोखरि कोना चेतन मनुष्यक काज करैत हैत, ई मिथक एहि तथ्यक प्रति स्पष्ट संकेत करैत अछि जे निर्जन स्थल पर बाटमे ठाम–ठाम जलाशयक व्यवस्था रहबाक चाही, ओहन ठाम बटोहीकें भोजनादिक प्रबन्धक हेतु सामग्री ओ बासनक व्यवस्था रहबाक चाही, संगहि एहि सार्वजनिक व्यवस्थाक प्रति समस्त सुविधाभोगी यात्रीकें सेहो इमानदार रहबाक चाही

अन्यथा ई सुविधा बेसी दिन धरि नहि चलि सकैछ। मिथकक माध्यमे एकटा विशिष्ट संदेशक संवहन एहि दन्तकथा वा लोकश्रुतिमे होइत अछि जाहिसँ मिथिलाक लोकजीवनमे सार्वजनिक व्यवस्थाक अभावक प्रति चिन्तन पद्धति आ ओकर मार्गमे अवरोधक तत्त्वक व्याख्या भेटि जाइत अछि।

मिथक आ यथार्थक एहि अन्योन्याश्रित सम्बन्धक परिप्रेक्ष्यमे जखन मैथिल कोकिल विद्यापतिक जीवनसँ सम्बन्धित विविध मिथक सभ पर ध्यान जाइत अछि तँ सभसँ पहिने मोन पड़ैत अछि हुनक ई पद–

सपन देखल हम सिवसिंह भूप।
बतिस बरखपर सामर रूप।।
बहुत देखल गुरुजन प्राचीन।
आब भेलहुँ हम आयु विहीन।।

आ

दुल्लहि तोहर कतए छथि माय।
कहुन्ह ओ आबथु एखन नहाय।।
वृथा बुझथु संसार विलास।
पल-पल नाना भाँतिक त्रास।।
विद्यापतिक आयु अवसान।
कातिक धवल त्रयोदसि जान।।

ई दूनू पदावली विद्यापतिक भाषाक अनुकूल आ भनितासँ युक्त भेटल अछि। विद्यापतिक सिद्धपुरुष होयबाक लोकविश्वास मिथिलामे प्रचलित अछि। तें एहि पदावलीक अनुसार जखन ओ शिवसिंहक पलायनक बत्तीस वर्षक बाद हुनका सपनामे देखैत छथिन तँ शास्त्रीय फलाफलक अनुसार अपन मृत्यु निकट बुझि *हम परिणाम निराशाक* सदृश विरागक भावाभिव्यक्ति करैत परिजनलोकनिकें आश्वस्त करबाक चेष्टा करैत छथि। मुदा अन्तिम पदमे अपन मृत्यु तिथिक स्वयं वाचन अनकट्ठल सन, मानवीय ज्ञानक सीमासँ ऊपर आ अलौकिक बुझना जाइत अछि, तें मिथक कहल जा सकैत अछि। ***विद्यापतिक आत्मकथा*** नामक अपन उपन्यासमे पं० श्रीगोविन्दझा महाकविक एहि उक्तिकें मिथक होयबाक समर्थन कयलनि अछि। ई सर्वथा स्वाभाविको अछि। कारण, लगभग पाँच सए वर्षक अन्तरालमे विद्यापतिक पदावलीमे भाषा ओ कथ्यगत बहुशः परिवर्तन भेल, स्वरूप ओ पदमे जोड़–घटाओ होइत रहल, कतोक कवि विद्यापतिक नामे रचना कयलनि, कतोक कविक पदमे विद्यापतिक ***विद्यापति कवि भाने*** किंवा ***विद्यापति कवि गाओल सजनी गे*** सदृश भनिता जुटि गेल। तें विद्यापतिक विशुद्ध पदावली अनुमानो–प्रमाण पर बहुधा आश्रित रहल। स्वभावतः ई दूनू पद

हुनके द्वारा रचित भेल हैत, से सन्दिग्ध अछि आ जँ हुनका द्वारा रचलो गेल तँ मिथकीय थिक।

मुदा देखल गेलैक अछि जे कतोक सिद्धपुरुष अपन मृत्यु दिवसकेँ पूर्वहि घोषित कऽ देल करैत छथि जेना हमरालोकनिक लग ***लक्ष्मीनाथ गोसाँइ*** आ कपिलदेव ठाकुर ***स्नेहलता*** सदृश सन्त-भक्त कविलोकनिक उदाहरण अछि। तदनुसार विद्यापतिसँ सम्बन्धित ई मिथक यथार्थो भऽ सकैछ, ताहिमे सन्देह नहि कयल जयबाक चाही।

विद्यापतिसँ सम्बन्धित दोसरो मिथक हुनक मृत्युए कालक थिक। मृत्यु निकट बूझि विद्यापति मिथिलाक परम्पराक अनुसार अन्तकालमे सदलबल गंगाक सेवनक हेतु चलि देलनि। जखन हिनक सवारी विस्फीसँ यात्रा करैत विद्यापतिनगर (तत्कालीन मउ-बाजितपुर) लग जूमि गेल, तखन ई अपन परिजनलोकनिकेँ कहलथिन जे '*पुत्र तँ मायसँ भेंट करबाक हेतु एतेक दूर धरि चलि आयल। की माता गंगा अपन पुत्रकेँ अंकमे लेबाक हेतु थोड़बो दूर नहि आबि सकतीह?*' एहिसँ सम्बन्धित कविकोकिलक पद एहि स्वरूपक छनि-

सुनिअ डमरु धुनि, शिव पुनि पुनि, आब एत करू विसराम।
पूजा उपचार लिअ, सत्वर गंगा काँ दिअ, कहि देब हमरो प्रणाम।।
करतीहि कृपा गंगा, सकल कलुष भंगा, आब जीव परसन भेल।
थाकि गेली जनीजाति, बेटा-बेटी-पोता-नाति, कामति कहार संग-साथी।
मोर हेतु आउ एत, धन्यवाद लोक देत, सभ जन हरषि नहाथी।।
भन कवि विद्यापति, दिअ देवि दिव्य गति, पशुपति पुर पहुँचाय।
गौरी संग देखि शिव, कि सुख पाओत जिव, से आब कहलो ने जाय।।

मिथक अछि जे महाकविक संकल्प पूर भेलनि। राताराती गंगाक धार हुनक विश्राम स्थलक निकटसँ बहऽ लगलनि। यथार्थक अन्वेषीकेँ एतऽ निराशा भेटि सकैत छनि, कथ्य तर्कक कसौटी पर अस्सल नहि उतरैत अछि, मुदा एतबा अभिव्यंजना तँ दैते अछि जे गंगाक प्रति महाकविक अटूट आस्था आ मातृभाव छलनि।

रसराज शृंगारक सांगोपांग वर्णन विद्यापति पदावलीक मुख्य लक्ष्य थिकैक। लोकजगत अभिनव जयदेवक पदावलीसँ मुग्ध छल। एहि प्रकारक पदावलीक रचनामे हिनक दक्षता सेहो मिथककेँ जन्म देलक। कहल जाइछ जे जखन देवसिंह सिंहासनारूढ़ छलाह तखनहिँ ओ अपन सुयोग्य पुत्र शिवसिंहकेँ राज्यकार्यक सम्पूर्ण भार दऽ देने छलथिन। दिल्लीक सुल्तान फिरोजशाह तुगलक छल आ मिथिला दिल्लीक अधीन करद राज्य छल। फिरोजशाह तुगलकक अन्तिम समयमे उत्तर भारतमे सर्वत्र अशान्तिक साम्राज्य भऽ गेल छलैक। सामन्त राजा आ सुल्तानलोकनि दिल्लीक गद्दी कमजोर होइत देरी अपनाकेँ स्वतंत्र घोषित करैत गेलाह। शिवसिंह सेहो कर देब बन्द कऽ देलथिन। जखन फिरोजशाहक पौत्र गयासुद्दीन तुगलक (द्वितीय) गद्दी सम्हारलक तँ ओ उत्तर भारतक

एहि स्थितिसँ अवगत भऽ देवसिंह केँ आदेश देलकनि जे ओ युवराजकेँ दिल्ली पठाबथि। शिवसिंहकेँ दिल्ली जाय पड़लनि। युवराजक दिल्लीमे रहने कोनो सामन्त दिल्लीक विरोध नहि कऽ सकैत छल, कारण तखन ओकरा अपन पुत्रक प्रति अधलाह व्यवहारक डर रहैत छलैक। यद्यपि सामन्त राजकुमार सभकेँ दिल्ली दरबार यथोचित सुविधा प्रदान कयने रहैत छलैक, तथापि एक तरहेँ ओ सभ बन्धनेमे रहैत छलाह। विद्यापतिक एक गोट पदसँ ज्ञात होइत अछि जे शिवसिंहक दिल्ली यात्राक क्रममे विद्यापतियो हुनक संग छलथिन। अनेक वर्ष धरि शिवसिंहकेँ दिल्ली दरबारक बन्धनमे रहऽ पड़लनि। महाराज देवसिंह वृद्ध छलाह। पुत्रक अभावमे मोन नहि लगैत छलनि। दिल्ली दूर रहबाक कारणेँ शिवसिंहक समाचारो निरन्तर नहि भेटैत छलनि। विद्यापति सेहो अपन सखाक अभावमे उदास रहैत छलाह। अन्ततः देवसिंहक आज्ञासँ विद्यापति शिवसिंहकेँ मुक्त करयबाक हेतु दिल्ली प्रस्थान कयलनि। एहि समय दिल्लीक गद्दी पर नसरतशाह छल। विद्यापति अपनाकेँ दिव्यद्रष्टा कविक रूपमे परिचय देलथिन अर्थात् ओ अदृष्टो वस्तुक वर्णन कऽ सकैत छलाह। नसरतशाह हुनक परीक्षा लेलकनि। ओ यमुनामे सद्यःस्नाता किछु युवती दिस संकेत कऽ ओकर वर्णन करऽ कहलकनि। विद्यापति *कामिनि करय सनाने। हेरितहि हृदय हनय पञ्चवाने।* पद सुना देलथिन। तथापि सुल्तानकेँ विश्वास नहि भेलैक। ओ विद्यापतिकेँ एकटा सन्दूकमे बन्द कऽ इनारमे लटका देलकनि आ ऊपर एकटा युवतीकेँ अगि पजारबाक निर्देश देलकैक। लगले विद्यापति पदक निर्माण कयलनि-

साजनि! निहुरि फुकु आगि।
तोहर कमल भ्रमर मोर देखल, मदन उठल जागि।।
जओ तोहेँ भामिनि भवन जयबह, अयबह कओने बेला।
जओ ई संकट सँ जी बाँचत, होएत लोचन मेला।।

सुल्तानकेँ विश्वास भऽ गेलैक। ओ विद्यापतिकेँ वरदान माङऽ कहलकनि। विद्यापति शिवसिंहक मोक्षक याचना कयलथिन। प्रसन्न सुल्तान तैयार भऽ गेल। विद्यापति अपन पदकेँ पूर्ण कयलनि-

भनइ विद्यापति चाहथि जे विधि करथि से से लीला।
राजा शिवसिंह बन्धन मोचल तखन सुकवि जीला।।

विद्यापतिसँ सम्बद्ध एहि मिथककेँ ओहो तरहक प्रसिद्धि छैक जेना पृथ्वीराजक राजकवि चन्दवरदाइक सम्बन्धमे कहल जाइत छैक। ओ बन्दी आ आँखि पर पट्टी बान्हल पृथ्वीराजकेँ शब्दवेधी वाणक द्वारा मुहम्मद गोरीकेँ मारबाक संकेत कयने छलथिन, ई कहैत जे-

चार बाँस चौबीस गज अंगुल अष्ट प्रमान।
एते पर सुलतान है मत चूको चौहान।।

मुदा अपन आसन पर दोसराकेँ बैसा देबाक कारणेँ गोरी पृथ्वीराजक वाणसँ बाँधि गेल छल आ पृथ्वीराज तथा चन्दवरदाइ एक दोसराकेँ कटार घोंपि परस्पर हत्या कऽ गोरीसँ विमुक्त भेल छलाह।

विवेच्य मिथक भने पृथ्वीराज आ चन्दवरदाइक गाथाक अनुकृति हो, मुदा ई विद्यापति ओ शिवसिंहक पारस्परिक प्रेम तथा महाकविक अद्भुत काव्यप्रतिभाकेँ अवश्ये द्योतित करैत अछि।

एही तरहेँ विद्यापतिक सम्बन्धमे अनेक प्रकारक मिथक बनैत रहल। एतऽ धरि जे स्वतंत्र मिथिला राज्यक संस्थापक शिवसिंहक सखा होयबाक कारणेँ कोमलकान्त पदावलीक रचयिता महाकविकेँ वीर योद्धा होयबाक सेहो लोकश्रुति अछि। मुदा जाहि मिथककेँ मिथिलामे सर्वाधिक प्रशस्ति छैक से थिक उगनाक मिथक।

महाकवि विद्यापति शाक्त पदावलीक रचना कयलनि जकर *जय जय भैरवि असुर भयाओनि* मिथिलाक राष्ट्रगीत जकाँ सम्मान्य अछि। ओ राधाकृष्णक शृंगारलीलाक बहुआयामी वर्णन कयलनि जे गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदायक मधुराभक्तिक अपूर्व सम्पोषक सिद्ध भेल। *माधव, इम परिणाम निराशा* सदृश पदक रचना कऽ ओ भक्तक शरणागतिकेँ सेहो आख्यात कयलनि। मुदा जनसामान्यमे हिनक शैव पदावली सैह सर्वाधिक प्रचलित देखि पड़ैछ। भाषा ओ भाव दूनू स्तर पर विद्यापतिक शैव पदावली मिथिलाक लोकजीवनक अत्यन्त निकट रहलनि अछि। स्वभावत: हिनक शिवभक्तिपरायणताक प्रति लोकविश्वास ततेक जमि गेलैक जे उगनाक मिथक बनल। कहल गेल जे स्वयं महादेव उगनाक रूपमे हिनक खबासी करैत रहलथिन। भवानीपुर स्थित उग्रनाथ महादेव मन्दिर तकर साक्ष्य स्वरूप जानल जाइत अछि। ईशनाथ झाक नाटक **उगना** एही मिथक पर आधारित रचना थिकनि। एखनो सर्वाधिक इमानदार, मेहनती आ पेटदोनिआ चाकरकेँ उगनाक विरुद प्रदान कयल जाइत छैक। उगनासँ सम्बद्ध विद्यापतिक पद अत्यन्त भावविह्वलताक संग शिवभक्तलोकनि द्वारा गाओल जाइत अछि। तर्कक कसौटी पर उगनाक कथा भने मिथक हो, मुदा ई कथा द्योतित करैछ जे विद्यापति लग एक गोट अत्यन्त विश्वसनीय खबास छलनि जे हुनका लेल कोहनो सेवा करबाक हेतु सदति तत्पर रहैत छलनि, मुदा छल मनमतंग प्रकृतिक।

एतावता विद्यापतिसँ सम्बन्धित मिथक सभ हिनका एक गोट विशिष्ट रससिद्ध कवि, शैव भक्त, आप्त सखा तथा त्रिकालज्ञ सन्तक रूपमे प्रख्यात कयने रहलनि अछि। ई मिथक सभ हिनक यशोराशिक सम्वर्द्धनमे प्रमुख भूमिका निमाहैत रहलनि अछि आ हिनका लोकजीवनक अत्यन्त निकट बनौने रहलनि अछि। विद्यापतिक व्यक्तित्वक यथार्थ एहि मिथक सभक माध्यमे अपन सम्पूर्णतामे अभिव्यंजित भेलनि अछि।

●

मैथिली लोकगीतमे राष्ट्रिय समन्वय

भारतीयताक अनुभूति हमरालोकनिक राष्ट्रिय समन्वयक नियामिका थिक। ई भारतीयते थिक जे सुदूर पूर्वक बंगाली-असमीकेँ सुदूर पश्चिमक पंजाबी-सिंधीक संग; सुदूर उत्तरक कश्मीरीकेँ सुदूर दक्षिणक तमिल-तेलगूक संग एकताक दृढ सूत्रमे आबद्ध कयने अछि जाहिसँ पारस्परिक दु:ख-सुख ओ भावानुभूतिक साक्षात्कार होइत रहैछ। हमरालोकनिक विभिन्न सांस्कृतिक प्रतीक सभ परम्परासँ हमरालोकनिक विभिन्नतामे एकताक भारतीय दर्शनकेँ संपुष्ट करैत रहल अछि। एहन प्रतीक सभमे भारतीय लोकगीतक भूमिका सेहो अन्यतम छैक। लोकजगतसँ सर्वथा सम्पृक्त रहबाक कारणेँ ई गीतप्रकार सम्पूर्णतामे भारतीय जीवन-दर्शनकेँ अभिव्यंजित करैत अछि। मैथिली लोकगीतमे अन्य प्रदेशीय लोकगीतहिक जकाँ सम्पूर्ण भारतक समरसताक दर्शन सहजोपलब्ध अछि। ई गीतप्रकार भारत राष्ट्रक समन्वयपरक मानवतावादी संस्कृतिकेँ अन्तर्भुक्त कयने अछि, जकर अन्तस्तलमे *सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दु:खभाग् भवेत्*क उद्घोष व्याप्त अछि।

हमरालोकनिकेँ ओहि राष्ट्रिय संस्कृतिक संवाहक होयबाक गौरव प्राप्त अछि जतऽ *जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी*क आप्तवाक्य पुरुषार्थकेँ जाग्रत कयने रहैछ; *यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:*क आप्तवाक्य पारिवारिक जीवनक उच्चादर्शकेँ इंगित करैत रहैछ; 'मातृ देवो भव, पितृ देवो भव'क आप्तवाक्य अवस्था दोषजन्य असहायताक स्थितिकेँ दूर भगौने रहैछ; *चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागश:*क आप्तवाक्य राष्ट्रिय समन्वयक धारकेँ प्रवहमान रखने रहैछ। हमरालोकनि ओहि राष्ट्रिय संस्कृतिक संवाहक थिकहुँ जाहिमे पुरुषार्थ चतुष्टयक प्राप्तिक उद्देश्य कर्मपथकेँ आजीवन आलोकित कयने रहैछ, आसेतु हिमाचलक संकल्पना सम्पूर्ण भारतक संग जन-जनकेँ जोड़ने रहैछ आ *कृण्वन्तु विश्वमार्यम्*क उद्घोष विश्वबन्धुत्वक उच्चादर्शक अवलेपक संग जगद्गुरुत्वक निर्वहण हेतु तत्पर रहैछ।

मिथिलाक सांस्कृतिक जीवनक अभिन्न अंग मैथिली लोकगीतक व्यापकता ओ विविधताक पर्यवेक्षणसँ ई तथ्य सर्वथा सत्य अनुभूत होइत अछि जे मिथिलामे शिशुक जन्मोत्सवसँ जाहि लोकसंगीतक अनुगुञ्ज आरंभ होइछ से लोकक मृत्यूपरान्त निर्गुण

संगीतेक संग समाप्त होइछ। सत्ये, मिथिलाक लोकजीवनमे लोकगीतक अखण्ड परम्परा छैक।

मैथिली लोकगीतक भक्तिगीत, क्रियागीत, नेना गीत, गहबर गीत, संस्कार ओ व्यवहारपरक गीत आदि प्रभेदयुक्त विराट परिसरमे राष्ट्रिय संस्कृतिक भव्यता दृष्टिगोचर होइत अछि। मानवमात्रक सुख-दुःख, हास-विलास, शोक-संघर्ष, आशा-निराशा, भाव-भक्ति आदि अत्यन्त सुष्ठु स्वरूपमे एहि गीत सभमे अभिव्यंजित भेल अछि।

मैथिली लोकगीतमे नदी-गीतक स्थान अनन्य अछि। एहिमे खास कऽ ओहि नदी सभक सम्बन्धमे अनेक गीत भेटैत अछि जे मिथिलाक सीमामे बहैत छथि, जेना गंगा, कमला, जीवछ, कोशी आदि। गंगा नदी भारतीय आस्थाक केन्द्रविन्दु बनलि आदिकालेसँ सम्पूजिता छथि। गंगासँ सम्बद्ध गीत सभमे हिनक पापहरणक प्रवृत्तिक मुख्यतया बखान होइत रहलनि अछि। भारतीय लोकजगतमे एही प्रवृत्तिक कारणेँ हिनक अर्चना होइत रहलनि अछि जे ई जाति, लिङ्ग, शिक्षा, क्षेत्र, वर्ग आदिसँ निरपेक्ष रहैत समस्त जनकेँ दरस, परस, मज्जन ओ पानक माध्यमे पापमोचनमे लागल रहैत छथि। गंगाक ई स्वभाव वर्णन वस्तुतः राष्ट्रिय समरसताक संस्थापक कइल जा सकैछ। मिथिलाक कोनो गाममे ब्राह्ममुहूर्त्तहिसँ गंगासँ सम्बद्ध ई प्राती सुनल जा सकैछ–

जय गंगा गंगा कहु भोरे, जौं सुख चाहत भाई।
रहय एक कोई पापी घाती मरल मगहमे जाई।।
ताकर मांस गीधो नहि पूछय कुकुर देखि डेराई।
पंछी एक उड़ल जल बीचसँ तकर पंख फहराई।।
ताकर बुंद पड़ल शत्र ऊपर सुर विमान ले आई।
देखहु रे गंगाजी के महिमा अधम उधम तरि जाई।।
जय गंगा गंगा कहु भोरे जौं सुख चाहत भाई।।

भारतीय मानसमे समस्त नदीकेँ गंगेक स्वरूपमे स्वीकार कयल गेल अछि। राष्ट्रक शिरास्वरूपा नदी सभ भारतीय कृषक जीवनक निरन्तर अनेक विध सेवा करैत रहल छथि। हिनका सभक गुणगान कऽ लोककविलोकनि वस्तुतः राष्ट्रिय समन्वयेक प्रसार कयलनि अछि।

भारतीय राष्ट्रक समरसताक प्रसारमे तीर्थगीत सभक अपन महत्त्व रहलैक अछि। खास कऽ *कमरथुआ गीत* ओ *जगरनथिया गीत*मे लोकजगतक यथार्थक चित्रणक संगहि भगवद्दर्शनक माध्यमे भारत दर्शनक लोककामना अभिव्यक्त भेल अछि जे राष्ट्रिय समन्वयक प्रधान कारक रहल अछि। एकटा *जगरनथिया गीत*मे मिथिलाक एक गोट किसानक मनोभिलाषा एहि पदमे द्रष्टव्य अछि –

खेलइ छलिअइ धूपइ छलिअइ, रोपइ छलिअइ धान।

मोने मोन विचारइ छलिअइ जेबइ जगरनाथ।
जगरनथिये हो भाइ बाबा हो विराजे उड़िया देशमे।।

तहिना एकटा *कमरथुआ गीत*मे झारखण्ड निवासी बाबा वैद्यनाथक दर्शनक हेतु पथिकक माय ओ पत्नीक मनोभावकेँ अभिव्यक्त करैत प्रवासक क्लेशक वर्णन आ तकरा सहवाक सामर्थ्यक वर्णन द्वारा राष्ट्रिय सहभावक अत्यन्त सुष्ठु चित्रण भेटैत अछि–

कमरथुआ के मइया बड़ दुखिया।
कानि कानि कहय कमरथुआ के मइया
मोर पूत झारिखंड असगर जाय
हँसि हँसि कहय कमरथुआ के जोहिया
तोर पूत झारिखंड सब संगे जाय
कानि कानि कहय कमरथुआ के मइया
मोर पूत झारिखंड छुच्छे चूड़ा खाय
हँसि हँसि कहय कमरथुआ के जोहिया
तोर पूत झारिखंड दही चूड़ा खाय
कानि कानि कहय कमरथुआ के मइया
मोर पूत झारिखंड भुइआ लोटाय
हँसि हँसि कहय कमरथुआ के जोहिया
तोर पूत झारिखंड कम्बल ओछाय

भारतीय स्वतंत्रताक आन्दोलनमे स्वदेशी आन्दोलनक विशिष्ट भूमिका रहलैक जे गाम-गमाितमे चरखा आन्दोलनक रूपमे प्रख्यात भेल। मिथिला सेहो एहि राष्ट्रिय यज्ञमे पाछू नहि रहल छल। मैथिली लोकगीतमे ई आन्दोलन चरखा-गीतक माध्यमे प्रकट भेल आ जनसामान्यकेँ राष्ट्रिय आन्दोलनसँ जोड़बाक काज कयलक। कहियो चरखा आन्दोलनहि जकाँ *चरखा-गीत* राष्ट्रिय समन्वयक नियामक बनि गेल छल। एकटा चरखा-गीत द्रष्टव्य अछि–

टूटय ने चरखा के तार, चरखबा चालू रहे।
गान्ही बाबा बनल दुलहबा दुलहिन बनल सरकार
चरखबा चालू रहे।
गान्ही बाबा बनल दुलहबा, देहो दहेज सुराज।
चरखबा चालू रहे।

मैथिली लोकगीतक एकटा प्रभेद थिक *झिझिया गीत*। एहिमे जखन एकटा मैथिल ललना कोनो बंगालीकें प्राणरक्षाक हेतु गोहरबैत छथि, तँ सहजहिँ हुनक भारतीयताक भावना राष्ट्रिय समन्वयक कारकक रूपमे प्रकट होइत अछि, यथा–

आब नै जीबै हो बंगाली बाबू, आब नै जीबै हो।
हँसुली पहिरि हम झिझिया खेलबै, डनिआ देखतौ हो।।

वर्णाश्रम व्यवस्था भारतीय जीवनदर्शनक एकगोट अनुपमेय पद्धति रहल अछि। मुदा आजुक विकृत वर्ण-व्यवस्था जन्मना जाति व्यवस्थाक रूप धऽ समाजकें खण्डित करबामे पुरजोर सफलता पओलक अछि। मुदा मैथिली लोकगीतमे वैदिक वर्ण-व्यवस्थाक अनुकूलहि समस्त सामाजिक-धार्मिक कृत्यमे सभ वर्णक सहभागिताक उल्लेख वस्तुतः सामाजिक सामरस्येक संपोषण थीक। एकटा लोकगीतमे समाजक विभिन्न आवश्यकताक पूर्त्यर्थ विभिन्न जातिक लोकक सहयोगक अपेक्षा कयल गेल अछि –

तेल दे रे तेलिया भइया दीप दे कुम्हार।
बाती दे रे पटवा भइया लेसू प्रह्लाद।।
नाव दे रे मलहा भइया धरू करुआर।
जायब सरोवर पार होइए अबेर।।

एही तरहें भक्ति पक्षक लोकगीत सभमे पटवाक घरसँ टेमी, कुम्हारक घरसँ दीप, मालीसँ फूल, हलुआइसँ मधुर, बनियासँ गुग्गुल आदि मँगयबाक कथ्यमे राष्ट्रिय-सामाजिक समन्वयेक दृष्टान्त भेटैत अछि–

नरसिंह के छोटी मंदिरबा निघुरि गोर लागब कोना कऽ हे।
कुम्हरा घर सँ दीप मँगायब
पीड़ी पर दीप जरायब निघुरि गोर लागब कोना कऽ हे।
मलिया घर सँ फूल मँगायब
पीड़ी पर फूल चढ़ायब निघुरि गोर लागब कोना कऽ हे।
बनिया घर सँ गुग्गुल मँगायब
पीड़ी पर गुग्गुल जरायब निघुरि गोर लागब कोना कऽ हे।
हलुआइ घर सँ मधुर मँगायब
नरसिंह कें भोग लगायब निघुरि गोर लागब कोना कऽ हे।

एही तरहें संस्कार ओ व्यवहारपरक गीत सभमे नहछूमे हजाम, सोहाग देबाकालमे धोबिन, वेद पढ़यबा काल ब्राह्मण आदिक चर्चा समन्वयेक वटवृक्षक निदर्शन तँ थिक।

मरसिया ओ *झरनी* मैथिली लोकगीतक अन्य प्रभेद अछि जे मुहर्रमक अवसर पर गाओल जाइत अछि। एहि प्रकारक लोकगीतमे मिथिलाक लोकजीवन साकार भेल अछि आ एहिगीत सभमे वर्णित उल्लास ओ संताप मानवमात्रक उल्लास ओ संतापक अभिव्यक्ति जकाँ सार्वभौम अछि। मुस्लिम सम्प्रदायसँ सम्बद्ध एहि गीतप्रकारमे अभिव्यक्त भावनामे सहजहि धर्मनिरपेक्ष प्रकृति देखि पड़ैत अछि आ ई प्रतीत करबैछ जे सम्प्रदाय पृथक भऽ गेने मानवक प्रकृत गुण बदलि नहि जाइत छैक आ ई प्रकृत गुणें राष्ट्र ओ समाजमे मानव मात्रक समन्वयक कारक छैक। एकटा मरसिया गीतक दुइ गोट पाँती द्रष्टव्य–

के जेतै हाजीपुर के जेतै पटना के जेतै बेतिया शहरबे हो हाय।
बाबा जेतै हाजीपुर भैया जेतै पटना सैयद जेतै बेतिया शहरबे हो हाय।

मैथिली लोकगीतमे वर्गविहीन समाजक निरूपण, भौतिक आवश्यकताक एकता एवं जीवनक अखिल उपकरणकें समस्त समाजक हेतु उपलब्ध कराओल जयबाक वर्णन मानव मात्रक समरसता ओ राष्ट्रिय समन्वयक उद्घोषक थिक। भौतिक आवश्यकता लग ने केओ ब्राह्मण रहि पबैत अछि आ ने क्यो धोबि–

हाली हुली बरिसू इन्नर देवता पानी बिनु पड़इ छइ अकाल हो राम।
धोबियाक अङनामे गादर गुदर पनिआ ओहिमे नहाय सब बभना हो राम।
धोतिया खीचल जनउआ सोंटल रचि रचि तिलक लगाबय हो राम।

एही तरहें *आङ कोना सिया दाइ रहती अमा बिनु, छने छने उठती चेहाय* किंवा *भैया के कनिते जोड़ा धोती भीजल भौजीक हृदय कठोर* आदिमे भारतीय पारिवारिक परिवेशक निदर्शन सांस्कृतिक एकता ओ समन्वयक दृष्टान्तक रूपमे मैथिली लोकगीतमे अभिव्यंजित भेल अछि।

वस्तुतः मैथिली लोकगीत मिथिलाक लोकसंस्कृतिक दर्पण तथा राष्ट्रिय सांस्कृतिक समन्वयक एकगोट विशिष्ट उपादान थिक।

मैथिल लोकसंस्कृतिमे सामा-चकेबा

सम्पूर्णतामे भारतीय संस्कृतिक अंगीभूत होइतहुँ मिथिलाक संस्कृति अपन कतिपय वैशिष्ट्यक कारणेँ आदिकालहिसँ अपन पृथक् अस्तित्व बनौने रहल अछि। वैदिक वाङ्मयक प्रति सम्पूर्ण निष्ठा रखितो एहिठाम शुक्ल यजुर्वेदक प्रणयन भेल, वृहदारण्यकोपनिषद्‌क गार्गी वाचकन्वीक सम्वाद एहिठामक ब्रह्मैषणाक नियामक रहल, याज्ञवल्क्य-स्मृति एहिठामक लोकजगतक विधि-निषेधक नियामक भेल आ कपिल, कणाद, गौतम, वाचस्पति, उदयंन, कुमारिल, मण्डन, गंगेश, भवनाथ, शंकर, विद्यापति पक्षधर आदिक दर्शनसँ सम्बलित ई भूमि भारतीय मनीषाक निरन्तर पथ-प्रदर्शक बनल रहल। प्राकृतपैङ्गलम्, चर्याचर्यविनिश्चय, दोहाकोश ओ डाकार्णवमे अपन साहित्यिक पटुताक निदर्शन प्रस्तुत करैत एहिठामक क्षेत्रीय भाषाकेँ ई गौरव सेहो प्राप्त छैक जे एहिमे आदिग्रन्थ सुनियोजित गद्यग्रन्थक रूपमे भेटैत अछि तथा विद्यापतिसँ लऽ कऽ अधुनातन कालधरिक मैथिली साहित्य ई सिद्ध करबाक हेतु पर्याप्त अछि जे भारतीय साहित्यक विकासमे एकर निरन्तर आ वैभवपूर्ण योगदान रहलैक अछि।

मिथिलाक शिष्ट संस्कृति जँ भारतीय संस्कृतिक विनियमनमे अपन विशिष्ट योगदान दैत रहल अछि तँ एकर लोकसंस्कृति सेहो अपन सुवाससँ लोकजीवनकेँ आप्लावित कयने रहल अछि। भक्तिपक्षीय, व्यवहारपरक ओ संस्कारपरक गीत, लोककथा, लोकगाथा, मोहावरा, लोकोक्ति, लोकश्रुति ओ किंवन्दन्ती, पिहानी, लोकमंत्र, वचन, फकड़ा, लोकनृत्य ओ लोकनाट्य एहिठामक लोकजीवनमे तेना भऽ कऽ रचल-बसल अछि जे एकरा सभक बिना लोकजीवनक परिकल्पने नहि कयल जा सकैछ। मैथिल लोकसंस्कृतिक ई विविध अंग सभ बहुआयामी, अति विस्तृत, अतुल वैभवसम्पन्न आ आकर्षक अछि।

मिथिलाक लोकनृत्य मध्य एक गोट विशिष्ट प्रकार भेद थिक सामा-चकेबा। ई मिथिलाक विशिष्ट पावनि मध्य परिगणित अछि आ एकर आयोजन छठिक पारणा दिनसँ लऽ कऽ कार्त्तिकी पूर्णिमा दिन धरि होइत छैक। नओ दिनक ई आयोजन मिथिलाक महिला-मंडलक हास-विलास, उल्लास ओ मनोरंजनकेँ सम्पूर्ण मिथिलाञ्चलमे अनुगुञ्जित कयने रहैछ। कातिकक धवल मध्य रात्रिमे मिथिलाक कोनो गामसँ गुजरैत काल कोनो चौबट्टी की पोखरिक भीड़ आ कि आनो स्थल पर बाँसक चङेराक बीचमे दीप जरौने आ तकर चारूकात माटिक विभिन्न आकृतिक मूरतक संग नेनासँ लऽ कऽ बूढ़ धरिक महिलाक हेँज जँ कोकिल कंठसँ गीत आ फकड़ा बँचैत अभरि जाथि तँ बूझि पड़त जेना आइयो मिथिलामे दहेज कोनो समस्या नहि छैक, नारी-शिक्षाक कोनो अहमियत नहि

छैक, वार्षिक जल-प्लावन किछु बिगाड़ि नहि पबैत छैक आ रोग-शोक एहिठामक लोककेँ विदेह जनपदक बूझि हारि मानि चुकल अछि।

सामा चकेबाकेँ लोकनृत्य कहबाक पाछाँ कारण ई छैक जे एहिमे अंग संचालनपूर्वक भावप्रदर्शन ओ संगीतादि लोकरंजनी क्रियाक सन्निवेश छैक। सामा चकेबाक खेड़िमे महिलालोकनि अपना-अपना घरक कुलदेवता लग राखल सामा-चकेबाक डालामे दीप लेसि ओकरा कान्ह पर वा माथ पर धऽ बाहर होइत छथि। बहरयबाक क्रममे वटगबनीक सादृश्यपरक सामाक गीत संग चलनिहारि महिलालोकनि गाबऽ लगैत छथि। घर-घर सँ बहरायल डाला सभ गीतगाइनि सभक संग आगू-पाछूक क्रममे एकत्र भऽ एकटा दिव्य यात्राक दृश्यक निर्माण करैत अछि। क्रमशः गीत-संगीतक संग डाला सभ कोनो चौबट्टी आदि पर जमा होइत अछि। एतऽ डाला सभकेँ एक दोसरासँ सटा कऽ चक्राकार राखल जाइत छैक आ समूहगान होइत रहैछ। महिलालोकनि डालाक चक्रक चारूकात बैसिकऽ गीतगायन ओ विभिन्न विधि सम्पन्न करैत छथि। कतहु-कतहु ईहो देखल गेल अछि जे चक्राकार बैसलि नारीलोकनि गीत गबैत काल ठाढ़ भऽ कऽ क्रमशः आगू बढ़ऽ लगैत छथि। बढ़बाक क्रममे ओलोकनि एक बेर बामा पैरकेँ ठेहुनसँ मोड़ि थोड़ेक उपर कऽ लैत छथि आ झुकि कऽ ओहि पैरक खाली स्थानमे दूनू दिससँ हाथ लऽ जाय थपड़ी पिटैत छथि। यैह व्यापार दहिनो पैरक संग कयल जाइछ। एहि प्रकारक चक्राकार नृत्यक संग गीतो चलैत रहैछ। नृत्य, गीत समाप्ति पर बन्द भऽ जाइछ आ नारीलोकनि अपन-अपन स्थान धऽ लैत छथि। खेड़ि समाप्त भेला उत्तर समस्त सखीलोकनि पुनः डाला कान्ह पर लऽ गीत गबैत घर घुरि जाइत छथि।

मिथिलाक लोकसंस्कृतिमे सामा-चकेबाकेँ भाइ-बहिनिक प्रगाढ़ ओ निश्छल स्नेह-सम्बन्धक प्रतीक-पावनिक मान्यता प्राप्त छैक। मिथिलामे प्रचलित दायभागक अनुसार पिताक सम्पत्ति पर ओकर पुत्र सन्तानेटाक सम विभक्त अधिकार देल गेलैक अछि। पुत्री सन्ततिकेँ पिताक सम्पत्तिसँ ओही दिन वञ्चित कऽ देल जाइत छैक जहिया ओकर विवाह भऽ जाइत छैक। विवाहसँ लऽ कऽ द्विरागमन धरि खाहे जे दान-दहेजक रूपमे ओकरा प्राप्त भऽ जाइक, मुदा तंतःपर पिताक सम्पत्ति पर दृष्टि देब ने ओकर अभीष्टे रहैत छैक आ ने वांछिते बूझल जाइत छैक। हँ, ओकर नैहरक आवागमन आजीवन चलिते रहैत छैक, नैहरसँ विदा होमऽकाल तथा नैहरमे उपस्थित काज-तिहारक अवसर पर व्यवहारपरक विदाइ भेटैत रहैत छैक, भाइ द्वारा बहिनिक ओहिठाम गेला पर सनेस-बाड़ी लऽ जायब वांछित बूझल जाइत छैक। एतावता सासुरवास भेला पर मिथिलाक नारी समाजक एकमात्र अवलम्ब ओकर सासुरे रहि जाइत छैक, खाहे ओ सम्पत्तिवान होइक वा दरिद्रछिम्मड़ि।

तथापि दुहिताक उपेक्षाक ई दायभागीय दृष्टिकोण मिथिलाक नारीकेँ विचलित नहि कऽ सकलैक अछि, तकर कारण छैक भाइ-बहिनिक प्रति अविचल स्नेह-सम्बन्ध जे भाइकेँ आजीवन बहिनिक सुख-दुःखक प्रति संवेदनशील बनौने रहैत छैक। सामा-चकेबाक पाबनि तकर वार्षिक स्मृतिपर्व थिक आ एकर माध्यमे बहिन अपन भाइक सुख-सौभाग्यक श्रीवृद्धिक मंगलकामना करैत रहैत अछि। भाइ सेहो बहिनिक एहि प्रकारक मंगलकामनासँ अभिभूत जीवन भरि बहिनिक स्नेहपाशमे आबद्ध रहैत अछि।

ओना कार्त्तिक शुक्ल द्वितीयाक दिन अनुष्ठित भ्रातृद्वितियामे सेहो भाइ बहिनिक ओहिठाम जाय पूजित होइत छथि आ बहिन हुनक कालकंटक हरण करबाक मान्त्रिक उपचार करैत छथि। मुदा सामा-चकेबामे भाइ-बहिनिक आपकताक जे दृष्टान्त भेटैत अछि, तकर एहिमे अभावे छैक। आइकाल्हि अपसंस्कृतिक प्रसार, अन्यान्य प्रदेशक देखाउँस तथा कर्मावती ओ हुमायूंक ऐतिहासिक कथाकेँ राङि-ढेउरि कऽ सुप्रचारित कऽ देने रक्षाबन्धनक पावनि सेहो भाइबहिनिक स्नेहसूत्रक बन्धनक पाबनिक रूपमे मनाओल जाय लागल अछि। मुदा ई पाबनि हमरालोकनिक लोकसंस्कृतिक अंग नहि बनि सकल अछि। कारण ई जे रक्षासूत्रक मन्त्र राजा बलिसँ सम्बद्ध अछि आ एहिमे ज्येष्ठ द्वारा छोटकेँ आशीर्वचन देबाक विधान छैक। पंडित ओ भाटलोकनि एकरा अपन वृत्तिक रूपमे धयने छथि। दोसर तथ्य ई अछि जे हुमायूं कोनो तेहन ऐतिहासिक पुरुष नहि छल जे ओकर कृत्य लोकजगतक अंग बनि सकैक। वस्तुतः कर्मावतीक राखी आ हुमायूं द्वारा ओकर रक्षाक प्रदर्शन एक गोट कूटनीतिक नाटक छल जाहिमे पवित्रताक परिकल्पने व्यर्थ कहल जा सकैछ। हँ, एकर सम्बन्ध ओहि महाभारतीय लोकश्रुतिसँ अवश्य जोड़ल जा सकैछ जाहिमे श्रीकृष्णक आङुर काटि गेला उत्तर द्रौपदी द्वारा अपन आँचर फाड़ि खून रोकबाक प्रयत्न कथित अछि जकर प्रतिदानक रूपमे श्रीकृष्ण वस्त्र रूप धारण कऽ भरल सभामे द्रौपदीकेँ नाङट करबा पर प्रवृत्त दुःशासनकेँ थका देने छलथिन आ द्रौपदीक लाजक रक्षा कयने छलथिन।

एतावता सामा-चकेबा मिथिलाक एक गोट विशिष्ट पाबनि थिक जकर उपकरण सभ निम्नलिखित अछि—सामा, चकेवा, सतभइञा, झांझी कुकुर, ढोलिया, लडुबेचनी, खड़रिच, वनतितिर, वृन्दावन ओ चुगिला। ई सभटा उपकरण महिलालोकनि स्वयं माटि, खढ़, संठी ओ सनक सहायतासँ बनबैत छथि। सभ पात्रक आकृति भिन्न-भिन्न ओ विशिष्ट प्रकारक होइत छैक। वृन्दावनमे संठी ओ खढ़सँ बनल एकटा गुच्छ होइत छैक जकरा प्रतिदिन कने-कने कऽ जराओल जाइत छैक। चुगिलाक केस सनसँ निर्मित रहैछ आ ओकरो प्रतिदिन झरकाओल जाइत छैक।

लोकमान्यताक अनुसार सामा प्रतिवर्ष कार्त्तिक शुक्ल सप्तमी दिन नैहर अबैत छथि

आ पूर्णिमा दिन सासुर कऽ प्रस्थान कऽ जाइत छथि। तेँ जयबा काल हिनका विदा करबाक क्रममे जे साँठक वस्तुजात देल जाइत छनि (धान्य, वस्त्र, पुष्प, गहना, मिष्टान्न आदि)तकर पात्रक रूपमे फुलडाली, पौती आदि उपकरण सेहो एहि खेड़िक उपकरण मध्य सम्मिलित रहैछ।। सामान्यतः सभटा उपकरण नारीलोकनि स्वयं बनबैत छथि मुदा आइकाल्हुक कुमारिलोकनि कुम्हार द्वारा सद्यःनिर्मित उपकरण विशेष पसिन्न करऽ लगलीह अछि, जाहि कारणेँ मूर्त्ति निर्माण कौशलसँ दूर भेल जाइत छथि।

सामा-चकेबाक खेड़िमे लोकनृत्यक प्रदर्शन ओ लोकगीतक गायन प्रमुख अछि। प्रदर्शनक क्रममे वृन्दावनकेँ जरायब ओ मिझायब तथा चुगिलाकेँ बेर-बेर झरकयबाक कृत्य बेस मनोरंजक होइत छैक। अन्तिम दिन भाइ सामा-चकेबाकेँ विदा करबाक हेतु केराक थम्ह आ डपौड़सँ डोली किंवा बेढ़क निर्माण करैत छथि जाहि पर चढ़ाऽ सामा-चकेबाकेँ सोपकरणं वस्त्रादिक संग भसा देल जाइत छनि। भसयबासँ पूर्व सामा-चकेबाकेँ भाइ द्वारा खण्डित कऽ देल जयबाक विधान अछि। भाइ ठेहुन लगा कऽ सामाक मूरुतकेँ खण्डित कऽ दैत छथिन। कतहु-कतहु बहिनलोकनि चङेरहिमे समस्त उपकरणकेँ कूर खेत दिस लऽ जाइत छथि आ ओतहि भाइ द्वारा मुरुत सभकेँ खण्डित कराय जोतल खेतहिमे मिला देल जाइत छैक। मिथिलाक लोकमान्यताक अनुसार चूड़ा-दही खा कऽ यात्रा करब सिद्धिकारक ओ मंगलदायक बूझल जाइछ। से सामा-चकेबाकेँ सेहो विदाइक दिन यैह भोग लगैत छनि आ तकरा प्रसादस्वरूप समदाओनि गओनिहारि ओ जुटल नेना सभमे वितरित कऽ देल जाइत छैक। सामाकेँ फोड़ि कऽ भसयबासँ पूर्व बहिन तकर मजदूरीक प्रतीकक रूपमे भाइक फाँफड़/फाँड़ (धोतीक अग्रभागसँ बनाओल धोकड़ी) मुरही, बताशा ओ अन्य मधुरसँ भरि दैत छथिन जाहिमे बहिन द्वारा भाइक फाँफड़मे तीन मुट्ठी सविधि देबाक विधान अछि। ओहीमेसँ भाइ एक मुट्ठी बाहर कऽ बहिनकेँ दऽ दैत छैक। बहिन ओ भाइक प्रति ई दान-प्रतिदानक प्रक्रिया हमरा जनैत दुनूक जिनगी धरि दान-प्रतिदानक माध्यमे आबद्ध रहबाक संकल्पक प्रतीक थिक। कतहु-कतहु फाँफड़ भरलाक बाद भाइ द्वारा बहिनकेँ नगद प्रतिदान देबाक विधान सेहो देखल जाइछ।

सामा-चकेबाकेँ मैथिलीमे साहित्यिक स्वीकृति सेहो भेटल छैक। मैथिलीक यावन्तो लोकगीतक संकलन देखि पड़ैत अछि ताहि सभमे सामा-चकेबाक गीत सामान्यतः संकलित देखल जाइछ। एहि प्रकारक संकलन सभसँ एहि खेड़िक गीतक माध्यमे एहि लोकनृत्यक शास्त्रीय विवेचनक मार्ग प्रशस्त भेल अछि। मिथिलामे प्रचलित वर्षकृत्यमे सामापूजाव्रतक कथा संकलित अछि। विगत शताब्दीक द्वितीय चरणहिमे स्वनामधन्य प्रो० श्रीनन्दनन्दनझाक पितामह भेषनाथझा कथोपकथन शैलीमे दूटा सखीक वार्त्ताक रूपमे *मैथिली व्यवहार विज्ञान* पोथीक प्रणयन कऽ प्रकाशित करौने छलाह जाहिमे

सामा-चकेबाक निबन्ध ग्रन्थपरक शास्त्रीय विवेचन भेल अछि। डा. रामेदवझाक *भैया* शीर्षक कथा (वैदेही, मई १९५६) मे भाइ-बहिनिक स्नेह-सम्बन्धक आतिशय संवेदनपरक चित्र उरेहल गेल अछि। भाइक हेतु सहोदरा आ बहिनिक हेतु सहोदर सामा भसानक दिन कतेक महत्त्वपूर्ण भऽ जाइत छैक आ सहोदराक प्रति स्नेह भाइकेँ कतऽ धरि आपत्तियोकेँ चुनौती देबाक हेतु बाध्य कऽ दैत छैक, से एहि कथामे अत्यन्त शालीनतापूर्वक दर्शाओल गेल अछि। श्रीरवीन्द्रनाथठाकुर आधुनिक मैथिली साहित्यमे लोकगीतकारक रूपमे प्रशस्ति बटोरैत रहलाह। हुनक ई सामागीत मैथिली लोकमञ्चक अत्यन्त प्रिय गीत सावित भेल–

'माटिक सामा बनली
बहिनो खेलऽ चलली
भैया जीबऽ हो
युग-युग जीबऽ हो'

डॉ. लोकनाथमिश्र प्रणीत *मैथिलीमे व्यवहार गीत* प्रबन्धमे सामा चकेबासँ सम्बन्धित तीन गोट कथाक अनुलेखन भेल अछि। आइसँ करीब पचास वर्ष पूर्वहि डा. अमरनाथझा, राम इकबालसिंह 'राकेश' द्वारा संकलित 'मैथिली लोकगीत'क भूमिकामे ई कहि कऽ सामा-चकेबाकेँ शास्त्रीय विषय बना देने छलाह जे '*श्यामा चकेबाक सम्बन्धमे पाठकलोकनिकेँ ई जानि उत्सुकता होयतनि जे एकर उल्लेख पद्मपुराणमे अछि।*' 'राकेश'क उक्त पोथीमे सामा-चकेबाक खेड़िमे प्रयुक्त समस्त पात्र ओ उपकरणक सम्बन्धमे विशद विवेचन कयल गेल अछि। राजेश्वरझा *श्यामा चकेबा* नामक विनिबन्धपरक पोथीक रचना कयने छथि। रोहिणीरमणझा *सामा चकेबाक* कथाकेँ गीतनाट्यक मर्यादा दिऔलनि। साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत पं. गोविन्दझाक पोथी *सामाक पौती* एही शीर्षक कथाक कारणेँ प्रथित भेल जाहिमे भाइ-बहिनिक आत्यन्तिक अनुरागकेँ उत्कृष्ट अभिव्यक्ति प्रदान कयल गेल अछि।

मैथिल लोकसंस्कृतिक विशिष्ट प्रतीक 'सामा चकेबा'मे भाइक प्रति बहिनिक मंगलकामना पग-पग पर भेटैत अछि, यथा–

जइसन नदिया सेमार तइसन भइया असवार
जइसन केराक थम्ह तइसन भइयाक जांघ
जइसन धोबियाक पाट तइसन भइयाक पीठ
जइसन रेशमक रेश तइसन भइयाक केश
जइसन आमक फाँक तइसन भइयाक आँखि
जइसन चनन बिरीछ तइसन भइया हाथक लाठी

स्पष्ट अछि जे बहिन भाइक स्वास्थ्य ओ सौन्दर्यक प्रति अभिभूत अछि। मुदा स्वास्थ्य ओ सौन्दर्यक संगहि बहिनिक इहो कामना एहि लोकनृत्य प्रकारक गीत सभमे अभिव्यक्त भेल अछि जे भाइ लक्ष्मीवान सेहो होथि यथा–

हमर भैया कोना आबय
हाथी पर बैसल हँसैत आबय
पान सँ दाँत रङइत आबय
रुमाल सँ मुँह पोछैत आबय
कंघी सँ केश झाड़इत आबय
हमर भौजी कोना आबय
पालकी मे बैसल हँसइत आबय
सिनुर सँ माङ भरइत आबय
अयना सँ मुँह देखइत आबय

एकटा गीतमे तँ बहिन द्वारा अपना भाइक हाथमे लोहक बदला सोनाक छूरी देखबाक कामनाक अभिव्यक्ति भेल अछि–

सामा चकेबा अइहऽ हे अइहऽ हे
जूर खेत मे बैसिहऽ हे बैसिहऽ हे
नवरंग पटिया ओछबिहऽ हे ओछबिहऽ हे
ओहि पटिया पर कय कय जनी कय कय जनो
छोटे बड़े नवे जनी नवे जनी
नवो जनी के खीरे पूड़ी, खीरे पूड़ी
हमरा भैया के सोने छूरी, सोने छूरी

किन्तु बहिनिक ई मंगलकामना चाटुकारिता किंवा लोभग्रस्तताक प्रतीक नहि, अपितु निश्छल स्नेह-भावक प्रतीक थिक। एकटा गीतमे सासुरवास बहिनकेँ जखन भाइ द्वारा पिताक सम्पत्तिमे अधिकार देल जयबाक प्रस्ताव उपस्थित कयल जाइत छैक तखन ओ प्रस्तावकेँ सहजहि लतिआय दैत छैक तथा अपन भातिजक हेतु ओहि सम्पत्तिक परित्याग करबाक मानसिकतासँ भाइकेँ अवगत करबैत केवल भाइक स्नेह-संबल तथा स्वामीक अस्तित्वटा पर अपन अधिकार बुझैत अछि–

जुनि कानू जुनि खीजू हे बहिनी
बाबा के सम्पतिया देबह हे बाँटि
बाबा के सम्पतिया हो भैया

भतिजबा केर आश
हम दूरदेसिन हो भैया
मोटरिथा केर हे आस
हम परदेसिन हो भैया
सिन्दुरबा केर हे आस

मिथिलाक लोकजीवनमे ननदि आ भाउजिक स्नेह-सम्बन्धक निदर्शन एहि दूनू सम्बन्धीक नोंक-झोंकसँ प्रगाढ़ता प्राप्त करैत रहल अछि आ तकर प्रचुर अभिव्यक्ति मैथिली लोकगीतक सोहर ओ खेलौना प्रभेदमे भेटैत अछि। सामा-चकेबाक गीतमे सेहो एहि प्रकारक नोंक-झोंकक सहज चित्रण भेल अछि। ननदि अपन भाइक अंगनामे सामा खेलऽ जाइत छथि। भौजी असहयोग करैत छथिन। ननदिकेँ ई स्वाभिमान जाग्रत भऽ जाइत छनि जे हुनका घर तावत् धरि भौजीक जूति नहि चलि सकैत छनि यावत् धरि हुनक माता-पिता जीवैत छथिन। ओहो ओही माता-पिताक सन्तान थिकीह जकर हुनक भाइ, जकरा कारणेँ भौजी अपन जूति चलबऽ चाहैत छथि। तेँ ओ भौजीकेँ दमसबैत कहैत छथिन जे यावत् माता-पिताक राज रहत, हम सामा खेलऽ नैहर अयबे करब। बहिनिक प्रति अपन पत्नीक रुक्ष व्यवहारसँ भाइक सहोदरा-स्नेह जाग्रत भऽ उठैत छनि आ ओ अपन पत्नीकेँ मारबाक हेतु उद्यत भऽ जाइत छथि। कारण, नैहर आयल बहिन तँ दू दिनुक पाहुन होइत छैक आ मिथिला भारतीय परम्परानुसार *अतिथि देवो भव*क मन्त्रकेँ व्यवहारने अनने रहबामे सभ दिनसँ अग्रगण्य रहल अछि। द्रष्टव्य—

सामा खेलऽ गेली फल्लाँ भैया आंगन हे
आहे भउजो लेलनि लुलुआय ननदि कहाँ आयल हे
जुनि लुलुआउ भउजो जुनि गारि पारू हे
आहे जाबे रहतै माय बापक राज सामा हम खेलब हे
आहे छूटि जयतै माय बापक राज छोड़ब तोर आंगन हे
एतबे वचनिआ सुनलनि फल्लाँ भैया हे
भैया मारलनि बरछी घुमाय बहिन मोर पाहुन हे

भाइ जँ जीवन भरि अपन बहिनिक मर्यादाक रक्षाक हेतु बरछी उसाहनहि रहैत अछि तँ बहीनो अपन सासुरमे सदिखन एहि जोगाड़मे लागलि रहैत अछि जे ओकर भाइ जँ ओकर सासुर अबैक तँ ओकर मान-मर्यादामे कोनो त्रुटि नहि होइक। बहिनिक एहि भावनाक चित्र एहि पदमे कतेक मनोरम भेल अछि, से द्रष्टव्य—

नदिया के तीरे-तीरे फल्लाँ भैया खेलथि शिकार हे।
आहे कहा पठौलथिन फल्लाँ बहिनो आइ भैया अएथिन पाहुन हे।

आहे नहि मोरा कोठी भरि आरब चाउर नहि पाकल बीड़ा पानहु हे।
आहे कोना राखब फल्लाँ भैयाक मान भैया मोर पाहुन हे।
माइहे, हाटसँ मँगायब आरब चाउर तमोलिन बेटी पान देतइ हे।
आहे भले विधि राखब भैयाक मान भैया मोर पाहुन हे।

भाइ आ बहिनिक प्रीति एहि सामा-गीतमे अत्यन्त उत्कृष्ट अभिव्यक्ति पओलक अछि—

कोने भैया के इहो घन फुलबरिया हे
आहे कोने बहिनो गेली चम्पा फूल लोढ़ऽ हे
फल्लाँ भैया के इहो घन फुलबरिया हे
आहे फल्लाँ बहिनो गेली चम्पा फूल लोढ़ऽ हे
फुलवा लोढ़इते बहिन मोर घामलि हे
आहे घामि गेल सिरक सिनूर नयन केर काजर हे
छतबा लय दौड़ल अबथिन फल्लाँ भैया हे
आहे बैसू बहिनी एहि जुड़ि छाहरि हे
आहे पनिआ लय दौड़ल अबथिन अइहब भौजो हे
आहे पीबू ननदी इहो शीतल पनिआ हे
अइहब भौजो के केश चँवर सन हे
आहे एही केश गुथब चमेली फूल हे

एही तरहेँ सामा चकेबाक गीतमे भाइ-बहिनिक भावुक स्नेह-सम्बन्धक पराकाष्ठा देखि पड़ैछ। बहिन सदिखन अपन भाइकेँ अन-धन-लक्ष्मीसँ सम्पन्न देखैत रहबाक अभिलाषाक अभिव्यक्ति करैत छथि, मुदा संगहि इहो कामना रखैत छथि जे भाइक स्नेह हुनका लेल बनल रहनि आ ओ साले साल सामाक खेड़िक आनन्द लैत रहथि—

हमरो से कओने भैया चतुर सेयान हे
बामे लेल कागज दहिन खतियान हे
अपना लय लिखिहऽ भैया अनधन लक्ष्मी हे
हमरा लेल लिखिहऽ भैया सामा जोड़ चकेबा हे

आ भाइ-बहिनमे स्नेह बनल रहय सैह तँ एहि खेड़िक लोकप्रचलित उद्देश्यो थिक।

सामा-चकेबाक वृन्दावन दहनक गीत **'वृन्दावनमे अगि लगलै केओ ने मिझाबय हे, हम्मर भैया फल्लाँ भैया दौड़ि-दौड़ि मिझाबय हे'**मे बहिनिक द्वारा वीर, संघर्षशील ओ लोकोपकारी भाइक कामनाक चित्र देखि पड़ैत अछि। एकर चुगिला

दहनक गीत सभ यथा– **'चुगिला करय चुगलपन, बिलाड़ करय म्याऊँ, धऽ ला चुगिला कें फाँसी देऊँ'** आदिमे पिशुन प्रवृत्तिक लोकक प्रति जुगुप्सा भावक अनुकीर्त्तन अछि, कारण जे एहन लोक व्यक्ति आ समाजक अकारण बैरी होइत छथि तथा एहने लोकक दुष्प्रवृत्तिक कारणें कतोक व्यक्तिक रागानुराग विच्छिन्न होइत रहलनि अछि।

मिथिलाक लोकसंस्कृतिमे जातीय जीवनक झाँकी *सामा-चकेबाक* गीतक एहि पदमे द्रष्टव्य अछि–

आ गे डिहुली आ गे डिहुली

सामा जाइ छै सासुर किछु गहना चाही गे डिहुली
धऽला कोनो सोनराकें गढ़बाइये देबै गे डिहुली
आगे डिहुली आ गे डिहुली
सामा जाइ छै सासुर किछु पौती चाही गे डिहुली
धऽला कोना डोमिनियाकें बनबाइये देबै गे डिहुली
आ गे डिहुली आ गे डिहुली
सामा जाइ छै सासुर किछु कपड़ा चाही गे डिहुली
धऽला कोनो दरजीबाकें सिलबाइये देबै गे डिहुली
आ गे डिहुली आ गे डिहुली
सामा जाइ छै सासुर किछु टिकुली चाही गे डिहुली
धऽला कोनो सिनुरहाराकें किनबाइये देबै गे डिहुली

एहि पदमे मिथिलाक पारम्परिक जातीय व्यवसाय ओ सामाजिक जीवनमे समस्त जातिक आवश्यकता ओ पारस्परिक समन्वयक आवश्यकताक निदर्शन भेल अछि जे राष्ट्रिय समन्वयक नियामक रहल अछि। एहन पदमे सामा मिथिलाक प्रत्येक घरक बेटीक प्रतिनिधित्व करैत देखि पड़ैत छथि आ सहअस्तित्वक सामाजिक भावनाकें सुदृढ करबाक पाठ पढ़बैत छथि।

सामा-चकेबाक जे कोनो लोकश्रुत किंवा पौराणिक कथा उपलब्ध अछि ताहिमे भाइ-बहिनिक एक दोसराक हेतु स्नेह ओ त्यागक कथा अनुगुंफित अछि। एही स्नेह ओ पारस्परिक त्यागक भावनाकें ई लोकसांस्कृतिक पर्व जीवन्त रखने अछि। आइ जखन लोकजीवन भौतिकताक अन्हड़मे स्नेह-सम्बन्धकें अबडेरने जा रहल अछि, सामा-चकेबा ध्रुवतारा जकाँ मानव समुदायकें दिशानिर्देश करबामे समर्थ अछि आ यैह मिथिलाक एहि लोक सांस्कृतिक पर्वक प्रासंगिकता थिक, सार्थकता थिक।

●

लोकगाथा दीना-भद्री

मिथिलाक आर्थिक जीवनक आधार अछि कृषि। कृषि-उद्योगक सफल संचालन हेतु कृषक मजदूरक भूमिका प्रमुख छैक। मुदा मिथिलाक कृषक मजदूर एखनो *'शोषित-मर्दित-अर्द्धबुभुक्षित, आर पहिरने गुदरी फाटल'* भेटत। एहि कृषक मजदूरमे मुसहर जातिक भूमिका विशिष्ट छैक। कारी स्याह वर्णक मंगोलियन प्रजातिक ई जाति अपन छहछह शरीर, बलिष्ठ देहयष्टि एवं कमासुत स्वभावक कारणें कृषक मजदूरक विशिष्ट कोटि थीक। कोड़ल खेतक अल्हुआ-पतुआ चालि, पोखरि-झाँखरिक कातमे अन्हइ माछक शिकार कऽ, टाला-कोदारिसँ मटिकट्टाक भूमिका निबाहि जीवन-यापन करैत ई जाति प्रसिद्ध अछि खेतमे मूसक बिल कोड़बाक हेतु। मूसक किलाकें ढाहि ई ओकर अर्जित सम्पत्ति निकालबामे बीहड़ तँ होइते अछि, बीहरिसँ मूसकें बाहर कऽ ओकरा रुचिपूर्वक पकाकऽ खाइतो अछि। प्रायः अपन एही आदिम प्रवृत्तिक कारणें सभ्य समाजमे ई जाति, मुसहर नामे जानल जाइत अछि।

एहि जातिक उपनाम होइछ सादा। ई अपनाकें ऋषिकुलक सन्तान ओ शबरीक वंशज मानैत अछि जे रामचन्द्रजीकें ऐंठ बैर खोआय सद्गति पओने छलि। एहि जातिमे अनेक उपजाति सभ अछि यथा– मगहिया, सतार, धांगर, तिरहुतिया इत्यादि। आवास स्थानक स्थैर्यक आधार पर एहि जातिक दुइ गोट वर्ग अछि – टेबैता ओ झोलैता। जीविकाक अभाव अथवा जमीन मालिकक उपद्रवसँ उबि कऽ जीवन भरि नव आवास क्रमशः टेबैत रहबाक मानसिकतावला वर्ग टेबैता कहल जाइछ। टेबैता मुसहरक तुलना पड़बासँ कयल गेल अछि। जेना एक जोड़ पड़बा पोसि लेला उत्तर ओएह पड़बा विचरणक क्रममे आनो आन पड़बाकें फँसाय आनि लैत अछि आ कोनो दिन मालिकक लग पड़बाक अनेक समूह स्वतः भऽ जाइत छैक, तँ कोनो दिन सभ पड़बा दोसर गोठक संग उड़ि खोपकें खाली सेहो कऽ दैत छैक; ताहिना मुसहरक एक जोड़ाकें बसा लेलाक बाद अनेक मुसहर ओहीठाम बसऽ लगैछ आ टोले बनि जाइछ, मुदा कखनो एहनो होइछ जे सभटा मुसहर राताराती पड़ाय दोसर ठाम नव आश्रय ग्रहण कऽ लैछ आ टोल खण्डहर बनि कऽ रहि जाइत छैक। एही आधार पर कहबी छैक **मुसहर जन आ पड़बा धनक कोनो बिसबास नहि, खन अछि खन नहि।** टेबैताक एहि जातीय चरित्रक ठीक विपरीत झोलैताक स्वभाव होइत छैक। ई सभ एके स्थान पर

पुस्त दर पुस्त रहैत अछि। झोलैता कहयबाक कारण एकरासभक घरमे लागल झोलकेँ मानल जाइछ जे एकर स्थिर आवासक सूचक थीक। आवासकेँ स्थिर करबाक प्रक्रिया *खन्ती गाड़ब* कहल जाइत छैक।

मुसहरक टोलकेँ **मुसहरी** कहल जाइत छैक। मिथिलामे दू-चारि गाम पर एकटा मुसहरी अवश्ये देखि पड़ैत अछि। माटि काटब, पशुपालन, सूगर पोसब, छिट्टा-पथिया बनायब आदि एहि जातिक वृत्ति-पक्षक विभिन्न आयाम होइत छैक।

मुसहर जातिमे काली, बामति, सुरसरि बघेसरि, चौभान, महिषासुर आदि लोकदेवताक पूजन-परम्परा छैक। पूजामे सूगरक पाञ्जरमे **खोभन्टा** भोंकि ओकर बलि प्रदान करबाक प्रथा छैक। पूजाक हेतु नियुक्त व्यक्तिकेँ **भगत** कहल जाइत छैक। बलिदानक सूगरक गर्म खून भगत ताड़ीक संग पीबि जाइत अछि। देवताकेँ सिरनी, खीर, तमाकुल, पीनी, गाँजा आदि सेहो चढ़ाओल जाइत छनि।

दीना-भद्री एहि जातिक जातीय देवता थिकथिन। हिनक वीरगाथा एहि जातिमे गौरवक वस्तु बूझल जाइत छनि। एहि गाथाकेँ लौकिक गीतक माध्यमे गाबि ई जाति अपन श्रमक परिहार करैत अछि। एकटा लौकिक गीतक उदाहरण द्रष्टव्य थिक–

मचिया बैसल कमला खिड़की मे ओङठल
ताकैत हेतै दीनाराम के बाट।
कहाँ गेल किए भेल भैया दीना-भदरी
आनि दिऔ भैया सुतिहार।।
कहमा सं अनबौ गे कमला चनन लकड़िया
कहमा से अनबौ सुतिहार।
धौलागिरि पर्वत से अनबौ चनन लकड़िया
भागलपुर से अनबौ सुतिहार।।
बिना तपोवन के भैया डोलिया निरमेबै
उहो डोलिया उड़ल चलि जाय।।

एहिना लोकदेवीसँ सम्बद्ध एक गोट गीतक स्वरूप एहि प्रकारक भेटैत अछि–

बामति सूरति देखि भुललै बरहामन छौड़ा
लय रे गेलै डिंगरा वन के ओर।
एक वन गेलऽ बरहामन दुइ वन गेलऽ
तेसर वन अँचरा देल बिलमाय।।
छोड़ू छोड़ू आहो बरहामन हमरो अँचरबा
रोबैत हेतै गोदी के बलकबा।

घरहीमे छौक बामति सासु तोर ननदिया
खेलैत हेतौ गोदी के बलकबा।
सासु मोर अन्हरी ननदि ससुररिया
रोबैत हंतै गोदी के बलकबा।
बड़ आशा धेलियौ बामति तोहरो अँचरबा
हमरो आशा करै छेँ निराश।।

एहि तरहेँ दीना-भद्री एवं अन्य जातीय ओ लोकदेवता-गृहदेवताक आराधनासँ सम्बद्ध सहस्रो गीत एहि जातिक धरोहर थिकैक जाहिमे कथातत्त्व अनुगुम्फित भेटैछ, भावक प्रवणता भेटैछ, लोकजीवनक यथार्थक अनुभूतिक चित्र देखि पड़ैछ, शृंगार ओ करुणा, अद्भुत ओ वत्सलता आदिक सहज पुट भेटैछ।

जातीय देवता दीना-भद्रीक वीरगाथा मुसहर जातिक विशिष्ट सांस्कृतिक परम्पराक प्रतीक थिक। एहि गाथाक विवेचन सर जी० ए० ग्रियर्सन उन्नैसम शताब्दीक अन्तमे लोकजगतमे छिड़िआयल, मिथिला, मैथिल संस्कृतिक एहि रिक्थकेँ विभिन्न सोतसँ एकत्र कऽ कयने छलाह। परवर्तीयो कालमे एहि गाथाक विविध स्वरूप प्राप्त लोकसामग्रीक आधार पर प्रस्तुत होइत रहल अछि। एहि गाथाक विवेचन-विश्लेषण सेहो होइत रहल अछि। प्रस्तुत अछि लोकजगतसँ संकलित एहि गाथाक स्वरूप जे विभिन्न मुसहरीक परिभ्रमण कऽ संयोजित कयल गेल अछि–

दीना आ भद्री दुइ गोट मुसहर भाइ छलाह। हिनकालोकनिक पिता छलथिन कालू सादा आ माइ निरसो–

कथी लय करुणा करैए निरसो माइ।
दहा लय करुणा करैए हंस-चकेबा
दीना-भदरी लय करुणा करैए निरसो माइ।।

दीनाक पत्नीक नाम छलनि रोदना आ भद्रीक पत्नीक बुधना। दीना-भद्री अपना पत्नीकेँ घरसँ कखनो बाहर नहि जाय देथि। स्वयं दिन भरि शिकार खेलाथि। वलिष्ठ तेहन छलाह जे अस्सी मनक धनुष आ चौरासी मनक तीरसँ शिकार करथि। स्वतंत्र जीवनक प्रति दुनू भाइ आग्रही छलाह–

काँख लेलऽ नाताजी, बगल दबौलऽ नाताजी,
तीर रे धनुहिया, चलि भेलऽ बिजुवन शिकार।
हरिणो ने मारय नाताजी तितिरो ने मारय
बिछि बिछि मारैए मजूर।
हकन कनै छै नाताजी वन के मजूरनी
बकसि दिऔ सिर के सेनूर।।

दीना-भद्री जाहि राजमे रहैत छलाह तकर नाम छलैक जोगिआनगर। जोगिआनगरक राजा छलाह कनकधामि। अपन प्रजावर्गसँ बेगार पर कृषिकर्म कराबथि। बलिष्ठताक प्राकृतिक संबलक कारणेँ दीना-भद्री बेगार नहि करैत छलाह आ ने राजा सएह हुनका दुनूकेँ अढ़बैत-प्रताड़ित करैत छलथिन।

राजा कनकधामिक बहिन छलैक बचिया धामि। एकरा अपन भाइक डरपोक स्वभाव नहि सोहाइत छलैक आ दीना-भद्रीक पुरुषार्थसँ ईर्ष्या सेहो होइत छलैक, जे राजाक शासनकेँ मानिते ने छलैक। बचिया धामि जादूगरनी छलि। जादूक सात सय पुड़िया ओकर खोपाक लटे-लटे बान्हल रहैत छलैक। दीना-भद्रीकेँ नीच देखयबाक हेतु ओ योजना बनौलक आ अपना भाउजिकेँ कहि एकटा पोखरि खुनबौलक। जादूक बलसँ एकटा पनियादराधक जोड़ा बनाए ओहि पोखरिमे छोड़बाय देलक। पानिक हेतु जे जीव-जन्तु पोखरिमे जाय, दराध ओकरा डँसि लैक। क्रमशः माल-जाल, चिड़ै-चुनमुन्नी, लोक-वेदक लाशसँ ओ पोखरि भरि गेल। लाशक गंधसँ सौंसे नगर घिनाय लागल। दीना-भद्रीकेँ पता लगलनि। दूनू भाइ नगरक लोककेँ एहि आतंकसँ बचैबाक हेतु पोखरि जाय, पानि उपछि, पनियादराधक जोड़ाकेँ पकड़ि कुशक डेफसँ नाथि देलथिन—

गामक पछिम कोड़ौलनि एगो लव पोखरिया।
ओही पोखरिया गे धमियाइन रोपलैं पुरइन
ओही जनि पैसिहऽ हो दीनाराम धरतऽ तोरा पनियादराध।
ओहि जनि पैसिहऽ हो भदरी धरतऽ तोरा पनियादराध।।
घुरमी सहैते गे धमियाइन तोरो हम सबबौं।
कुशक डेफसँ नथबौ गे धमियाइन तोहरो पनियादराध।।
अस्सी मन के पत्थल छेदि कऽ हेबौ गे बहार।।

दीनाभद्रीक एहि कीर्त्तिगाथामे ओकर प्रबल पौरुषक उद्घाटन, अद्भुत तत्त्वक सम्मिश्रण ओ अतिरंजना लोककथाक सामान्य विशिष्टताक अनुरूपे छैक। पूर्व कथ्यमे श्रीकृष्णक कालिय-दमन वृत्तान्तक स्पष्ट प्रभाव लोकदेवताक चरित्रमे आरोपित बुझना जाइछ। बचियाक चरित्रमे तंत्रक प्रभाव परिलक्षित होइछ।

दीना-भद्री द्वारा जखन बचियाक पनियादराधकेँ नाथि देल गेलैक तँ ओ आर बेसी क्रुद्ध भऽ गेलि। दीना-भद्रीकेँ राजासँ दण्डित करयबाक हेतु तुरत दोसर कुचक्र रचि लेलक। एहि हेतु अपन भाउजक संग पोखरिक मोहार पर जाय दुनू गोटे अपन-अपन नूआ फाड़ि लेलक आ देहमे कादो-माटि लगा लेलक। जखन राजा कनकधामि पोखरिक घाट पर जुमलाह तँ दुनू जनी लगलीह कानय-बाजय आ जनौलथिन जे दीना-भद्री हमरा सभकेँ कादोमे घिसिया-घिसिया कऽ मारलक अछि आ इज्जति सेहो लूटि लेलक अछि। ई बात सुनि कनक अप्रतिभ भऽ गेलाह। अक-बक बन्न भऽ गेलनि।

की करथि की नहि, किछु ने फुराइन। जनानीवला बात। बहुबात भऽ जा सकैत छलैक, तेँ ओ चुप्पे रहब नीक गमलनि। बातकेँ बाओग कयने अपने हसारति होइतनि। तेँ सभ बात मोनेम राखि लेलनि। मुदा आब हुनका मनमे प्रतिशोधाग्नि पजरि चुकल छलनि। मौका पबिते ओ दीना-भद्रीकेँ नीचा देखयबाक योजना बनबऽ लगलाह। तैओ मोनक कोनो कोनमे ओहि दबंग सहोदरक जोड़ीसँ भय लगले रहलनि।

प्रतिशोधसँ जरैत राजा कनकधामि एक दिन अहलभोरे दीना-भद्रीक ओहिठाम जा जुमलाह। दीना-भद्री मुनहर घरमे सूतल छलाह। दीनाक पत्नी रोदना अङ्गना बहारैत छलि आ भद्रीक पत्नी नुधना जाँतमे किछु पीसि रहलि छलि। राजा हिनका दुनूक नाङट-उघार देह देखि लेने छलाह। दुनू कनिआ हड़ायल-फुफुआयल डेराकऽ मुनहर घर दिस भगली। दीना-भद्रीक नीन टूटलनि। दरबज्जा पर राजाकेँ देखि आश्चर्य भेलनि। राजा कहलकनि — 'सौंसे राजक लोक हमरा ओहिठाम बेगार करैत अछि आ तोँ दुनू भाइ नहि करैत छेँ। आब तोरा दुनू भाइक नहि गेने विद्रोह भऽ रहल अछि, तेँ चल आ हर लय दू सय बिगहा खेत जोति दे, तखने जान बाँचि सकैत छौक।' ई सुनि दुनू भाइ राजाकेँ भुसुकी बान्ह बान्हि खूब पिटलनि। अप्रतिभ राजा मन मसोसिकऽ घर घुरि गेल आ अपन बहिनिक अपमानकेँ बिसरि जयबाक कोशिश करऽ लागल।

मुदा बचिया एकरा राजाक अन्यमनस्कता एवं डेरबुक होयब बुझलक। ओ तुरत जा जुमलि दीना-भद्रीक यार सलहेसक गहबरमे। सलहेस पुछलथिन—

की तोरा घटलौ गे बाचेया अन-धन-लक्ष्मी की घटलौ पाकल बीड़ा पान।

बचिया बिनु सत्त कयने किछु कहबाक हेतु तैयार नहि भेलि —

एक सत्त दू सत्त तीन सत्त
तेसर सत्त जे नहि करय। अस्सी कुण्ड नरकमे परय।।

सलहेस सत्त कऽ लेलथिन। बचिया एहि पर दीना-भद्रीक मूड़ मङ्गलकनि। सलहेस अवाक् रहि गेलाह। प्रपञ्चमे पड़ि जनमी इयारक मूड़ बकसि देने छलथिन।

दीना-भद्रीक घरक देवता छलथिन बघेसरि। बचिया हुनको थान पर पहुँचलि। सात दिन सात राति ओतहि भुखले पड़लि रहलि। अन्तमे तिरिया बधक पापसँ डेरा कऽ बघेसरि सेहो सत्त कऽ लेलथिन आ दीना-भद्रीकेँ मारबामे बचियाकेँ सहायता देबाक वचन दऽ देलथिन। तथापि प्रपञ्चमे पड़ि अपन फुलडलिया सेवकक मृत्युक आयोजन पर विचार कऽ दहो-बहो नोरे कानऽ लगलीह।

ओही राति बघेसरि दीना-भद्रीकेँ सप्पन देलथिन-'कटैया खापक जंगलमे सूगर-माकड़ मरल पड़ल अछि।' सपना देखि दुनू भाइक कटैया खाप जयबाक हेतु तैयार भऽ गेलाह। अपन माय निरसोकेँ तत्काल नैहर पठा देलथिन। निरसोक समाद पर दीना-भद्रीक मामा

बहुरन सेहो जूमि गेलाह। तथापि एकटा बाधा उपस्थित भऽ गेल छलैक। तीन गोटे संगमे यात्रा कोना करताह। तीन तेकट महाविकट। मुदा दीना-भद्री पर तँ बघेसरि उद्मति चढ़ौने छलथिन। दुनू भाइ ई बाधा नहि मानि मामा बहुरनक संग चलि देलनि। तावत् असमय कागा डकि देलक। नढ़िया सेहो दहिनसँ बाम रस्ता काटि देलकनि। तीन कोस चलला पर रस्तामे तेलीक दर्शन भेलनि। दुनू भाइक बामा आँखि फड़कऽ लगलनि। अनेक असगुन भेला पर बहुरन यात्रा स्थगित करऽ कहलथिन, मुदा दीना-भद्री नहि मानलथिन आ जंगल दिस बढ़िते रहलाह।

कटैया खापक जंगल भयाओन छल। कतहु एकोटा हरिण, गीदर, सूगर, माकर नहि देखि पड़ि रहल छलनि। बघेसरि छलना कऽ कऽ दीनाभद्रीकेँ बजौने छलथिन। मामा बहुरन एकटा मलहानक गाछ पर चढ़िकऽ देखलनि, तँ दूर पर एकटा तिनटङ्गा फटरी (हरिणक बच्चा) देखाइ पड़लनि। लग अगला पर ओ बाघ बनि गेल। दीना-भद्री तीरसँ ओकरा मारलनि मुदा सभटा तीर बेकार भऽ गेलनि। जखन सभटा तीर ओरा गेलनि तँ दुनू भाइ बाघक संग कुश्ती लड़ऽ लगलाह। दुनू भाइ बाघक रान पकड़ि दू फाँक चीरि देथिन आ दुनू कात फेकि देथिन। राजा सलहेस बचियाक संग सत्तक निर्वाहक लेल फोटरा गीदर बनि जूमल छलाह। ओ बाघक दुनू रानकेँ जोड़ि जिया देथिन आ एकटा मुइल गाइक हड्डीमे जा कऽ नुका रहथि। सात दिन सात राति धरि लड़ाइ चलैत रहल। अन्तमे पियाससँ व्याकुल भऽ दीना-भद्री बाघक द्वारा मारल गेलाह।

मामा बहुरन दुनू भाइकेँ मुइल देखि गाछ परसँ उतरि पड़ैलाह। जंगलमे दीना-भद्रीक लाश पड़ल छल। दुनू गोटे प्रेत बनि अपन शरीरक अन्तिम संस्कारक व्यवस्थामे जुटि गेलाह। दुनू एकौंसी मुसहरी गाममे मुसहरक रूप धारण कऽ जुमलाह। मुदा मुसहर सभ हुनकालोकनिक लाश उठयबाक हेतु तैयार नहि भेलनि। हारि कऽ दीना-भद्री फकीरक रूप धारण कऽ लेलनि—

दीना-भद्री दुनू भैया एकमति कलेखिन, बनि गेलखिन जोगिया फकीर।

फकीर बनल दीना-भद्री एकटा बनिआसँ कफन मङलथिन। ओ दऽ देलकनि। दुनू भाइ मिलि मृतकक संस्कार अपनेसँ कयलनि, गाम पर फकीरेक रूपमे समाद देलथिन आ श्राद्धक भोजमे पात-भात सेहो बँटलथिन। यद्यपि कालू सादाक घरमे कोनो विभव नहि छलनि। मुदा दुनू फकीरक द्वारा सौंसे सभाकेँ जयजयकार करऽवला भोज भेल। अद्भुत चरित्रक एहि लोकदेवताक सर्वत्र चर्चा-अर्चा आरम्भ भऽ गेल।

एकौंसी मुसहरीमे दीनाभद्रीक प्रतापेँ मरकी उठि गेलैक। ओहिठाम मुसहरक एक सय एकैस घर बसैत छल। सभ घरमे बच्चा आ मौगीकेँ छोड़ि सभटा मुसहर मरि गेल। कफनदान करऽबला बनिआकेँ एकसँ एकैस भऽ गेलैक। दीना-भद्रीक आतंक सर्वत्र

व्याप्त भऽ गेलनि। बचिया डरे भागिकऽ कोशी पार चलि गेलि। बचियाकेँ बचयबाक हेतु कोशी दीना-भद्रीकेँ एही पार घेरि लेलक। दोनाराम कोशीकेँ सिनुरदान करबाक धमकी देलथिन। डरेँ कोशी शान्त भऽ गेलि। ओहि पार जाय दीना-भद्री बचियाकेँ पकड़ि कोशीमे बलि चढ़ा देलथिन।

बचियाकेँ मारलाक बाद दीना-भद्री कनकधामिक ओतऽ पहुँचलाह। कनकधामिक राजमे उक्खरि, गूसर, सूप, चालनि आदि सभ वस्तुमे झुनकी लागल रहैत छलैक जाहिसँ सौंसे राजमे सभठामसँ झनाक्-झनाक् शब्द सूनि पड़ैत छलैक। एते धरि जे ओहिठामक नारीशृंगारमे सेहो झुनकीक प्रयोग होइत छलैक। दीना-भद्री कनकधामिक सेना, अन्न, धन नष्ट कयलाक बाद पत्नी सहित ओकरो मारि देलथिन। कनकधामिक सातटा बेटीमे पाँचटा सेहो मारल गेलि। ओकर दूटा बेटी हिरिया आ जिरिया दीना-भद्रीक सहायता कयने छलैक तेँ ओकरा दुनूकेँ रुजना आ दुजना नामक दूटा मुसहर सहोदरक संग विआह करा देल गेलैक। इहो-दुनू भाइ दीने-भद्री जकाँ स्वतंत्र जीवन जीवाक आग्रही छल आ बेगारक विरोधी छल।

एहि तरहेँ दीना-भद्रीक गाथा लोकजीवनक एकटा विशिष्ट गाथा थिक। एहिमे लोकगाथाक अनुरूप अतिरंजना, सत्त, सप्पन, असगुन, मुइलाक बादो पराक्रम-प्रदर्शन आदि तत्त्व सभ भेटैत अछि। आधुनिक परिप्रेक्ष्यमे ई गाथा एहि हेतुएँ अधिक महत्त्वपूर्ण कहल जा सकैत अछि जे एहिमे राजतंत्रक विरुद्ध विद्रोह आ बेगारक विरुद्ध क्रान्तिक सूत्र भेटैत अछि।

लोकगाथाक अनुरूप जोड़-तोड़क प्रवृत्तिक कारणेँ दीना-भद्रीक मूल गाथामे अनेक क्षेपक उपकथाक समावेश होइत रहल अछि। क्षेपक सभक संख्या अपरिमित अछि। समस्त क्षेपकमे दीना-भद्रीक वीरत्वक अतिरंजनाटा उद्देश्य बुझना जाइत अछि।

एकटा क्षेपकमे कालू वीर नामक डोम जातिक पहलमानकेँ दीना-भद्री द्वारा पराजित करबाक कथा अछि। कालू पहलमानमे एतेक बल छलैक जे सात कोठि बाँस ओ अपन कन्हा पर राखि दोड़ैत चलैत छल। मुदा इहो अद्भुत वीर दीना-भद्रीक संग कुश्तीमे हारि गेल। एक सय एक पाठा खेलौनिहार गुलामी जटकेँ सेहो दीना-भद्री कुश्तीमे हरा देने छलथिन।

दोसर क्षेपक हंसराज ओ वंशराज नामक मग्गहक दूटा सादाक संग दीना-भद्रीक कुश्तीक अछि। ई दुनू सादा दू-दू कट्ठाक जाटि कोदारिक एक छओमे ओदारि लैत छल आ टाला पर राखि बहङी टाङि दौड़ैत चलैत छल। एक बेर मिथिलाक महाराज मग्गह पहुँचलाह। ओ हंसराज आ वंशराजकेँ अपना ओहिठाम बजाय नरुआर गाममे एकटा पोखरि खुनबाक आदेश देलथिन। यज्ञ भेलाक बाद जखन जाठि गड़यबाक स्थिति भेलैक तँ हंसराज आ वंशराज भारी जाठिकेँ नहि उठा सकलाह। दीना-भद्री दुनू भाइ

जाठिकें दछिनबरिया भीड़ परसँ उठा कऽ तेना ने फेकलनि जे जाठि आबि कऽ सोझे बॉली (जाठि गाड़बाक खाधि)ने खसि पड़लैक। नरुआरक गोखरिक जाठि किञ्चित दक्षिण दिस झुकल एखनहुँ दीना-भद्रीक स्मृतिक कथा कहैत अछि। हंसराज-वंशराज जखन अपन काज समाप्त कऽ मग्गह घुरल जा रहल छलाह तँ गौसाघाट लग दीना-भद्रीसँ भिड़न्त भऽ गेलनि। एही भिड़न्तमे दुनू भाइ मारल गेलाह। कहल जाइत अछि जे हंसराज ओ वंशराजक जलखइ पसेरी भरि तथा खोराकी मन भरि होइत छलनि।

अन्य क्षेपकमे ई कहल गेल अछि जे एक बेर एकटा अघोरी सिंहेश्वरस्थान महादेवक ओतऽ अयलाह आ सौंसे थूक-खखारसँ भरि देलथिन। अन्तमे दीना-भद्री आबि अघोरीकें परास्त कऽ मारि भगौलनि आ बाबा सिंहेश्वरकें अपवित्र होयबासँ बचौलनि।

कहल जाइछ जे अन्तमे दीना-भद्री जगन्नाथपुरी पहुँचलाह। पंडा सभ हुनका दुनू भाइकें मुसहर जानि जगन्नाथजीक दर्शन नहि करऽ देलकनि। दुनू भाइ मोक्षक हेतु जगन्नाथ-दर्शन अनिवार्य बुझलनि आ सात राति धरि भुखले-पिआसले रहि सिंह दरवज्जा पर पड़ल रहलाह। तैओ जखन दर्शन सुलभ नहि भऽ सकलनि तँ मन्दिरक आधारमे छाती भिड़ा जोर लगौलनि। मन्दिर दड़कि गेलै! जगन्नाथजी स्वयं दर्शन देलथिन आ मन्दिरकें नष्ट भेने अपन नाम दुनिआसँ अलोपित होयबासँ बचौलनि। जगन्नाथक दर्शनसँ दीना-भद्रीकें अपन पूर्वकृत्य सभ समक्ष आबि गेलनि। जीवनमे जतेक जीवक हत्या कयने रहथि सब सामने देखि पड़लनि। पापक डरें भयभीत भऽ गेलाह। तथापि जगन्नाथजीक कृपासँ प्रेतयोनि समाप्त भऽ गेलनि आ भुइआ बाबाक रूपमे तिरहुत घुरलाह आ आइयो पूजित होइत छथि। एहि क्षेपक गाथामे धार्मिक स्वतंत्रताक हेतु सर्वहारा वर्गक आन्दोलन परिलक्षित होइत अछि।

एहि तरहें दीना-भद्रीक लोकगाथामे आर्थिक ओ धार्मिक शोषणक विरुद्ध सर्वहाराक विद्रोहक कल्पनापरक चित्रांकन भेटैत अछि।

सम्प्रति एहि जातीय देवताक पूजक मुसहर जाति अपन अलमस्त स्वभावसँ चीन्हल जा सकैत अछि। मेहनतिसँ नहिओ डेराइत ई जाति अढ़ौला पर अपमान-बोध करैत अछि। दीना-भद्री एहि जातिक आदर्श छथि, एकर वर्गसंघर्षक मनोबल बढ़ौनिहार मानदण्ड छथि। तथापि एहि जातिक सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक ओ राजनीतिक स्तरमे विकास समुचित नहि कहल जा सकैछ। यद्यपि आरक्षणादि सुविधाक लाभसँ किछु संख्यामे एहि जातिक लोक जीवनक विभिन्न क्षेत्रमे प्रवेश कऽ रहल छथि मुदा प्रगतिक परिमाण संतोषजनक नहि। तें एहि जातिक विकासक हेतु योजनाबद्ध रूपें मनोबलक जागरण ओ विकास कार्यक विभिन्न आयामक आवश्यकता छैक।

गहबर गीत

मैथिली लोकवृत्तक सर्वाधिक प्रशस्त ओ समृद्ध विधा थिक लोकगीत। एहि विधामे मिथिलाक सांस्कृतिक चेतनाक सुस्पष्ट ओ सजीव चित्रांकन देखि पड़ैत अछि। संगहि ई सभ मिथिलाक सामाजिक ओ सांस्कृतिक जीवनक अभिन्न अंग बनल एकर लोकसंस्कृतिक संचालनमे प्रमुख भूमिकाक निर्वाह करैत रहल अछि। चौमासा, छमासा, बारहमासा, वसन्त, फगुआ, चैतावर, जोगीड़ा, कजरी, मलार, रास, ग्वालरी, विरहा, पराती, साँझ, झुम्मरि आदि सामयिक लोकगीत; कमरथुआ ओ जगरनथियाक यात्रागीत; विविध प्रकारक शिशु गीत, लोकक्रीड़ा गीत, श्रमापनोदनसँ सम्बद्ध रोपनी आ लगनीक गीत; नदीमातृक मिथिलाक कोशी, कमला, जीवछ, गंगासँ सम्बद्ध नदी गीत; गोसाउनि, गौरी, ज्वालामुखी, शीतला, धर्मराज, हनुमान, ब्राह्मण, भैरव आदिसँ सम्बद्ध भक्तिपरक गीत तथा नचारी-महेशवाणी आदि गीत मिथिलाक लोकरंजन करैत आयल अछि। अदौसँ नारीकंठ जाहि गीत सभकें संजोगने आबि रहल अछि से थिक संस्कारपरक गीत जाहिमे सोहर-खेलौना जन्मोत्सवक गीत प्रकार सभ थिक। एहिना मूड़न, उपनयन ओ विआहक अवसर पर सेहो गीत सभ गाओल जाइत अछि जाहिमे वैवाहिक गीतकें भास ओ विषयक आधार पर विभिन्न उपवर्ग यथा पसाहनि, नहछू, परिछन, सिनुरदान, कोबर, महुअक, डहकन, उदासी, समदाओन आदिमे विभाजित कयल गेल अछि। कतोक सम्प्रदायमे मृत्यूपरान्त मरौटी किंवा निर्गुण गीत गयबाक परम्परा सेहो देखि पड़ैत अछि। एतावता मैथिली लोकवृत्तक ई विधा बहुआयामी रहल अछि।

लोकवृत्तक एहि विधाकें छिजबा ओ नष्ट होगदासँ बचयबाक उद्देश्यें किंवा संरक्षित कऽ लेबाक उद्देश्यें बहुतोक विद्वानलोकनि मैथिली लोकगीतक संकलन सभ प्रकाशित करबैत रहलाह अछि जकरा अपन निधिक प्रति चैतन्य संपुटित भावविन्यास कहल जा सकैछ। एहि क्रममे राम इकबाल सिंह 'राकेश', प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन', बालगोविन्दझा 'व्यथित', विभूति/ज्योत्स्ना 'आनन्द', कामेश्वरी देवी, इन्द्रकान्तझा, पूर्णिमा देवी आदिक नाम लेल जा सकैछ। मुदा एकर सर्वाधिक व्यवस्थित अनुसन्धान-अनुशीलन ओ संकलनक श्रेय डा० अणिमा सिंहकें रहलनि जे लोकमंत्रादिकें सेहो अपन संकलनमे समाहित कयने छथि। तथापि अद्यावधि यावन्तो संकलन प्रकाशमे आबि सकल अछि ताहिसँ आभिजात्य संस्कारक गंध अबैत बूझि पड़ैत अछि आ लोकसंस्कार

बहुधा ओहि स्तर धरि अवडेरले राखल गेल अछि जे आभिजात्य वर्गकेँ स्वीकार्य नहि भेल करैछ। हमर संकेत एहि संकलन सभमे अनवस्थित गहबर गीतसँ अछि।

गहबर गीत मैथिली लोकगीतक ओ प्रकार भेद थिक जकर गायन लोकपरम्पराक गोहारि, भगतइ आदिक क्रममे कयल जाइत अछि। गोहारि-भगतइ आदिमे लोकमान्यताप्राप्त छप्पन कोटि देवतामेसँ किनको अथवा मृत पूर्वजक आवाहन कयल जाइत छनि। ई आवाहन मन्त्रद्रष्टा भगत किंवा ओकर शिष्य परम्पराक सेवैत पर होइत छैक, जकरा देवता/प्रेत विशेषक घोड़ा कहल जाइत छैक। आवाहन भेला पर घोड़ा थरथर काँपऽ लगैत अछि; हाथ, पैर जाँघ पर चाटी मारऽ लगैत अछि, मुँहसँ फुफकारी वा अन्य शब्द करऽ लगैत अछि, कूदफान करैत नाचऽ लगैत अछि आ एहिना आनो प्रकारक क्रिया करऽ लगैत अछि जकरा सम्बन्धमे कहल जाइत छैक जे ओ घोड़ा पूर्वस्थितिमे अयवासँ पूर्व धरि नहि बूझैत रहैत छैक जे ओ को सभ क्रिया कयलक अछि। आवाहनक हेतु लोकजगतमे 'भाओ' शब्दक प्रयोग होइत छैक आ ई बहुधा निसबद रातिमे कयल जाइत छैक। जाहि देवता वा पितरक आवाहन होइत छनि, तनिकासँ सम्बन्धित गीतक गायनक हेतु मृदंग किंवा ढोल ओ झालि वाद्यक संग किछु गोटे रहैत छथि। ओ सभ जाहि प्रकार भेदक गीत गबैत छथि सैह गहबर गीत मध्य परिगणित कयल जा सकैत अछि, जकर संकलन-सम्पादन-समीक्षा दिस अनुसंधित्सुलोकनि उपेक्षे भाव रखलनि अछि। प्रकाशित लोकगीतक सामग्रीकेँ देखला उत्तर ई तथ्य स्पष्ट बुझना जाइत अछि।

जखन कोनो व्यक्ति वा परिवारविशेषमे निरन्तर अभावग्रस्तता रहैत छैक आ कतबो कठिन परिश्रम कयनहुँ पूरी नहि पड़ैत छैक, वैवाहिक जीवनक पैघ अवधि भेलो उत्तर सन्ततिक अवतरणक कोनो सूरसार नहि देखि पड़ैत छैक, सम्पत्तिक छिजाओ होमऽ लगैत छैक, परिवारमे निरन्तर कोनो ने कोनो दुर्घटना घटऽ लगैत छैक, नजरि-गुजरिसँ ग्रस्त नेना तबाह रहऽ लगैत छैक, पोसुआ गाय-महींस प्रदूषित वा कम दूध देबऽ लगैत छैक किंवा एहने घटना सभ होइत छैक, तँ ओहि परिवारक लोक कारण आ निदान दुनू जनबाक हेतु भगत आ घोड़ाकेँ भाओक हेतु आमंत्रित करैत अछि। भगतक अनुसार धूप, गुगुल, पड़वा, दारू, सिरनी, कपड़ा आदि विविध पूजन सामग्री एकत्र कयल जाइत छैक आ आयोजन होइत छैक। भाओ भेला उत्तर घोड़ा पर क्रमशः विभिन्न देवता ओ मनुषदेवाकेँ उतारल जाइत छैक जे पुछला पर विपत्तिक कारण आ निदान दुनू जनबैत छैक। लोकमान्यता छैक जे तदनुरूप कयने स्थितिमे सुधार होइतहिँ छैक।

एहि लोकमान्यताक परिपूर्त्यर्थ आवाहनक हेतु जे गीत सभ गाओल जाइत अछि तकरा गहबर गीतक अभिधान देल जयबाक चाही, कारण एहन गीत सभ बहुधा जातीय गहबरक कुलदेवता, जाति-देवता वा पितरदेवतासँ सम्बद्ध रहैत अछि। एहि प्रकारक देवीदेवताक किछु नामावली एतऽ उद्धृत कयल जाइछ यथा – काली, बन्दी, गोरैया, गहिल, गांगो, दीना-भद्री, कारिख, शीतला, गरीब भुइञा, बामति, अघोरी, फुलमति, लुकेशरि, महिषासुर, जगदम्बा, दुर्गा, राहु, मनुषदेवा आदि।

एहि प्रकारक गीत सभक अध्ययन अत्यन्त रोचक उपसंहति प्रदान करयवला अछि, जेना – (क) एहि प्रकारक गीतक सुर ओ ताल मृदंगिया ओ झलैताक उत्साहक अनुसरण करैत अछि। (ख) एकर भाषा ओ शब्द लोकजीवनक अत्यन्त निकट देखि पड़ैत अछि आ शास्त्रीयताकेँ अबडेरने रहैत अछि। (ग) लोकजीवनक हास-विलास ओ उल्लास एहि प्रकारक गीतमे सहजहि उपलब्ध अछि। (घ) गीत सभक स्वरूप मुक्तक आ कथा-काव्यपरक दुनू प्रकारक अछि, आदि।

उदाहरणक हेतु गहबर गीत मध्य परिगणनीय किछु कालीक झूमरि पर विचार कयल जा सकैछ। वस्तुतः भारतीय शास्त्रीय दर्शनमे काली मार्कण्डेय पुराणक देवी माहात्म्य ओ अन्यान्य पुराणक अवधारणा थिकीह। दुर्गासप्तशतीक पञ्चम अध्याय श्लोक ८७-८८ मे कहल गेल अछि जे –

शरीर कोशाद्यत्तस्याः पार्वत्या निःसृताम्बिका।
कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते।।
तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाभूत्सापि पार्वती।
कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया।।

एहि तरहेँ शास्त्रीय काली शिवक अर्द्धांगिनी पार्वतीक एकगोट परिवर्त्तित स्वरूपटा थिकीह जनिक ध्यान ओ स्तवनसँ सम्बद्ध भक्ति गीतक परम्परा मैथिलीओमे विद्यापतियेक कालसँ भेटैत अछि आ शाक्त भक्ति प्रवाह ओ तद्जन्य मैथिली पदावलीक रचना मिथिलामे अनवच्छिन्न रूपेँ होइत रहल अछि। मुदा गहबर गीतक काली मिथिलाक सामान्य बेटी छथि जे तन्त्रसाधना सिखबाक हेतु उताहुल छथि। एहि शिक्षाक हेतु अनिवार्य प्रतिदान किंवा दक्षिणाक रूपमे ओ जे किछु देबऽ चाहैत छथिन से विभिन्न कारणसँ स्वीकार्य नहि मानल जाइत छैक, कारण प्रशिक्षिकाक ध्यान हुनक भाय गोरिल पर छनि। मुदा गोरिलकेँ प्रदान कऽ देबामे भ्रातृवत्सला काली अपन असमर्थता देखा लोकजीवनक भ्रातृभावकेँ उत्कृष्ट स्तर प्रदान करैत छथि आ श्रोता वा पाठककेँ एकटा सहज भावलोक धरि पहुँचा दैत छथि। गीत एहि प्रकारेँ अछि –

कहाँ गेलऽ किए भेलऽ कैथिन के बेटिया हे
तनी गुनमा हमरो दिअउ सिखाय।।
जब तोरा आहे काली गुनमा सिखयबउ
हमरो के किए देबऽ दान।।
जब तोहेँ आगे कैथिन गुनमा सिखयबैँ
गल्ला गिरमल देबौ तोरा दान।।

हम नहि लेबौ काली गल्ला गिरमलहरबा
ओहो तँ देखत माय-बाप।।
जब तोहेँ आगे कैथिन गुनमा सिखयबैँ
छोटकी ननदिया देबौ दान।।
हम नहि लेबौ काली छोटकी ननदिया
ओहो छौकऽ पर के तिरिया।।
जब तोरा आगे काली गुनमा सिखेबउ
छोटे भैय्या गोरिल लेबौ दान।।
अगिया लगेबौ कैथिन तोहरो जे गुनमा
बजर खसेबौ तोहरो माथ।।
हम नहि देबौ गे कैथिन भइया दुलरुआ
सहोदर देल नहि जाय।
एक बेर बोलू हो पञ्चन सिरी भगवान हो
दोसर बेर बाबा वैद्यनाथ हो।।
तेसरे बेर बोलू हो पञ्चन इन्दर कविलास हो
चारिम बेर श्रीसीताराम हो।।

एहिना एकटा गहबर गीतमे सलहेसक बालस्वरूपक सहज ओ मनोहर झाँकी प्रस्तुत करैत भक्त लोकगीतकार कहने छथि—

मैया के गोद से उतरल राजा सलहेस
बाबा के ठेहुनमा धेने ठाढ़।
छओहो महिनमा के जनमल राजा सलहेस
सेहो माङय चरण घुघुर।।
घुघुरू-घुघुरू मत करियौ राजा सलहेस
इहो हेतऽ जीव के जंजाल।
पटना शहर के होरिल दरजिया
सिबिहह नामे नामे बाँहि।।
सेहो कुरता जब पहिरत सलहेस
छमकैते जयतै ससुरारि।
मगह मुंगेर के चतुर सोनरबा
गढ़ि देल घुघुरू अनूप।।
सेहो घुघुरू जब पहिरत राजा सलहेस
रुनुझुनु-उठतै अनघोल।।

एही तरहेँ अन्यान्यो लोकदेवता सभसँ सम्बद्ध लोकगाथेतर मुक्तक गीत सभ

मिथिलाक लोकजगतमे पुष्कल परिमाणमे लोककंठमे वर्त्तमान अछि आ आधुनिक टी.व्ही., कम्प्यूटर युग सुरसा जकाँ मुँह बओने ओकरा सभकेँ गीड़ि-जयबाक हेतु तत्पर अछि। तेँ समय अछैत एकरा सभक संकलन मैथिली लोकसाहित्यक एक गोट विशिष्ट ओ उत्कृष्ट विधाक प्रति न्याय होयत। लोकजगतसँ प्राप्त किछु एहन गीत सभ एतऽ संकलित कऽ उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत कयल जाइत अछि।

देवीक सुमिरन

काँचहि-बाँस के डलबा रे डलबा सूत कमल केर फूल हे।
ओही फूल पुजबै काली हम्मर देवता काली हमर होइये समतूल हे।।
ओही फूल पुजबै बन्दी हम्मर देवता बन्दी हमर होइये समतूल हे।।
ओही फूल पुजबै सत्ती हम्मर देवता सत्ती हमर होइयै समतूल हे।
ओही फूल पुजबै महामाया हम्मर देवता महामाया मैया होइयै समतूल हे।।

कालीक झूमरि

कओने राज उपजल झउसा हे गहुमवा हे लहुलाखन देवी,
देवी हे, कओने राज जँतबा हय बहुत हे लहुलाखन देवी!
पुरबे राज उपजल झउसा हे गहुमबा हे लहुलाखन देवी,
देवी हे, पछिमे राज जँतबा हय वहुत हे लहुलाखन देवी।।
कओने बहिनो पीसै छथिन झउसा हे गहुमबा हे लहुलाखन देवी,
देवी हे, कओने बहिनो मारै झिकबा झोर हे लहुलाखन देवी।
काली बहिनो पीसै छथिन झउसा हे गहुमबा हे लहुलाखन देवी,
देवी हे, बन्दी बहिनो मारै झिकबा झोर हे लहुलाखन देवी।।

•

तिसिया खेतमे तिसिया मसुरिया खेतमे राइ
हे काली ताही खेतमे ना
काली दाइ झुमरि खेलाइयै
हे काली ताही खेतमे ना
झुमरि खेलाइते काली गोर बिछिया गेलै हेराय
हे काली ताही करणमा ना
काली दाइ रोदना पसारथिन
हे काली ताही करणमा ना

एतना वचनिञा सुनलनि भैया बरइता हे
भैया खोजि हे दिअउ ना
काली गोर बिछिया गेलै हेराय हे
भैया खोजि हे दिअउ ना
पटना शहरबा के साँकर मोर गलिआ
हे काली गलिये-गलिये ना
काली दाइ बसै छै सोनरबा हे भैया
गलिये-गलिये ना
कहाँ गेलऽ किए भेल भैया सोनरबा हितबा
गढ़िये दिऔ ना
काली गोर बिछिया गेलै हेराय हे सोनरा
गढ़िये दिऔ ना
गढ़िए गुढ़िए सोनरा केलकै समतूलबा
हे काली लैए लिअउ ना
काली दाइ, गोर के गोर बिछिया
हे काली लैए लिअउ ना
पहिरि-ओढ़िए हे काली भेलै समतुलबा
हे काली चलिए देलकै ना
काली दाइ हलसैत-फुलसैत गेली ससुरारि
हे काली चलिए देलकै ना

महामायाक गीत

उत्तर दिशासँ अयली महामाया मैया ठाढ़ि भेली जमुना किनार।
नैया लाबू नैया लाबू झिनमा मलहबा हम पंथ उतरब पार।।
टूटल पंथ हे मैया टूटल करुअरिया कोन विधि उतरब पार।
अरही काठ के नैया निरमाओल चन्दन लिअऽ करुआरि।।
खने नैया खेबय खने भसिआबय खने पुछए जतिया विचार।
जञो तोहेँ आ रे केवटा बहिञा पकड़बें नावे पर दऽ देबौ साप।।
हम छिकौं जातिक ब्राह्मणी रे केवटा माय बाप रखलक काली नाम।
हाथ बाट धरबे कोढ़ी कुष्ट फुटतौ पापक नैया जेतौ बुड़िआइ।।

फुलमतिक गीत

बेतिया से अयलै फुलमति झुमरिया खेलैत हे अयलै
टूटि हो गेलै गल्ला गिरमलहार।
जनु कानू जनु खीजू फुलमति बहिनिञा हे
आनि देब गल्ला गिरमलहार।।
सोनपुर शहरिया से सोनरा बजायब
गढ़ि देतै गल्ला गिरमलहार।।
पटना से पटबा मँगायब हे बहिनिञा
गाँथि देतै गल्ला गिरमलहार।।

लुकेशरिक गीत

पछिमहि राज से बहार भेलै गे लुखा देवी
नेपुर उठैयै अनघोल।
पैर के नेपुलवा लुखो खोइँछा भरि लेलकै
चलि भेलै कार्शाराम पार।।
किए तोरा घटलौ लुखो अन-धन सोनमा
किए घटलौ पाकल बीड़ा पान।
नहि हमरा घटलै बाबा अन-धन सोनमा
नहि घटलै पाकल बीड़ा पान।।
बारह बरिस बाबा तोरे नग्र बसलौं
कहियो ने गेलौं गंगा असलान।
अँगना मे कुँअबा खुनाय देब लुकेशरि
बाँटि देब रेशम सुत डोरि।।
कुँअबा के पानी बाबा सड़ल गेन्हाइ छै
सैला मे बहय निर्मल पानि।
सैला, सैला मत भूकू देवि लुकेशरि
सैला बहय चौरबा के पार।।
लिखल जे हेतै बाबा चौरला के पारबा
लिखल मेटल नहि जाय।।

महिषासुरक गीत

कहमा बिसरलह हो महिषासुर भैंसिया के नथबा
कहमा बिसरलह सयलिआव।

बथने बिसरलहुँ सेवक भैंसिया के नथबा
गहबर बिसरलहुँ सयलिआव।।
माय के आँचर धेने महिषासुर अरज करय
हमर गौना दिअउ ने कराय।
गौना के धोती महिषासुर मलिनो ने भेलह
अपने भेलह अलोपित।।

गाङ्गोक गीत

पर्वत मोहार पर चनसुर हे बुनलौं
सेहो रे चनसुर मिरिगबा चरि गेल।
बरजू बरजू राजाजी अपनो मिरिगबा
सब रे चनसुर मिरिगबा चरि गेल।।
मिरगा के मारि हो राजाजी खलरी घिचंबै
गाङ्गो छौड़ी के चोलिया देबै सिलाय।
चोलिया पहिरि गाङ्गो भेलि समतुलबा
चलि भेलै लवी ससुरारि।।
एक कोस गेलै गाङ्गो पहर पयरा हे बितलै
जुमि गेलै लवी ससुरारि।।

गरीब भुइञाक गीत

किए भगता काशी जाइयै किए परयगबा हो
किए सुतलै तिरिया संग साथ हो।
नहि भगता काशी जाइयै नहि परयगबा हो
नहि सुतलै तिरिया संग साथ हो।।
अबितहि छलियै बौआ धरम केर बटिया हो
कोढ़िया बटिया घेरने ठाढ़ हो।
अबितहि छलियै गरीबन धरम केर बटिया हो
अन्हरा बटिया घेरने ठाढ़ हो।।
अबितहि छलियै बाबू धरम केर बटिया हो
बाँझिन तिरिया बटिया घेरने ठाढ़ हो।
कोढ़िया के काया देलियै अन्हरा के नयनमा हो
बाँझिन तिरिया बालक देलियै दान हो।।

ताही मे लगलै बाबू हमरा के देरिया हो
नाही सुतली तिरिया संग साथ हो।
नाही गेली काशी परयाग हो।।

धर्मराजक गीत

चारू दिस देखै छी दीनानाथ जलम जलामय
कोने विधि उतरब गंगा पार।
नहि हम देखी हो दीनानाथ नैया-नवेरिया
नहि देखी झिलमिल मलाह।
आठहि काठ केर नैया निरमाओल
चानने रचल करुआरि।
ताहि पर बैसल केवट मलहवा
करू केवट लगले गंगा पार।
अगिले जे माङी बैसल अलख निरंजन
पछिले माङी दसो रे देवान।
तर छोड़य धरती नैया उपर असमनमा
बीचे नैया पवन-बसात।
धर्मक नैया हेतै हो दीनानाथ पार उतारतै
पापक नैया बूड़त मझधार।

पीर बाबाक गीत

आहो साहेब औलिया पीर, आहो साहेब औलिया पीर।
बाप तोहर पढ़ौ रे औलिया उर्दू रे फारसी
तोहूँ पढ़ले सात खण्ड कुरान।
हाथ तोहर शोभौ रे औलिया सोना षट्कोणमा
पैर शोभौ झुनकी खराम।
मुँह तोहर शोभौ रे औलिया पाकल बीड़ा पनमा
गला मे शोभौ गिरमलहार।
एक कोस गेल औलिया पहर पयरा बितलै
तेसर कोस जूमल मक्का देस।
तेसर कोस जूमल मदीना देस।

कारिखक गीत

सितले अमुनिञा बाबू सितले जमुनिञा हो
सितले कदम जुड़ि छाँह हो।
ताही तर अपुरा मैया पलङ्गा ओछाओल
सूतल बाबू कारिख नन्दलाल हो।।
कथिएक अउआ रे पउआ कथिएक पंसिआ हो
कथिए घोरल हुनकर खाट हो।
सोने केर अउआ रे पउआ रूपे केर पंसिआ हो
रेशमे घोरल हुनकर खाट हो।।
ताही खाट सूतै दुलरा कारिख नन्दलाल हो
रेशमे घोरल हुनकर खाट हो।।
ताही खाट सूतै दुलरा कारिख नन्दलाल हो
सूतल बाबू कारिख नन्दलाल हो।।
उठू उठू कारिख दुलरा लाली सेज पलङ्गिया हो
लिऔ बाबू सेवक के उदेस हो।
हम नहि उठनै अम्मा लाली सेज पलङ्गिया हे
नाहि लेबै सेवक के उदेस हो।।
अच्छत के धान गे अम्मा सेवक कूटि खेलकै गे
पीबि गेल अरकबा के दूध गे।
धूर बान्हल खस्सी गे अम्मा सेहो बेचि खेलकै गे
कइसे लेबै सेवक के उदेस गे।।
भुखले मे खेलकौ बाबू अच्छत के धनमा हो
पिलकौ अरकबा के दूध हो।
दुखले मे बेचलक बाबू धूर बान्हल खस्सी हो
लिऔ बाबू सेवक के उदेस हो।।
एक बेर बोलू हो पञ्चन श्रीमहादेव हो
दोसर बेर कृष्ण भगवान हो।
तेसर बेर बोलू हो पञ्चन भुइञा हमर देवता हो
चारिम बेर श्रीहलुमान हो।।

●

साहित्य

कविवर जीवनझाक नाट्यगीतमे अलंकार योजना

काव्यमे अलंकारक अपन स्थान छैक। आचार्य विश्वनाथ शब्द ओ अर्थक ओहि अस्थिर धर्मकेँ अलंकार कहलनि अछि जे ओकर शोभाकेँ अतिशयित करैछ आ रसादिक उपकारक होइछ।

आचार्य विश्वनाथक मतानुसार सर्वप्रथम तँ ई तथ्य स्पष्ट होइत अछि जे अलंकार काव्यक नित्य धर्म नहि थिकै अर्थात् एकर रहब काव्यक हेतु अनिवार्य नहि छैक। ई काव्यक नित्य धर्म, गुण, रीति आदि द्वारा उत्पन्न शोभाकेँ अतिशयित करैछ। अर्थात् एकर प्रयोगसँ काव्यक शब्द ओ वाच्य अर्थात् अर्थरूप अंगक सौन्दर्यक वृद्धि होइत छैक। ई ठीक ओहिना प्रयुक्त होइत अछि जेना बाजूबन्द आदि आभूषण कोनो सुन्दरीक बाँहि आदि अंगक शोभा बढ़बैत छैक।

मुदा अलंकार द्वारा शब्दार्थ रूपी काव्यक शरीरक अंगक सौन्दर्यवृद्धि तखने संभव जखन ओकर रसरूप आत्मतत्त्व सुन्दर होइक, किएक तँ आभूषणो ओहने कामिनीक सौन्दर्यवृद्धिमे सहायक होइत छैक जकरामे नैसर्गिक सौन्दर्य पूर्वहिसँ वर्त्तमान रहैत छैक। कुरूपा नारीकेँ जँ आभूषण पहिराइओ देल जाइक तँ दृष्टिवैचित्र्य भऽ कऽ रहि जाइत छैक। तहिना नीरस काव्यमे अलंकार उक्तिवैचित्र्य मात्रक सृष्टि कऽ पबैत अछि।

अतएव काव्यमे अलंकारक महत्त्व ओकर आन्तरिक सौन्दर्यक बादे छैक। जेना नायिकाक निसर्गसम्मत सौन्दर्यक आगाँ अलंकारहीनता ओकर सौन्दर्यक व्यापक छटाक बीच अननुभूते रहि जाइत छैक तहिना उत्तम ध्वनि काव्यमे अलंकार-प्रयोगक प्रति कविक अनुन्मुखतोसँ काव्य-सौन्दर्यक दर्शनमे कोनो बाधा नहि होइत छैक।

काव्यमे अलंकारिताक महत्त्व औचित्यक अभिवृद्धिमे सहायता, चमत्कारक उत्पत्ति ओ कवि-कल्पनाकेँ हृदयग्राही बनयबामे छैक। ई काव्य-मर्मक उद्घाटक, मानसग्राहितामे सहायक ओ रसाभिव्यंजक तत्त्वक रूपमे ग्रथित भेने काव्यक आत्मारूप रसक उपकारी होइत अछि। अलंकारक प्रति आग्रह जँ काव्य-मर्मकेँ झाँपि देबऽवला होइछ तँ ओ कथमपि काव्यक आत्मतत्त्वक उद्बोधन नहि करा सकैछ। जेना कोनो सौष्ठवयुक्त युवतीक सौन्दर्यकेँ गहनाक बाढ़ि तर दाबि देल जा सकैत छैक, तहिना उत्तम काव्योमे अलंकारक अतिरंजनासँ काव्य-मर्म आवृत भऽ जाइत छैक। जेना कोनो कुरूपा बालाकेँ सीथीसँ लऽ कऽ बिछिया धरि पहिरओलाक बादो ओकरामे सौन्दर्य-दर्शनक

योग्यताक सृष्टि नहि कगल जा सकैत छैक तहिना अधम काव्यमे अलंकारिताक द्वारा बलपूर्वक सौन्दर्य-सृष्टि सर्वथा अलाभकरे भेल करैत अछि।

एहि आधार पर कविवर जीवनझाक नाट्यगीतमे प्रयुक्त अलंकार-योजनाक विवेचन कयला सन्ताँ ई स्पष्ट होइत अछि जे कविवर अलंकार-प्रयोग द्वारा काव्य-सौन्दर्यकेँ बढ़यबाक प्रयत्न अवश्य कयलनि अछि मुदा काव्यमे रस ओ भावक पृथक् अस्तित्वकेँ कखनहुँ बिसरलाह नहि। अलंकारकेँ कतहुँ ई अवसर नहि देबऽ चाहलथिन जे ओ रस ओ भावेकेँ छापि लेअय। आत्माक हनन द्वारा शरीरकेँ भौतिक समृद्धिसँ सम्पुष्ट करबाक उद्देश्य कविवरक नहि रहलनि अछि।

शब्दक बाह्य स्वरूपमे निहित चमत्कारकेँ शब्दालंकार कहल जाइत छैक। यदि चमत्कार शब्दक अर्थमे निहित रहैत छैक तँ ओकरा अर्थालंकार कहल जाइत छैक। एहि दुनू प्रकारक अलंकारक पुनश्च अनेकानेक भेदोपभेद होइत अछि। कविवर जीवनझा अपन नाट्यगीत सभमे अवसरक अनुकूल विभिन्न अलंकारक चारुतापूर्ण प्रयोग कयलनि अछि।

नाद-सौन्दर्य ओ झंकार उत्पन्न करबाक दृष्टिसँ अनुप्रासादि अलंकार अत्यन्त उपयुक्त होइत छैक। कविवरक नाट्यगीतमे स्थान-स्थान पर एहन नाद-सौन्दर्य सहज भावसँ प्रयुक्त भेलनि अछि। हिनक पद-पदमे अनुप्रासक आरोह-अवरोहक झंकृतिपूर्ण सौन्दर्यविन्यास दृष्टिगोचर होइत अछि। उदारहणक हेतु ई पद द्रष्टव्य --

खञ्जन गञ्जन लोचन सजनी, रोचन विन्दु ललाटे।
करति के भाविनि दोसरि सजनी, तोसरि सुषमा हाटे।।

एहिठाम खञ्जन ओ गञ्जन, लोचन ओ रोचन, दोसरि ओ तोसरि, ललाटे ओ हाटेक पदांशमे सादृश्य जन्य नाद-सौन्दर्य हिनक पदक गतिमयताक मनोरम चित्र अंकित करैत अछि।

शब्दालंकारोक अपेक्षा अर्थालंकारक बहुविध प्रयोग कविवरक नाट्यगीतकेँ चमत्कृत करबामे अधिक सफल भेल अछि। अर्थालंकार मध्य सादृश्यमूलक अलंकारक विशेष महत्त्व अछि। समस्त सादृश्यमूलक अलंकारक आधार थिकै उपमालंकार। काव्यप्रकाशमे मम्मटाचार्य उपमालंकारकेँ परिभाषित करैत कहने छथि-**'साधर्म्यं उपमा भेदे'**। अर्थात् उपमा ओ अलंकार थिक जाहिमे उपमान ओ उपमेयमे भेद रहितो परस्पर साधारण धर्म द्वारा सम्बद्ध होयब कहल जाइत अछि।

स्व० पं० शिवनन्दन ठाकुर उपमाक विवेचन करैत लिखलनि जे- *पृथ्वीक सभ पदार्थमे परस्पर भेद होइतहुँ ओहिमे एकटा अच्छेद्य सम्बन्ध छैक। चम्पाक फूलकेँ सुँघला पर विहागरागिनीक स्मरण भऽ सकैछ। ई मनक एकटा विलक्षण शक्ति थिक जाहिसँ*

एकत्व प्रतीत होइत छैक। ओहि शक्तिक अभिव्यक्ति उपमेटामे होइत अछि।

डा० सत्यव्रत सिंह उपमाकेँ *कविक ओ काव्यदृष्टि कहलनि अछि जाहिसँ हुनका चराचर जगतक मधुर झाँकी भेटैत छनि। उपमाक साधना कविक समदृष्टिसाधना थिक ओ एहि साधनासँ जे सिद्ध होइत अछि से थिक सौन्दर्य। उपमाक इएह महारहस्य थिक।*

उपमालंकारमे उपमेय ओ उपमानक साधर्म्य निरूपण कयल जाइत अछि। एहि साधर्म्य अर्थात् गुणक समानताक निरूपण विभिन्न प्रकारेँ कयल जा सकैत अछि। कखनो उपमान ओ उपमेयमे समता देखाओल जाइत अछि. कखनो उपमेयकेँ उपमानमे आरोपित कऽ देल जाइत अछि, कखनो उपमानेकेँ उपमेय बना देल जाइत अछि, कखनो उपमेयमे उपमानक संभावना व्यक्त कयल जाइत अछि, कखनो सादृश्यक कारणेँ उपमेयमे उपमानक निश्चयात्मक ज्ञान देखाओल जाइत अछि, कखनो उपमेयक निषेध कऽ उपमानक आरोप कयल जाइत अछि, कखनो उपमेयक सर्वथा निगड़न कऽ उपमाने द्वारा उपमेयक अभेद कहल जाइत अछि, कखनो उपमानक अपेक्षा उपमेयेक उत्कर्षक वर्णन कयल जाइत अछि आ कखनो अप्रस्तुतक (उपमेय) वर्णन द्वारा प्रस्तुतक (उपमानक) प्रतीति देखाओल जाइत अछि आ एही प्रकारेँ विभिन्न सादृश्यमूलक अलंकार उपमा, रूपक, प्रतीति, उत्प्रेक्षा, भ्रान्तिमान, सन्देह, अपह्नुति, अतिशयोक्ति, व्यतिरेक, अप्रस्तुतप्रशंसा आदि अभिहित होइत अछि।

कविवर जीवनझाक नाट्यगीत सभक अवलोकन कयला सन्ताँ एहि सादृश्यमूलक अलंकार सबहिक अर्थ, भाव ओ कल्पनाक उत्कर्षकारक प्रयोग भेटैत अछि। मुदा कविवरक प्रतिभा उपमा, उत्प्रेक्षा ओ रूपकालंकारक प्रयोगमे सर्वथा निखरलनि अछि। कविवरक नाट्यगीतमे एहि तीनू अर्थालंकारक सुरुचिपूर्ण प्रयोग भेल छनि।

कविवरक नाट्यगीतमे उपमादि अलंकारक प्रचुर ओ विलक्षण प्रयोग भेटैत अछि। कविवरक एहि विलक्षणताक आधारस्तम्भ थिक औचित्य, सामञ्जस्य ओ समानुपात। एकरे निर्वाह कऽ कविवर उत्कृष्टताकेँ प्राप्त कयलनि। वृत्यनुप्रासक नादसौन्दर्यमय पदमे उपमालंकारक संश्लिष्ट सन्निवेशक किछु विशिष्ट उदाहरणमे हिनक अलंकारप्रयोगक सहजताक अनुभव कयल जा सकैत अछि-

अरुण कमल दल कोमल रसना रे।
दाड़िम बीज विजय कर दसना रे।।

तथापि,

कुल तिय हिय हो, कूप सन दुराधर्ष गम्भीर।
नहि उतान डाबर जकाँ सकल सुलभ निज नीर।।

उत्प्रेक्षाक प्रयोगमे कविवर भाव ओ परिस्थितिक अनुकूल भाषाक प्रयोग कऽ गीतमे चमत्कारक सृष्टि कयलनि अछि। किछु अधिक रसाप्लावी उदाहरण द्रष्टव्य-

अम्बर छेदन चहत अब, अति आयत पुनि ऊँच।
जड़ित नील मन हरत जनु, बाला कामिनि कूच।।

तथापि –

नासिका दुहु भाग आयत, दृग कपोल अपूप रे।
विजय हित जनु ध्वजा पूजथि, मीन-केतन भूप रे।।

एहिना रूपक अलंकारक प्रयोगमे सेहो कविवरक काव्य-मर्मज्ञता उद्घाटित भेलनि अछि–

कलित बलि बीनाह अति, गम्भीर नाभी कूप रे।
बाहु युग पुनि कुसुम भर नत सिरिस विटप सरूप रे।।

एहन पद सभमे कविक तद्रूपत्व सम्बन्धक स्थापना-चातुर्य प्रतिभासित होइत अछि। कविवरक एक गोट पदमे साङ्गरूपकक सुचारु नियोजन भेलनि अछि। एहि पदमे कविवर नायिकाक विरहकेँ समुद्रक संग तद्रूपत्व अभेद सम्बन्धक सहज ओ चमत्कारपूर्ण अभिव्यक्तिमे सफल भेलाह अछि–

पड़लहुँ विरह-पयोधि अथाहे।
भवन भौर मन धैरज कच्छप, मनसिज मकर गराहे।।
चिकुर निकर तन पसरल शैवल वड़वानल उर दाहे।
मुकता विद्रुम विविध रतन पुनि भूषण-भार पसाहे।।
उदित सुधानिधि देखि बढ़य निशि लोचन जल परवाहे।
सलिल तुषार शीत उपचारहुँ परम विपुल परिणाहे।।
मलयानिल बहि लहरि उठाबय कोन परि करि अवगाहे।
पहुक समागम अवधि सुवेला पार गमन उत्साहे।।
प्रियतम नेह निविड़ नौका निज सहचरि निपुन मलाहे।
अपन शील गुरुजन धर्मोचित कुल मर्याद निवाहे।।

विरह उत्तापसँ जरैत नायिकाक घरमे भंवर, मानसिक धैर्यमे काछु, मदन पीड़ामे ग्राह, केशमे सेमार, हृदयक तापमे वड़वानल, भूषणमे समुद्रजन्य मुक्ता-विद्रूमादि रत्न, चन्द्रोदयक कारणेँ बढ़ैत विरहक ज्वालाक कारणेँ नयनक आप्लावित अश्रुक आधिक्यमे ज्वार, मलय पवन जन्य विरहक बाढ़िमे लहरि, प्रियतमक स्नेहमे नौका आ सहचरिजनमे निपुण मलाहक तद्रूपत्व देखाय कविवर नायिकाक विरहक समुद्रक संग साङ्गरूपकत्व प्रदर्शित करबामे सर्वथा सक्षम सिद्ध भेलाह अछि। हिनक ई कल्पना परम्परित स्वरूपक तथा पूर्वाचार्यलोकनिक प्रभावक प्रतिरूपे थिकनि जकर अवलोकनक हेतु विद्यापतिक विरहिनीक तपस्विनीक संग तद्रूपत्वकेँ उद्धृत करबाक लोभक संवरण नहि कयल जा रहल अछि–

लोचन नीर तटिनि निरमाने।
करय कमलमुखि ततहि सनाने।।
सरस मृनाल कइए जपमाली।
अहनिस जप हरि नाम तोहारी।।
अरे कान्ह, तुअ लागि धनि तप करई।
हृदय वेदि मदनानल जरई।।
चिकुर वरहि रे समरि कर लेअइ।
फल उपहार पयोधर देअइ।।
आहुति जीवन समरपय आगी।
करति होम होयबह वध भागी।।

एहि तरहेँ देखैत छी जे कविवरक उपमान ओ उपमेयक साधर्म्यक उत्कृष्टता काव्य-रसिककेँ हुनक भावक तह धरि पहुँचयबामे अत्यन्त सहायक सिद्ध होइत छनि। कविवर उपमा, उत्प्रेक्षा ओ रूपक अलंकारक प्रयोग दिसि बेसी उन्मुख देखि पड़ैत छथि। तथापि आनो अनेक अलंकार हिनक नाट्यगीतमे अयत्नज रूपेँ प्रयुक्त भेटैत अछि, जेना–

भ्रान्तिमान :–

चरन सरोज दुहू पर सजनी नूपुर मिस रस चाटे।
उर संशय बड़ हमरा सजनी भमरा कतहु न काटे।।

व्यतिरेक :–

विधि विरचल हुनि वदन मयंक।
हिनका कोन कलंकक शंका।।

दृष्टान्त :–

व्यर्थ आन के ताप दय, के सुख भोगय भूमि।
से देखबैत पहाड़ सौं, जलधि खसथि रवि घूमि।।

विभावना :–

शङ्कित मानस अनुदिन हे, बिनु हेतु तरासे।
मलिन वसन कच रुख-सुख हे, मुख तेजल हासे।।

अप्रस्तुतप्रशंसा :–

कालिह जाइ छल जे पड़ा पड़ा,
आँखि मून अछि ठाढ़ि से मृगी।
सींग सँ कुड़िअबैत कण्ठ मे
हर्षमग्न मृग छैक समीप मे।।

मैथिली साहित्य परम्परामे कविवरक अनेक पूर्ववर्त्ती ओ परवर्त्ती काव्य रचयितालोकनि

अलंकारक प्रयोगक प्रति ततेक आग्रहयुक्त देखल गेलाह अछि जे हुनक काव्यक भावराशिये दुरूह भऽ गेलनि। मुदा कविवर अपन नाट्यगीतमे अलंकार-प्रयोगक प्रति ततेक साकांक्ष नहि देखि पड़ैत छथि। सदिखन कविवरक ध्यान रसक उद्‌भावकत्व दिसि केन्द्रित रहलनि अछि। अलंकारबहुल प्रयोगहुमे कविवर अलंकारकेँ कल्पनाक अनुवर्त्तीए रखलनि अछि। अलंकार अभिव्यक्तिक महत्त्वपूर्ण साधनक रूपमे प्रयुक्त भेल अछि। कविवरक लक्ष्य अपन पाण्डित्य-प्रदर्शनसँ बेसी अलंकार-प्रयोग द्वारा श्रोता वा दर्शककेँ भाव ओ कल्पनाक उदात्त शिखर पर चढ़ाएब दृष्टिगोचर होइत अछि। कविवरक एक गोट पद छनि-

> देखि मृदुल कान्ति अति मञ्जरीक।
> मधु लुब्ध गुञ्जथि बहु चञ्चरीक।।

एहिठाम कविवर प्रवासान्तर संभोगमे नायकक नायिकाक प्रति अनुरक्तिक वर्णन कयने छथि। कविवर ओहन अनुरक्तिजन्य हाव-भावक दर्शन कयलनि अछि। आब अपन श्रोता वा पाठककेँ ओही हाव-भावक दर्शन करयबाक छनि। कविवरकेँ ओहि हावभावकेँ अभिव्यक्ति देबाक हेतु उपयुक्त शब्द नहि भेटैत छनि। मुदा श्रोता ओ पाठकक हृदयधरि कविवरकेँ ओहि हाव-भावकेँ अविकल संप्रेषित करबाक छनि। अन्तमे कविवर अप्रस्तुतप्रशंसा अलंकारक उपयोग करैत छथि आ अत्यन्त मृदुल कान्तिसँ युक्त मञ्जरक प्रति मधुलोभी भ्रमरक लोभवशात् प्रयत्नक द्वारा नायकक अनुरागचेष्टाकेँ अभिव्यक्त करैत छथि।

अलंकारक प्रति आग्रही नहिओ रहैत कविवर जखन कोनो भाव-विशेषकेँ अभिव्यक्त करबामे शब्दक साक्षात् संकेतित अर्थकेँ सामर्थ्यहीन बुझलनि तँ अलंकार-प्रयोग द्वारा सहृदयकेँ कल्पना जगतमे उन्मुक्त विचरणक अवसर दऽ रसग्राहिताक स्रोत खोलि देलनि। हिनक अलंकार प्रयोगमे वास्तविक जीवनक भित्ति पर कल्पनाक एकटा सुखद महल ठाढ़ देखल जाइत अछि आ ई कल्पना उक्ति भंगिमा ओ अभिव्यक्ति कौशल बनि स्वतः अलंकार मंडित भऽ गेल अछि जे सहृदयकेँ रसावगाहनमे सहायक सिद्ध भेल अछि। अपन नाट्यगीतमे अलंकारक बहुआयामी प्रयोग द्वारा कविवर भावना जगतमे अविरल विचरण कयनिहार संवेदनशील ओ अभिव्यक्ति सामर्थ्यवान काव्यकला मर्मज्ञक रूपमे प्रतिभासित होइत छथि।

●

नारी शिक्षा आ हरिमोहनझा

मिथिलामे नारी शिक्षा पर जखनहि विवेचनक प्रसंग उठैत अछि कि प्रत्येक मैथिलक पाग कनेक बेसीये ऊँच भऽ जाइत छनि, ई स्मरण करैत जे हमरालोकनि जनकनन्दिनी जानकीक जन्मभूमिक सन्तान थिकहुँ जे गार्गी, मैत्रेयी, भारती, भामती, विदुषी लखिमा, चन्द्रकला आदिक जन्मभूमि, कर्मभूमि ओ धर्मभूमि रहल अछि। वृहदारण्यकोपनिषद्‌मे ई प्रसंग आयल अछि जे विदेहक राजसभामे जहिना कुरु-पांचालादि देशक ब्रह्मज्ञानीलोकनि याज्ञवल्क्यसँ ब्रह्मविद्याविषयक प्रश्न कऽ अपनाकेँ ब्रह्मिष्ठ सिद्ध करबाक प्रयत्न कयने छलाह, ताहूसँ बेसी प्रगल्भतापूर्वक गार्गी अपन प्रश्नावलीक शृंखला उपस्थित कऽ अपनाकेँ ब्रह्मवेत्तृ सावित कयने छलीह। एही उपनिषद्‌मे मैत्रेयीमे ब्रह्मज्ञान प्राप्तिक हेतु अविचल जिज्ञासा-भावक दर्शन होइत अछि। मण्डन पत्नी भारती अपन विशिष्ट ज्ञानक कारणेँ शंकराचार्य ओ मण्डन मिश्रक बोच शास्त्रार्थक मध्यस्थता तँ कयनहि छलीह, संगहि स्वयं सेहो मण्डनक पराजयक बाद शंकराचार्यसँ लोहा लेने छलीह। भामती आजीवन अपन पतिक विद्या व्यसनक अनुरक्षणमे लागि अमरत्वकेँ प्राप्त कयलनि। विदुषी लखिमा सहस्रो श्लोकक निर्माणमे दक्षताक प्रस्तुति ओ मीमांसिकाक गरिमा प्राप्त कऽ हमरालोकनिक गौरव बनलि छथि तथा चन्द्रकला गेय पदावलीक रचना द्वारा शिक्षिता नारीक परिचय प्रस्तुत कयने छथि।

मुदा एहि आँगुर पर गनबा योग्य नारी समुदायक शैक्षणिक अवस्था पर विचार कऽ जँ हमरालोकनि मिथिलामे नारी-शिक्षाकेँ आँकि आत्मतुष्ट भऽ ली तँ से सर्वथा वस्तुस्थितिसँ असम्बद्ध निष्कर्षक द्योतक होयत, कारण जे एहि समस्त नारी समुदायक बीच हजारो वर्षक कालावधिक अन्तर छनि।

वस्तुतः मध्ययुग अबैत-अबैत मिथिलामे नारी-शिक्षा विलोपनक स्थितिमे आबि गेल छल। मुसलमानी अत्याचारसँ संत्रस्त हिन्दू समाज पर्दा-प्रथा, बालविवाह, वृद्धविवाह, बहुविवाह आदिक कुरीतिकेँ गहिया कऽ धऽ लेलक जे नारी शिक्षाक सर्वथा प्रतिकूल स्थितिकारक छल। परवर्त्ती कालमे हरिसिंहदेवी प्रथाक पाशमे गछारलि मिथिलाक नारी समुदायक हेतु औपचारिक शिक्षा स्वप्नजत् भऽ गेल। तखन एतबा धरि अवश्य जे नारी-शिक्षा अपन अर्थमे परिवर्त्तन कऽ लेलक आ शिक्षाक स्थान कला लऽ लेलक तथा कलामे निपुणा नारीकेँ शिक्षिता बुझल जाय लगलनि। वर्णरत्नाकरमे चतुःषष्टिकला

कुशल तिरहुतिनी नायिकाक वर्णन प्रस्तुत भेल अछि जे वसन विन्यास, मालाग्रन्थन, पुस्तकवाचन, समस्यापूरन, केशबन्ध, प्रसाधन, देशीभाषाज्ञान, लिपिज्ञान, काव्य क्रिया, शोधज्ञान, सूचीकर्म, वस्त्रविद्या आदि नारी सुलभ शिक्षासँ सम्पन्न कयल जाइत छलीह। विद्यापतिक पदावलोक अध्ययनसँ ई स्पष्ट होइछ जे हिनका कालमे निरक्षरा नारीलोकनिक संख्या कम नहि छल। ई लोकनि प्रवासी पतिक अयबाक दिनक गणना देबाल पर चेन्ह पाड़ि कऽ करैत छलीह। साक्षरा नारी पत्रलेखन धरि अपन शिक्षाकेँ सीमांकित बूझैत छलीह जे **'*के पतिया लय जायत रे मोरा प्रियतम पास*'** तथा लिखनावलीक कतोक उद्धरण आदिसँ स्पष्ट अछि। सुशिक्षिता नारी पत्रलेखनमे कूट भाषाक प्रयोग करैत छलीह। लऽ दऽ कऽ विद्यापतिकालीन मिथिलामे सेहो नारी शिक्षाक औपचारिक स्थिति पत्रलेखनसँ आगाँ नहिये जकाँ छल। ई स्थिति संभवतः सम्पूर्ण उन्नैसम शताब्दी धरि रहल।

अन्यान्य भारतीय भाषा सभक अपेक्षा अत्यन्त पछाति जखन मैथिलीमे पत्रकारिताक उदय बीसम शताब्दीक प्रारंभिक चरणमे भेल, तखनसँ मैथिली पत्र-पत्रिकाक एक गोट खास उद्देश्य नारी जागरण सेहो रहल आ नारी-शिक्षाक महत्त्वकेँ सुप्रचारित करबाक प्रयास अपन आदिम स्थितिमे प्रादुर्भूत भेल। नारी-शिक्षा ओहू समय धरि कतेक संकुचित छल से १९१० ई. मे प्रकाशित लालदासक *पतिव्रताचार अर्थात् स्त्रीधर्मशिक्षा* पोथीसँ स्पष्ट अछि, जाहिमे मिथिलाक नारी-समाजकेँ साक्षरता, आदर्श आचार-व्यवहार, आदर्श चरित्र-निर्माण आदिक संदेश देल गेलनि अछि तथा पौराणिक आदर्श नारी चरित सभसँ परिचय करयबाक प्रयास भेल अछि। मुदा क्रमशः नारीक औपचारिक शिक्षा दिस मिथिलाक विद्वानलोकनिक ध्यान गेलनि आ सामाजिक विकासक हेतु एकरा अनिवार्य बूझल गेल। सन् १९३६ ई० मे प्रकाशित कुशेश्वर कुमरक **'शिक्षा सोपान'** पोथीक कॉभर पृष्ठ पर ई उद्घोष देखि पड़ैत अछि जे नारी-शिक्षाक प्रति विद्वज्जगतक मानसिकताकेँ अभिव्यक्त करैछ–

शिक्षा सब उन्नतिक मूल अछि गहथि सकल नर नारी।
बनि आदर्श स्वयं तदनन्तर होथि जगत हितकारी।।

कुशेश्वर कुमरक एहि उद्घोषसँ पूर्वहि प्रो० हरिमोहनझा **'कन्यादान'** लऽ कऽ प्रस्तुत भऽ गेल छलाह। 'कन्यादान'क लोकप्रियता सर्वविदित अछि। तीक्ष्ण सामाजिक व्यंग्य, टिपिकल पात्र ओ जीवन्त भाषा-प्रयोगसँ सम्पन्न कन्यादानमे मिथिलाक लोककेँ अपन परिवेशक सटीक चित्र भेटलैक। शिक्षाक अधोगतिसँ प्रताड़ित मिथिलाक जनजीवनक, पारिवारिक ओ सामाजिक जीवनक सुस्पष्ट चित्र भेटलैक। एहि काल धरि मिथिलाक पुरुष वर्ग तँ अर्थकरी विद्याक अध्ययन दिस उन्मुख भऽ गेल छलाह मुदा नारी शिक्षा अपन पारम्परिके ढर्रा पर कलेक शिक्षा धरि सीमित छल। लोकमानसिकता नारी

शिक्षाकेँ अवडेरने छल। परिणामतः पारिवारिक जीवन प्रभावित भऽ रहल छलैक। एही तथ्यकेँ हरिमोहनझा 'कन्यादान'क सर्मपण वाक्यमे एहि रूपेँ रखलनि – '*जाहि समाजक सूत्रधारलोकनि बालककेँ पढ़ैबाक पाछाँ हजारक हजार पानिमे बहबैत छथि आ कन्याक हेतु चारि कैञ्चाक सिलेटो कीनब आवश्यक नहि बुझैत छथि; जाहि समाजमे बी.ए. पास पतिक जीवन संगिनी ए बी पर्यन्त नहि जनैत छथिन्ह, ताही समाजक महारथीलोकनिक कर-कुलिशमे ई पुस्तक सविनय, सानुरोध ओ सभय समर्पित।*' हरिमोहनझाक एहि समर्पण वाक्यमे नारी-शिक्षाक प्रति हुनक मनोभावक स्पष्ट अभिव्यक्ति भेल अछि। ओ बूझैत छलाह जे दाम्पत्य जीवनक गाड़ीक दूनू पहिया जँ समतूल नहि रहत तँ अनिष्ट होयबे करत आ ताहि अनिष्टकेँ ई कन्यादानक फलश्रुतिमे उपसंहृतो कऽ देलनि। मुदा ई अनिष्ट सामाजिक चिन्तनक द्वारिकेँ खटखटौलक, से हमर मान्यता नहि, कारण 'कन्यादान' लोक पढ़लक आ आइयो एकर पाठक-ग्राहकक संख्या मैथिलीक कोनो पोथीक अपेक्षा जँ अधिके छैक तँ से एकर संदेशक कारणेँ नहि अपितु मनोरंजक सामग्रीक कारणेँ छैक। एकर व्यंजनाकेँ हास्यसँ आच्छादित कऽ देल गेल छैक। तेँ लोककेँ 'कन्यादान'क माध्यमे लोकजीवनक मशाला भेटलैक आ से खूब चहटगर छलैक। हरिमोहनझाक ध्येय छलनि मैथिलीक भाषिक क्षमताक प्रदर्शन ओ अपन मातृभाषाकेँ विभिन्न आधुनिक विधामे संपुष्ट करब आ ताहिमे ओ सर्वथा सफल सिद्ध भेलाह। तत्कालीन सामाजिक परिवेशमे अँग्रेजो शिक्षा प्राप्त वर अपसंस्कृतिक गह्वरमे पड़ि गेल छल। अपवादक रूपमे जँ कोनो कन्या सेहो शिक्षिता भऽ जाइत छलीह तँ ओहो अपसंस्कृति दिसि ढुलि जाइत छलीह। एहि दिशामे सामाजिक चेतनाकेँ जाग्रत करब हरिमोहनझाक ध्येय छलनि। तखन ने ओ सी. सी. मिश्र सन अंग्रेजिया वरक संग बुच्चीदाइ सदृश कन्याक विवाह करौलनि, ओहि सी.सी. मिश्रक संग जे विवाहोत्तर अपन कनिञाकेँ योग्य बनायब दुरूह बुझलनि मुदा कन्यालोकनिक जीवनकेँ आजीवन ब्रह्मचारी रहि कऽ सुधारबाक व्रत लेलनि, देश भरिक कन्याकेँ मूर्खता आ अन्धविश्वासक चाङुरसँ छुटकारा दिअयबामे अपन जीवनक सफलता बुझलनि तथा स्वार्थक बलिवेदी पर होइत कन्यालोकनिक हत्याक विरुद्ध आन्दोलनकेँ अपन जीवनक लक्ष्य बनौलनि (द्रष्टव्य, ***कन्यादान-चतुर्थीक राति***)। सी.सी. मिश्रक ई परिकल्पना सभ वस्तुतः यूटोपियन परिकल्पना छल जे केवल अँग्रेजी शिक्षाक कारणेँ पसरैत अपसंस्कृति जन्य छल। यैह कारण अछि जे कन्यादानमे हरिमोहनझा एहनो नारीक चित्रांकन कयलनि जे अंग्रजी शिक्षा प्राप्त कयलाक बाद अपनाकेँ समाज ओ परिवारसँ ततेक ऊँच कऽ बूझऽ लगैत छथि जे विश्रृंखलताक कारण बनि जाइत छथि। द्रष्टव्य अछि लालकाकीक ई वचन जे ओ अपन पुतहुक लेल कहैत छथिन – '*ओ पढ़ुआ रानी छथि। रंग-विरंगक किताब सभ नेने रहैत छथि। एहि पाछाँ खेनाइयो पिनाइयो बिसरि जाइत छैन्हि। हम*

मुँहे पर कहैत छियन्हि। कतहु सुनितो होइतीह। एक दिन पुछलियैन्ह तँ कहै छथि जे नाक कान धरब मुरखाहा विधि छैक। हमरा बुते ई सभ नहि होयतैन्ह' (कन्यादान–कनेआँ माइक ओरिआओन)।

मिथिलामे विगत शताब्दीक तेसर दशक धरि नारी-शिक्षाक स्थिति केहन छलैक, तकर दृष्टान्त हरिमोहनझाक 'जीवनयात्रा'क एहि पाँति सभमे भेटैछ – '*एकटा बात मन पड़ैत अछि। ओहि समय पटना कॉलेजमे केवल एकटा छात्रा (प्रायः उत्कला कन्या) पढ़ैत छलीह। हुनका देखि हमरा सभक मनमे सिहन्ता होइत छल जे अपनो गाम घरक कन्या कालेजमे आबि कऽ पढ़ितथि। परन्तु ओहि समय ई बात आकाशकुसुमवत् छल (जीवन यात्रा, मैथिली अकादमी, 1984, पृ० ६६)*।

हरिमोहनझा मिथिलामे नारीशिक्षाक दीपवर्त्तिकाकेँ केवल अपने लेखनीयेटासँ नहि अपितु अपन वास्तविक जीवनमे सेहो प्रज्ज्वलित कयने रहलाह, ओकर बार्तीकेँ उकसबैत रहलाह। '**जीवनयात्रा**'मे ओ कहने छथि–'*हम चाहैत छलहुँ जे पत्नीकेँ गृहिणी, सचिव, सखा, शिष्या, कार्येषु दासी शयनेषु रंभा सभ एक संग बना कऽ रखियनि। .. ....ओ स्थिर, गंभीर, शांत प्रकृतिक छलीह, परन्तु हम तेज-तर्रार चुस्त-चालाक चाहैत छलहुँ। ओ तेहन मितभाषिणी छलीह जे कौखन काल हम सहदेव मुने कहैत छलिऐन। और लोक हुनक एहि गुणक प्रशंसा करैत छलथिन मुदा हमरा ओहन सत्ययुगी स्वभाव पसन्द नहि छल। 'लज्जा रूपेण संस्थिता' देवीसँ '**शक्ति रूपेण संस्थिता**, बेशी आकर्षक लगैत छली' (तत्रैव, पृ० ५५)*। हिनक मनोभिलाषाक शत शत सहस्र स्वरूप तँ कखनो इहो सोचबा पर विवश कऽ दैछ जे कन्यादानक सी. सी. मिश्र आन केओ नहि, अवचेतनावस्थाक हरिमोहने बाबू थिकाह।

हरिमोहनझामे एकटा इमानदार साहित्यकारक छवि-छटा उद्भारित छलनि। नारी शिक्षाक प्रति हिनक उन्मुखता नहि केवल वाणीविलासक रूपमे प्रस्तुत भेल अपितु अपन जीवनक आरम्भहिसँ ओ एकरा अनिवार्य बूझैत रहलाह तथा ओहि दिशामे तत्कालीन परम्परित चिन्तनक प्रति विद्रोही भावना रखने रहलाह। जीवनक संध्यामे रचित अपन कृति 'जीवन यात्रा'मे ओ स्मृति पटल पर अबैत एहन अनेक घटनाक वर्णन कयने छथि जाहिमे नारी शिक्षाक प्रति मैथिल समाजक सोचक प्रति हुनक विद्रोही भावक अभिव्यक्ति भेल अछि। बीसम शताब्दीक प्रथम चरणक अन्तिम समयमे विवाहित हरिमोहनझाकेँ तत्कालीन कन्याशिक्षाक सूत्र 'पाठो विवाहावधिः'क सामना करऽ पड़लनि; पिताजीसँ अपन कनिञाक सम्बन्धमे सुनऽ पड़लनि जे 'कनियाँ चिट्ठी-पत्री लिखतहि छथि। काज चलैबा योग्य हिसाब बाड़ी जनितहि छथि। तखन आर बेशी पढ़ि कऽ की करतीह! हुनका की कोनो नोकरी करबाक छैन जे अंगरेजी पढ़तीह।

कुलवधूक गायन-बजायबक प्रति पंडितलोकनिक उक्ति '*क्वचित् गानवती सती*'केँ अकानऽ पड़लनि। एहि समस्त स्थितिमे हुनक मानस पटल पर जे प्रतिक्रिया भेलनि से सिद्ध करैछ जे ओ नारी शिक्षाक प्रति अत्यन्त जागरूक छलाह तथा अपन जागरूकताक परिचय नहि केवल प्रवचन ओ साहित्येटाक माध्यमे देलनि अपितु अपन साक्षरा पत्नीक व्यक्तित्व निर्माणक माध्यमे आचरण द्वारा सामाजिक संदेश प्रदान करबाक आदर्श उपस्थित कयलनि।

हरिमोहनझा '***ग्रेजुएट पुतोहु***', '***मर्यादाक भंग***', '***ग्रामसेविका***', '***परिवर्त्तन***', '***युगधर्म***', '***सात रंगक देवी***' आदि कथा तथा '***रेलक झगड़ा***' एकांकीमे मैथिल ललनाक शिक्षिता होयबाक प्रति एहिठामक लोकजीवनमे जाहि स्पृहाक अवक्षेपण करौने छथि, से ई सिद्ध करबामे समर्थ अछि जे ओ नारी शिक्षाक माध्यमे, नारी जागरणक माध्यमे मिथिलाक सामाजिक सुधारक प्रबल समर्थक छलाह।

अपन '**द्विरागमन**' उपन्यासमे हरिमोहनझा 'मिस बिजलीक भाषण' शीर्षसँ एक गोट उतराचौरीपरक वादविवाद प्रतियोगिताक निवेश करौने छथि। एहिमे '**नारीक कार्यक्षेत्र पुरुष सँ भिन्न हांयबाक चाही अथवा एक समान**' विषय पर एकटा युवक ओ युवतीक व्याख्यान अनुगुम्फित भेल अछि। युवकक व्याख्यान जतबे परम्परापरक, रूढ़िग्रस्त ओ आधुनिकताक प्रति विद्वेषी भावनासँ युक्त अछि, युवतीक व्याख्यान ततबे उत्कट ओ असंस्कृत। एहि दूनू व्याख्यानक आधार पर ई निश्चय करब असंभव भऽ जाइत अछि जे वस्तुतः नारी शिक्षा कतेक दूर धरि आवश्यक अछि। 'जँ नारी शिक्षाक परिणाम पारिवारिक ओ सामाजिक जीवनमे उद्दंडता, विशृंखलता एवं अपसंस्कारक नियामक बनय तँ की मानव जातिक कल्याण संभव छैक?' ई प्रश्न बेर-बेर पाठककेँ आन्दोलित-हिन्दोलित करैत छैक। हरिमोहनझा नारी शिक्षाक एहि असंतुलनक प्रति एक गोट महान दार्शनिक चिन्तन एही उपन्यासमे 'समदाउनि' शीर्षकमे अभिव्यंजित कयने छथि। हिनक संतुलित दर्शन लालकाकीक पिता अर्थात् प्रधान नायिका बुच्ची दाइक नानाक मुहेँ अभिव्यक्त होइत अछि जकर किछु अंश द्रष्टव्य–

"अहाँ शिक्षिता स्त्री ककरा कहै छिऐक? यदि भारतीय स्त्रीक हेतु अँग्रेजीमे गप्प कैनाइ वा अंग्रेजी फैशनमे रहनाइ शिक्षिता होएबाक प्रमाण मानल जाय त मेमोक हेतु मिथिला भाषामे गप्प कैनाइ वा मैथिल नारी जकाँ रहनाइ शिक्षाक मापदण्ड किऐक नहि मानल जाय? और राजभाषा सिखबाक हेतु जखन एतेक प्रजा मौजूदे छथि त प्रजावतीक नहिञे सिखने कोन हानि ?

'हमरालोकनि गृहिणीक हेतु शिक्षाक अर्थ बुझैत छी कर्त्तव्य शिक्षा। जे स्त्री अनुशासनक महत्त्व बूझय, मर्यादा पालनमे गौरव मानय, कर्त्तव्यक वेदी पर भोगलिप्साक बलिदान करय, वैह यथार्थतः शिक्षिता थिक। सीताजी अपन आदर्श पर सती भेलीह,

तेँ हम हुनकर पूजा करैत छिऐन्ह। यदि ओ लंकाक बाजब-नाचब सीखि कऽ अशोकवाटिकामे टहलितथि तँ शूर्पनखासँ बेशी महत्त्व नहि पबितथि। यथार्थ शिक्षा ओ थिक जे आत्मामे धर्म-ज्ञानक प्रकाश जगा जीवनकेँ पवित्र और उच्च बनाबय। भारतभूमिमे भारतीय ललनाक सर्वोच्च आदर्श थिकीह मैथिली, जनिका समक्ष समस्त संसारक स्त्रीवर्ग नतमस्तक भऽ जाइ छथि। ओहन श्रेष्ठ आदर्शकेँ बिसरि अहाँ भारतीय कन्याकेँ मृगमरीचिकाक पाछाँ दौड़ैत-दौड़ैत मेम जकाँ नचाबय चाहै छी? पाश्चात्य भोगवाद, यूरोपक बुद्धिवाद आर उपयोगितावाद अन्ततोगत्वा भारतक अध्यात्मवादमे आबि कऽ शांति ढूँढ़त से अहाँ देखि लेब। विलायती काँचक चमक दमक पर लट्टू भऽ अहाँ अपना घरक सोनकेँ टलहा बूझि फेकि रहल छी। ई केहन भारी व्यामोह थिक।"

'हमरोलोकनि तँ स्त्रीक योग्यताक अर्थ बुझै छी सत्सन्तानोत्पादनक योग्यता। **पुत्रार्थं क्रियते भार्या**। एहि सिद्धान्त पर अहाँ सन सन अङरेजिया हँसथु, किन्तु घूरि-फिरि कऽ अंतमे फेरि ओही पर आबऽ पड़तैन्ह। नारीक मुख्य कार्य पुत्र-प्रसविनी होएबाक छैन्हि, पुस्तक प्रसविनी नहि। पुरुषक देखाउस कए ओ कोनो-कोनो युगमे लिखनाइ-पढ़नाइ सीखि ज्ञान-विज्ञान उपार्जन कऽ लेथु, किन्तु ओ योग्यता विकास-क्रममे क्षणिक फेन मात्र थिक, असली प्रवाहक स्रोत नहि; कठोर विज्ञानक दुरूह भार वहन करबाक हेतु स्त्रीक कोमल मस्तिष्क नहि बनल छैन्ह। जंगल, पहाड़ी और बादशाहक नाम रटा, रेखागणित तथा बीजगणितक सूत्र कण्ठस्थ करा और विदेशी भाषाक शब्दकोष मुखस्थ करा, हम नारीक ओ बहुमूल्य समय नष्ट नहि करक चाहैत छिऐन्हि जाहिमे ओ सुकन्या, सुपत्नी वा सुमाता होएबाक संस्कारकेँ पुष्ट कऽ अपन नारी जीवन केँ सार्थक कऽ सकै छथि। सीताजी गणित वा पदार्थ विज्ञान नहि पढ़ने छलीह। परन्तु के हुनका अशिक्षिता कहबाक धृष्टता कऽ सकै अछि। भिन्न-भिन्न विज्ञानक संकलन तथा उपयोग सांसारिक जीवन युद्धक हेतु अन्तिम ध्येय नहि, किन्तु उपकरण मात्र थिक और तदर्थ पुरुषलोकनि छथिए। कोमलांगीकेँ और और कोमल गुणक विकास करऽ दिऔन्ह जाहिसँ माधुर्य प्रदान करतीह। यदि हुनको अपने सन कठोर बना देबैन्ह त जीवन रस सुखा जायत। अहाँ अपने खेत जोतू, हुनका फलक आनन्द दिऔन्ह। अपने साइकिल दौड़ाउ, हुनका महफाक आदर दिऔन्ह। ओ सभ तँ पुनीत और महत्त्वपूर्ण कार्यक सम्पादन करै छथि-मानवसृष्टि। हुनकर समुचित आदर करब सीखू तखन पुरुषार्थ। स्त्रीसँ पुरुषवत् कार्य करायब स्त्रैणताक लक्षण थिक।'

'महिलाक यथार्थ सम्मान नकली शिष्टाचारसँ नहि होइत छैक। परपुरुषसँ करमर्दन केँ हम सभ्यताक चिह्न नहि बल्कि असभ्यताक चिह्न बुझैत छी। स्त्रीक सहशिक्षा तथा स्वतंत्रताक आन्दोलनकेँ हम अधिकांशतः पुरुषक उद्दाम लालसाक छद्मवेश मात्र बुझै छी। स्त्रीक वास्तविक शिक्षा घरमे होइ छैक। बाहरी चमक-दमकक शान सिखा तथा

स्वच्छन्दताक मादक नशा पिया हम ओकरा बनबैत नहि, बिगाड़ैत छिऐक। यथार्थ शिक्षा ओ थिक जे भोगवृत्तिकेँ उद्दीप्त नहि कऽ त्यागवृत्तिकेँ प्रोत्साहित करय! अहाँ पहिने स्वतः शिक्षित होउ तखन स्त्री-शिक्षाक अर्थ बुझबैक।'

वस्तुतः एक गोट निष्णात कवि-कथाकार ओ उपन्यासकारक रूपमे प्रख्यात हमरालोकनिक व्यंग्यसम्राट् नारी शिक्षाक सम्बन्धमे ई संतुलित विचार अपन पात्र महात्माजीक माध्यमे अभिव्यंजित कऽ ई संदेश देने छथि जे ओ नारी शिक्षाक समर्थक तँ छथि मुदा ताही सीमा धरि जतऽ धरि ओ लोकजीवनक उपकारी तथा आदर्श भारतीय जीवनक अनुकूल हो। लेखककेँ **'कविजी'**, **'अंग्रेजिया बाबू'**, **'दरोगाजीक मोंछ'** आदि गल्पमे अभिव्यक्त नारी विषयक अतिरंजनाक वर्णनहुमे नारी-शिक्षाक संतुलनेक व्याख्या अभीष्ट छनि।

एतावता हरिमोहनझाक साहित्यक आधार पर ई कहल जा सकैछ जे नारीलोकनिक पारम्परिक शिक्षा-व्यवस्था तथा अधुनातन पुरुषक समानतापरक नारीलोकनिक तथाकथित स्वातंत्र्यपरक शिक्षा व्यवस्थाक बीच ओ मध्यममार्गक अनुसरणकेँ श्रेयष्कर मानैत छलाह।

पंडित आनन्दझाक 'महेशशतक'

पं० आनन्दझाक **महेश शतक**मे एक सय शिव सम्बन्धी गीत आ पदावली अछि। एहि पदावलीक प्रणयनमे कवि विद्यापति ओ चन्दाझाक परम्परानुवर्त्ती शैव साहित्यसँ सर्वथा अनुप्राणित देखि पड़ैत छथि, यथा--

हे शिव! दीनदयालु! सकल-नर-तारक हे।
उतपति-थिति-लय हेतु सेतु भवधारक हे।।
त्रिभुवनपति विश्वनाथ सकल जन पालक हे।
तोहेँ उतपति-थिति हेतु काल पुनि कालक हे।।

कविक अधिकांश पदावली रागतालयाश्रित भनितायुक्त गीत छनि जाहिमे कखनो शिवक विश्वनाथ तँ कखनो विश्वेश्वरनाथ रूपक आ कखनो सामान्य भोला, हर, शंकर, गिरिजेश, महादेव स्वरूपक अभ्यर्चनासँ सम्बद्ध स्तवन-निवेदन अछि। एहि प्रकारक पदावलीमे भक्तक दीनता, विवशता ओ शिवक अंग, वेष, वसन, भूषण, आहार आदिक परम्परित स्वरूपक उपस्थापन भेल अछि।

किछु पदावली लीलागान विषयक सेहो छनि जाहिमे मेना विलाप, निधि विवाह ओ गौरी परिणय, कलहान्तरित, पारिवारिक कलह-विरह आदिक वर्णन भेल अछि। वैवाहिक गीतमे कवि मिथिलामे प्रचलित नाक पकड़बाक विधि, चुमान, ओठंगर, ठकबक चिन्हयबाक विधि, नैनाजोगिन, गोत्राध्याय आदि संस्कार पक्षकेँ समेटि लेलनि अछि। हिनक एक गोट गीतमात्रमे गौरीक तपश्चर्या ओ बटुक द्वारा हुनका शिव-विवाहसँ विरत करयबाक वार्त्ताक उल्लेख भेटैत अछि। एहि गीतक स्वरूप एना अछि--

गौरी सुनह हमर हित बतिया।
जनिका लै करइत छह एत तप भरि देह भरल विभुतिया।
घर आङ्गन एकौ नहि किछु छनि चिबबथि बेलक पतिया।
बाघक छाल लपेटल कटि तट कतएसँ औतन्हि धोतिया।।
फुफुआइत सापक फण रूपर कोना ई राजत मोतिया।
अक्षनाल, डमरू डिमडिम कय नाच करथि दिन रतिया।।
भूत प्रेत परिवार संग लै बान्हि गजानिन गतिया।
सुर वर छाड़ि किए करि आनन्द ततए एतेक भगतिया।।

एहि गीतक शब्द विन्यास ओ भावसाम्यक अनुशीलनक हेतु चन्दाझाक ई गीत द्रष्टव्य अछि--

सुनह हमर हित बतिया गौरी।
जे वर हेतु करह तप दारुण ततय न अछि कुलजतिया।।
भूधरराज समाज तेहन नहि जे तोर हरथि कुमतिया।
बबुरक तरु लपटलि भलि मानत के जन मालति-लतिया।।
वस शमसान भयान प्रेत संग विष नातल दिन रतिया।
मुण्डक माल व्याल वलयावलि तत तोरि अचल भगतिया।।
सूचित कएल बुझल मन अनुचित हठसौ लाभ विपतिया।
सुयश 'चन्द्र' तातक देवि राषह वन तेजि जाइ बसतिआ।

एहि तरहेँ 'महेशशतक'मे संकलित आनो अनेक लीला ओ स्तवन विषयक गीति सभ मौलिक अनुष्ठानसँ पृथक् कविक प्रारम्भिक अनुकरणपरक रचना बुझना जाइछ।

मुदा दोसर दिरा कवि प्रतिभाक चरम उत्कर्ष, प्रौढ़ कल्पना, शास्त्रीयता, दार्शनिकता, उक्तिविच्छित्ति आदिक रामेकित स्वरूप कविक ओहन गीत ओ पदावलीमे अत्यन्त स्फुट देखि पड़ैत अछि जतऽ कवि शिवक साङ्गरूपकत्व हेतु हुनक परिवेशक उपयोग विभिन्न तुलनात्मक आधारक हेतु कऽ अपन प्रौढ़त्व प्रमाणित कयल अछि। एहि प्रकारक पदसभमे शिवकेँ अनलस पहरुदार, बूढ़ बिलाड़, सूत्रधार नटराज, गमार चमार, चतुर कुम्हार, धोबी, भिक्षुक, दुधगरि गाय, फणधर काल कराल, भव पथ तस्कर, अकिञ्चन दीन, हरवाह, अमृतकलश, ज्ञानसमुद्र, बताह कवि, सरोवर आदिक साङ्गरूपक द्वारा प्रस्तुत कयल गेलनि अछि।

यद्यपि मैथिली साहित्यक हेतु कविक ई उद्भावना सर्वथा अस्पृष्ट ओ मौलिक कहल जा सकैत अछि तथापि एकर सूत्र वैदिक वाङ्मयेसँ प्राप्त अछि। शुक्ल यजुर्वेदक रूद्राध्यायमे शिवक अर्चना विविध जातीय व्यवसायिकक रूपमे करैत कहल गेल अछि--

नमस्तक्षेभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमः।
नमः कुलालेभ्यः कमरिभ्यश्च वो नमः।।

परवर्त्ती संस्कृत स्तुति परम्परामे एकर परिष्कृत कल्पना विलास म० म० गोकुलनाथ उपाध्यायक शिवस्तुति वा शिवशतकमे भेटैत अछि। एहिमे कवि एक-एक श्लोकमे शिवक विभिन्न रूपक चित्रण कुम्हार, कृपण, कृषक, कवि, अमृत, जोलहा, थानेदार, पहरेदार, अनाथ, दरिद्र, भिक्षु, वृक्ष, बूढ़ बाबा, वानर, बेटीक बाप, भूतनाथ, सूत्रधार, स्वामी आदिक साङ्गरूपक द्वारा कयने छथि *(द्रष्टव्य, शैव साहित्यक भूमिका - डा० रामदेव झा, मैथिली अकादमी, पटना)*।

एहि तरहेँ कहल जा सकैत अछि जे संस्कृतक निष्णात पंडित आनन्दझाकेँ एहि प्रकारक कल्पना विलासक प्रेरणा अवश्ये संस्कृत वाङ्मयेक अन्वीक्षणसँ प्राप्त भेल होयतनि।

ईहो संभव थिक जे परतंत्र भारतीय मानसिकताक प्रति कविक उद्वेलन महेशशतकमे जातीय कुप्रथाक विरुद्ध जनजागरणक अभियानक रूपमे सर्वमान्य देवमे सर्वजाति प्रतिष्ठा द्वारा राष्ट्रिय समन्वयक तत्कालीन विशिष्ट आवश्यकताक हेतु उत्प्रेरक बनल होइनि। संभव अछि जे कवि अछोप-अप्रतिष्ठितकेँ शिवमे आरोपित कऽ सम्मानित करबाक उद्देश्यें वैदिक परम्परानुकूल महेशशतकक रचनामे प्रवृत्त भेल होथि आ गांधीजीक 'अछूतोद्धार आन्दोलनकेँ' निजभाषा काव्यक माध्यमे सबल कयने होथि। ज्ञातव्य अछि जे वैदिक यज्ञानुष्ठानमे यज्ञकर्ममे सहयोग देबाक लेल विभिन्न प्रकारक व्यवसायक लोकक नियुक्तिक विधानसँ ई संस्कृत न्यायाचार्य परिचित छले होयताह *(मेधायै रथकारं, धैर्य्याय तक्षाणाम्। तपसे कौलालं मायायै कर्मारम्।। यजुर्वेद, अध्याय 30 मन्त्र 6-7)*, स्वतंत्रता आन्दोलन एवं परवर्त्ती एकता ओ जातीय समन्वय आन्दोलनक यज्ञानुष्ठानक हेतु विविध जातिक ऐकमत्य आ जुटानीक हेतु शिवकेँ माध्यम बनाय रचनामे तत्पर भेल होयताह, युग-युगसँ विखंडित राष्ट्रिय समन्वयक एहि जातीय कारकक वैदिक परम्परानुकूल व्याख्या कऽ युगानुकूल कान्तासम्मित उपदेशक व्यवस्था हेतु मुखर भेल होयताह।

आस्थावान कविक यैह प्रौढ़ आयास हिनका चिरकालक लेल मैथिली शैवसाहित्यक उच्चासन पर प्रतिष्ठापित कऽ देलकनि अछि। परवर्त्ती **'राधा विरह'** महाकाव्यमे कविचूडामणि 'मधुप' द्वारा भुवनेश्वरीकेँ ब्राह्मणी, क्षत्रिया, वैश्या ओ शूद्रो वर्णक; खबासिनी, चरवाहिनी, गिरहतनि, महाजनी एवं कुटनी-पिसनी पेशाकारिकाक; कुम्हैनि, गोढ़नी, गोआरि, बरैनि, कानूनि, नौआइनि, लोहारिनि, मालिनि, मोदिआनि, सोनारिनि, छोलकढ़नी, रजकी, तेलिनि, कलालिनि, रङरेजिन, डोमिन, चमैनि, मेहतरनी, यवनी ओ जोलहिनि व्यावसायिक जातिक तथा डाइनि, अघोरिनि, चोरनी, अछूत-अन्त्यजा, तंत्रिणी, मायाविनी एवं मोहिनीक स्वरूपमे साङ्गरूपकत्व द्वारा अभिव्यक्त करबाक प्रक्रिया हिनक एहि आयासक परम्पराक विकासधाराक उत्कर्ष अछि।

एहि तरहेँ कहल जा सकैछ जे राष्ट्रियता संपुटित आनन्दझा मैथिली साहित्यक विशिष्ट सेवक ओ मिथिलाक विशिष्ट विभूति छलाह आ हुनक महेशशतक मैथिली शैवसाहित्य ओ राष्ट्रिय भावाभिव्यक्तिक विशिष्ट आयाम थिक। विगत 16 अगस्त, 1988 हमरालोकनिसँ हुनक पार्थिव काया छीनि लेलक तथापि हुनक विशाल सत्साहित्य सभ मानव समुदायकेँ अनन्त काल धरि अनुप्राणित करैत रहत।

राधाविरहमे शाक्त तत्त्व

ओना तँ शक्तिक उपासना भारतीय जीवन पद्धतिक विशिष्ट अंग रहल अछि। समस्त भारतीय वाङ्मयमे पुष्कल शक्ति-पदक रचना भारतीय मानसक **'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः'**क साहित्यिक अभिव्यंजना थिक। नारीक कोमल भावना ओ मातृत्व, सहनशीलता ओ दायित्व, सर्जकता ओ पालन, निरीक्षण ओ लालन-प्रवृत्ति, दयालुता ओ सेवाभाव, करुणा ओ मृदुलता, वात्सल्य ओ सौन्दर्य शाक्त साहित्यक उपजीव्य रहल अछि। नारी भावनाक अत्यन्त उदात्त स्वरूप मातृरूपमे समेकित रूपेँ पाओल जयबाक कारणेँ एहि स्वरूपकेँ शक्तिपदमे प्रधानता रहलैक अछि। शाक्त भक्त हृदयक भावनाक अभिव्यक्ति, मातृपदक प्रति अनुरक्ति, अर्च्चनापूर्वक प्रसन्न कऽ वरप्राप्तिक प्रति आसक्ति एवं पाप-दोष-विमोचनक हेतु प्रवृत्तिक गायन शक्तिपद सभमे सुलभतया अभिव्यंजित भेल अछि।

भारतीय शाक्त साहित्यक परम्पराक सूत्र ऋग्वेदहिमे भेटि जाइत अछि। ऋग्वेदक देवीसूक्तमे अम्भृण ऋषिक ब्रह्मवादिनी कन्या वाक् जे अपन उद्गार प्रकट कयने छथि ताहिमे पराशक्ति स्वरूपक अत्यन्त उदात्त परिकल्पना भेटैत अछि *(द्रष्टव्य, ऋग्वेद 10. 10.105.1-8)*। एही प्रकारक भाव अथर्ववेदक देवीशीर्षमे सेहो प्रकट देखि पड़ैछ।

परवर्त्ती पौराणिक साहित्य सभमे पराशक्तिक स्वरूपक बहुआयामी चित्रण भेल अछि। कखनो तँ ई आद्याशक्तिक रूपमे चित्रित भेटैत छथि तँ कखनो विष्णुक महामायाक स्वरूपमे। ब्रह्मवैवर्त्त पुराणमे एहि आद्याशक्तिकेँ प्रकृति नामे अभिहित कयल गेलनि अछि आ कहल गेल अछि जे यैह सृष्टिक आदिमे दू भागमे विभाजित भऽ पुरुष आ नारीक सृष्टि कयलनि-

> सृष्टेराद्या च या देवी प्रकृतिः सा प्रकीर्त्तिता।।
> योगेनात्मा सृष्टिविधौ द्विधारूपो वभूव सः।
> पुमांश्च दक्षिणार्द्धाङ्गो वामाङ्गः प्रकृतिः स्मृतः।।
>
> ***(ब्रह्मवैवर्त्त पुराण, प्रकृति खण्ड, श्लोक १-८)***

पद्मपुराणमे पराशक्तिकेँ भगवान विष्णुक मायाक रूपमे ग्रहण कयल गेलनि अछि। भगवान अपन लीला-विस्तारक क्रममे सृष्टि, स्थिति ओ प्रलयक हेतुभूता सनातनी मायाकेँ सत्त्व, रज ओ तमोगुणसँ युक्त कऽ क्रीड़ा करैत छथि-

तया जगत्सर्गलयौ करोति भगवान् सदा।
क्रीडार्थं देवदेवेन सृष्टा माया जगन्मयी।।
अविद्या प्रकृतिर्माया गुणत्रयमयी सदा।
सर्गस्थितिलयानां सा हेतुभूता सनातनी।।
योगनिद्रा महामाया प्रकृतिस्त्रिगुणान्विता।
अव्यक्ता च प्रधानं च विष्णोर्लीलानिकारिणः।।

तथापि देवीक सर्वाधिक उदात्त स्वरूपक अनुकीर्त्तन मार्कण्डेय पुराणमे भेल अछि। एहि पुराणक देवीमाहात्म्यमे शक्तिस्वरूपा चण्डीक जे रूप उद्घाटित भेलनि अछि से समस्त भारतीय समाज ओ साहित्यकेँ अपन प्रभावान्वितिसँ आलोकित कयने रहल अछि। एहिमे पराशक्तिक अनेक स्वरूपमे एकता एवं एके स्वरूपमे अनेकताक अभिव्यंजनाक संगहि हिनका संसार-बंधन ओ मोक्षक हेतुभूता सनातनी माया कहल गेलनि अछि। जगतक सर्जन, पालन ओ विनाशक कारणभूता, ज्ञानीयोलोकनिक चित्तकेँ बलपूर्वक वशीभूत कएनिहारि पराशक्ति एहिमे समस्त ईश्वरक ईश्वरीक रूपमे चित्रित भेलीह अछि *(द्रष्टव्य, मार्कण्डेय पुराण, देवी माहात्म्य, अध्याय 1, श्लोक 55-67)*।

परवर्त्ती साहित्यमे नारीक एहि प्रकृत स्वरूपकेँ पुरुषार्थ प्रवर्त्तिनी शक्तिक प्रतीकक रूपमे प्रतिष्ठापित कयल गेल। एहि शक्तिक अभावमे पुरुषकेँ सर्वथा अकर्मण्य, निश्चेष्ट ओ उदासीन कहल गेल-

त्वामामनन्ति प्रकृतिं पुरुषार्थ प्रवर्त्तिनीम्।
तद्दर्शिनमुदासीनं तामेव पुरुषं विदुः।।

(कुमारसंभवम् - कालिदास, २/१३)

महाकवि विद्यापतिओ पुरुषपरीक्षाक मंगलाचरणमे आदिशक्तिक प्रति भावाभिभूत भऽ कहलनि अछि जे जनिका देवतालोकनिक प्रणम्य ब्रह्मो प्रणाम करैत छथिन, सभक पूज्य शंकरो पूजा करैत छथिन, सभक ध्येय विष्णुओ ध्यान करैत छथिन, ओहि आदिशक्तिकेँ हम शिरसा प्रणाम करैत छियनि-

ब्रह्माऽपि यां नौति सुरः सुराणां यामर्चितोऽप्यर्चयन्तीन्दुमौलिः।
यां ध्यायन्ति ध्यानगतोऽपि विष्णुः तामादिशक्तिं शिरसा प्रपद्ये।।

एहि तरहेँ आदिशक्ति ब्रह्मा, विष्णु, शिवादि देवहुसँ श्रेष्ठ प्रख्यापित भेलीह।

मिथिला आदिकालहिसँ शक्ति-साधनाक केन्द्र रहल अछि। पुराण तथा तन्त्रक प्रभावेँ स्वभावतः एहिठामक जनमानसमे शक्तिक विविध स्वरूपक प्रति श्रद्धाविकास होइत रहल अछि जकर साहित्यिक अभिव्यंजना मैथिली शाक्त साहित्यक माध्यमे सेहो भेल अछि।

मैथिली साहित्यमे दुर्गा, काली, चण्डी, तारा, भुवनेश्वरी, कमला, भगवती,

बगलामुखी, शाकम्भरी, शीतला, सरस्वती, षोडशी, छिन्नमस्ता, सती आदि विविध अभिधानमे देवी ओ शक्तिस्वरूपाक अर्चनासँ सम्बद्ध पदावलीक रचना महाकवि विद्यापतिसँ आरंभ कऽ आधुनिको कालधरिक कवि-नाटककारलोकनि करैत रहलाह अछि। मिथिलामे विभिन्न अभिधानसँ पराशक्तिक कुलदेवी ओ गृहदेवीक रूपमे अर्चनाक परम्परा रहल अछि। अपन-अपन कुलदेवीक प्रति सेहो कविलोकनि शाक्त भक्तिपदक रचना करैत रहलाह अछि। आदिशक्तिक एहि विभिन्न स्वरूपक अतिरिक्त पृथ्वी, गंगा, कमला, कोशी आदि विभिन्न प्राकृतिक उपादानमे सेहो शक्ति ओ देवीरूपक प्रत्यारोपणपूर्वक भक्तिसाहित्यक रचना भेल अछि। पराशक्तिक एहि विभिन्न स्वरूपक वर्णनमे साहित्यस्रष्टालोकनि पौराणिक आख्यानसँ सर्वथा भावग्रहण करैत रहलाह अछि। एहि साहित्यमे भक्तक भावनाक उद्रेक प्रमुख बुझना जाइछ। पराशक्तिक विविध रूप ओ रंग, भूषण ओ आयुध, वेश-वसन ओ स्वभाव, वाहन ओ दिव्य वैभवक संगहि अपरिमित महिमा ओ गुणविस्तार तथा शाक्त भक्तक दीनता, विवशता, आकांक्षा एवं आत्मनिवेदन एहि साहित्यक उपजीव्य रहल अछि।

कविचूडामणि काशीकान्तमिश्र **'मधुप'**क **राधा विरह** महाकाव्यमे शाक्त तत्त्वक प्रधानता दृष्टिगोचर होइत अछि। एहि महाकाव्यक मंगलाचरणमे भगवतीक छिन्नमस्ता स्वरूपक ध्यानक वर्णन अछि जे कविक कुलदेवी सेहो छथिन।

देवीक पराशक्तिक स्वरूपमे काली, तारा, षोडशी (त्रिपुरसुन्दरी), भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगलामुखी, मातङ्गी ओ महालक्ष्मीकेँ पुराण ओ तन्त्रसाहित्यमे दश महाविद्याक रूपमे जानल जाइत छनि। देवीक एहि विभिन्न स्वरूपमे ध्यानमात्रक अन्तर देखि पड़ैत अछि नहि कि गुणविस्तारक प्रसंगक। मैथिली साहित्यमे दशो महाविद्याक ध्यानसँ सम्बद्ध पद सभ भेटैत अछि, तथापि जाहि महाविद्यासबहि पर कविलोकनि अपेक्षाकृत अधिक अभिमुख भेलाह अछि, से सब थिकथि-काली, तारा, भैरवी ओ छिन्नमस्ता। अधिकांश कविलोकनि एकाधिक महाविद्याक ध्यानक वर्णन कयने छथि, मुदा महाकवि रत्नपाणि ओ आदिनाथ दशो महाविद्याक ध्यानक पृथक्-पृथक् पदरचना कयने छथि। विवेच्य कविचूडामणिक **विनयांजलि** (अप्रकाशित काव्यग्रन्थ) मे दशो महाविद्याक दस दस गोट गीतक प्रणयन हिनका मैथिली शाक्त साहित्यधाराक विशिष्ट विभूति प्रमाणित कऽ सकैत छनि, मुदा अनधीत ओ अनालोचित-अप्रकाशित रहबाक कारणेँ एहि ग्रन्थक सम्बन्धमे किछु विशेष नहि कहल जा सकैछ।

छिन्नमस्ताक ध्यान तन्त्रसाहित्यमे निम्न स्वरूपक भेटैछ-

नाभौ शुभ्रसरोजमध्यविलसद्बन्धूक पुष्पारुणं
भास्वत् भास्करमण्डलं तदुदरे यद् योनिचक्रं महत्।
तन्मध्ये विपरीतमैथुनपरा प्रद्युम्न तत्कामिनी

पृष्ठस्थां तरुणार्ककोटि विलसत्तेजः स्वरूपां भजे ।।
वामे छिन्नशिरोधरां तदितरे पाणौ वृहत्कर्तृकां
प्रत्यालीढपदां दिगन्त वसनानुन्मुक्त केशव्रजाम् ।
छिन्नात्मीय शिरः समुच्छलद्सृग्धारां पिबन्तीं परां
बालादित्य समप्रकाश विलसन्नेत्र त्रयोद्भासिनीम् ।।
वामादन्यत्र नालम्ब बहुगहनगलद्रक्तधाराभिरुच्चैः
पायन्तीम् अस्थिभूषां करकमल लसत्कर्तृकामुग्ररूपाम् ।
रक्तामारक्तकेशीमपगत वसनां वर्णिनीमात्मशक्तिं
प्रत्यालीढोरुपादामरुणितनयनां योगिनीं योगनिद्राम् ।।
दिग्वस्त्रां स्रस्तकेशीं प्रलयघनघटाघोररूपां प्रचण्डां
दंष्ट्रादुत्प्रेक्ष्य वक्त्रादरविवर लसल्लोल जिह्वाग्रभासाम् ।
विद्युल्लोलाक्षि युग्मां हृदयतटलसद्भोगिनीं भीमा सुमूर्त्तिं
सद्यश्छिन्नात्मकण्ठप्रगलितरुधिरैर्डाकिनीं वर्धयन्तीम् ।

(तन्त्रकौमुदी - देवनाथ ठाकुर, स०-रमानाथ झा, मिथिला इन्स्टीच्यूट, दरभंगा, शाके 1880, पृ० 120 - 121)

मैथिलीमे छिन्नमस्ताक ध्यानसँ सम्बद्ध सुकवि उमापति एवं महाकवि रत्नपाणिक एक-एक गोट पद तथा आदिनाथक दुइ गोट पद दृष्टिपथ पर आयल अछि। एहि पद सभमे तन्त्रोक्त ध्यानकेँ अविकल रखबाक कविलोकनिक प्रयत्न स्पष्ट अछि। द्रष्टव्य अछि आदिनाथक ई पद –

नाभिकमल बिच विलस अरुण रुचि राजित दिनकर बिम्बे।
ता पर योनिचक्र पर रतियुत मन्मथ कर अवलम्बे।।
रति विपरीत उपर तुअ पदयुग कोटि तरुण रवि भासे।
काटल सिर कर बाम प्रकाशित दक्षिण काति प्रकाशे।।
दिग अम्बर कच फूजल निज शिर काटल सोनित पीबे।
बाल दिवाकर रुचिर कान्ति लस लोचन तीनि सुशोभे।।
तीनि धार बह रक्त उरध भय मध्य धार निज मूखे।
दुहु दिसि योगिनि पिबत धार दुइ अति आनन्दित भूखे।।
तडित लोल युगलोचन रसना कटकट दसन सहासे।
विषधरमाल शत्रु सिरमालिनि सुरपालिनि द्विष नासे।।
विधि आदिक सुर तुअ पद सेवक प्रचण्ड चण्डिका देवी।
अचिन्त्य रूप तुअ जगत जोतिमय योगीन्द्रादिक सेवी।।
उत्पत्ति स्थिति संहृतिकारिणि तीनि रूप गुणमाया।

तीनि लोकमह सभ घटवासिनि करिअ अहोनिसि दाया।।
जगतजननि तोहे जगत वेआपित नारि पुरुषमय जानी।
आदिनाथ पर कृपायुक्त भय दाहिनि रहिय भवानी।।

(देवीगीतशतक - आदिनाथ, सीताराम प्रेस, काशी)

राधाविरहक प्रारम्भिक दुइ परिच्छेदमे वर्णित छिन्नमस्ताक ध्यानमे यद्यपि नग्नवेश, मुक्तकच, रति विपरीत निरत मन्मथक रतिपीठक उपर प्रत्यासीनता, हाथमे तरुआरि धारण, सौन्दर्यसम्पन्नता, अपने कण्ठ काटि ओकर रुधिरसँ योगिनीकेँ प्रबोधबाक प्रवृत्ति, अपने कबन्धक रक्तपान करबाक वृत्ति, नागकेँ धारण करबाक स्थिति आदिक तँ यथावत् पूर्व परम्पराक ध्यानक अनुरूपे अनुकृति भेल अछि तथापि कवि देवीक स्वरूपमे *'नाभौ शुभ्रसरोज मध्य विलसद्बन्धूक पुष्पारुणं भास्वत् भास्करमण्डलं तदुदरे यत् योनिचक्रं महत्', 'बालादित्य समप्रकाश विलसन्नेत्र त्रयोद्भासिनीम्'* आदिकेँ विन्यस्त नहि कयलनि अछि आ ने डाकिनी ओ योगिनीक स्वरूपक विकरालते हिनक पदमे प्रस्फुटित भऽ सकल अछि। मंगलाचरणक अन्तमे कविक आत्मनिवेदन अत्यन्त दीन, विवश भक्तहृदयक भावापन्न आकांक्षाक अभिव्यंजना करैछ–

पिबइत रक्त कबन्धक विधि हरि
हरहुक जन्धक हेतु महान।
से मधुपक मन बन्धक राखथु
जकर प्रबन्धक गति नहि आन।।

(राधाविरह - मधुप, हरिनन्दन सिंह स्मारक निधि, राघोपुर पुबारि डेउढ़ी, दरभंगा, 1969, पृ० 2)

मंगलाचरणक अतिरिक्त राधाविरहक कथातत्त्वमे सेहो शाक्त तत्त्व प्रबल देखि पड़ैछ। एहि महाकाव्यक नायक छथि दिव्य लीलापुरुष श्रीकृष्ण जे सर्वव्यापक ब्रह्मक प्रतिनिधित्व करैत छथि। नायिका छथि परम प्रेमस्वरूपा रासेश्वरी राधा जे ब्रह्माण्डनायकक महामाया एवं सृष्टिक आधारभूता शक्तिक प्रतिनिधित्व करैत छथि। ब्रह्ममे लीन होयबाक प्रवृत्तिसँ जीवजगतक एकनिष्ठ प्रेम एवं सृष्टिजगतमे लीलाविहारक हेतु ब्रह्मक सार्वजनीन प्रीतिक संघर्ष राधाकृष्णक संयोग–विरहक प्रेमलीलाक माध्यमे एहि महाकाव्यमे प्रकट भेल अछि। यद्यपि श्रीकृष्णकेँ एहि महाकाव्यमे अनादि, अनंत, अखंड्य, अच्छेद्य, ब्रह्माण्डक नायकक स्वरूपमे चित्रित कयल गेलनि अछि तथापि हुनका सर्वतंत्रस्वतंत्र स्वरूपसँ वञ्चिते राखल गेलनि अछि आ अपन लीलाविस्तारक हेतु पराशक्तिए पर आश्रित कहल गेलनि अछि। नारदक एहि कथनसँ ई तथ्य अत्यन्त स्पष्ट भऽ जाइछ–

धन्य शक्ति केर शक्ति जनिक संकेत पबैत कनेक।
परब्रह्म अपनहुँ नचैत छथि खेल अनेक रचैत।।

तथापि –

आ बुझि पौलहुँ आज स्वयं अहूँ स्वच्छन्द नहि।
करी सकल से काज जे शक्तिक संकेत हो।।

राधाविरहमे शाक्त तत्त्वक प्रधानता एहि महाकाव्यक कथातत्त्वमे भगवती भुवनेश्वरीक सन्निवेशसँ अत्यन्त सम्पुष्ट भऽ जाइछ। वस्तुतः एहिमे श्रीकृष्णक समस्त लीलाविस्तार भुवनेश्वरीक आदेशक अनुपालनक अनुरूप वर्णित अछि। तेँ पराशक्तिक अनुकीर्त्तन एहि महाकाव्यक अन्तर्वर्त्ती कथाधाराक प्रमुख ओ विशिष्ट दिशा बनि गेल अछि।

आद्याशक्तिक आदेशेँ ब्रह्म ओ त्रिगुणात्मिका माया द्वारा नाना प्रकारक लीला करबाक पौराणिक तथ्य शाक्त मान्यताक सर्वथा अनुरूप अछि। एहि महाकाव्यमे ई तथ्य भुवनेश्वरीक एहि कथनमे स्पष्ट अछि–

वत्स! निखिल ब्रह्मांडक जननी हमहिँ थिकहुँ तोँ पुत्र प्रधान।
राधा आधारे सृष्टिक, हम देल तोहि निगमागम ज्ञान।।
अहिँक अधीन विधाता हरि हर सब ब्रह्माण्डक भिन्ने भिन्न।
अहाँ रही गोलोक लोकमे मम चिन्तनमे सतत अखिन्न।।
खल निग्रह हित विग्रह धऽ राधाक सहित ऐलहुँ ऐ लोक।
औरो कारण कते जाहिसँ छोड़ऽ पड़ल एखन गोलोक।।

(तत्रैव, पृ० 16)

महाकाव्यक चारिम सर्गमे भगवती भुवनेश्वरीक ध्यान एवं श्रीकृष्ण द्वारा हुनक स्तुतिक वर्णन आयल अछि। भुवनेश्वरीक ध्यानक वर्णनमे कवि देवीभागवतसँ भावग्रहण कयने छथि। देवीभागवतमे भुवनेश्वरीक ध्यान एहि स्वरूपक अछि–

नानास्तरणसंछन्नं इन्द्रचाप समन्वितं।
पर्यङ्कप्रवरे यस्मिन्नुपविष्टा वरांगना।।
रक्तमाल्यांबरधरा रक्तगन्धानुलेपना।
सुरक्तनयना कांता विद्युत्कोटिसमप्रभा।।
सुचारुवदना रक्तदन्तच्छद विराजिता।
रमाकोट्यधिका कांत्या सूर्यबिंबनिभाखिला।।
वरपाशांकुशाभीष्टधरा श्रीभुवनेश्वरी।
अदृष्टपूर्वा दृष्टा सा सुन्दरी स्मितभूषणा।।
ह्रींकारजपनिष्ठैस्तु पक्षिवृन्दैर्निषेविता।
अरुणा करुणामूर्त्तिः कुमारी नवयौवना।।
राकामणिगणाकीर्णा भूषणैरुपशोभिता।

कनकांगदकेयूर किरीटो अभिशोभिता।।
कनकच्छ्रीचक्र ताटंक विटंक वदनांबुजा।
हल्लेखा भुवनेशोति नामजपपरायणैः।।

(देवीभागवत पुराण, प्रथम खण्ड, संस्कृति संस्थान, बरेली, 1984, अध्याय 14/31-45)

पराशक्तिक एहि पौराणिक ध्यानमे साहित्यिक रसवादक प्रभाव दृष्टिगोचर होइछ। वस्तुतः भक्ति ओ शृंगारक ई नीर-क्षीर संयोग परवर्त्ती शाक्त साहित्यक विशिष्ट लक्षणक रूपमे विद्यमान अछि। रसिक कविहृदयसँ निस्सृत भगवतीक ध्यान ओ स्तोत्रहुमे 'रक्तालिप्त पयोधरा', 'श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्तनमण्डला। रक्तमध्या रक्तपादा नीलजङ्घोरुरुन्मदा।। सुचित्रवदना चित्रमाल्याम्बर विभूषणा। चित्रानुलेपना कान्ति रूपसौभाग्यशालिनी।।' 'वसुधैव विशाला सा सुमेरुयुगलस्तनी। दीर्घौ लम्बावतिस्थूलो तावतीव मनोहरौ। कर्कशावतिकान्तौ तौ सर्वानन्द पयोनिधी।। भक्तान् सम्पाययेद्देवी सर्वकामदुधौ स्तनौ।' 'शाकम्भरी नीलवर्णा नीलोत्पलविलोचना। गम्भीरनाभिस्त्रिवली विभूषित तनूदरी।। सुकर्कश समोत्तुंग वृत्तपीनघनस्तनी। मुष्टिं शिलीमुखा पूर्ण कमलं कमलालया।। 'विशाललोचना नारी वृत्तपीनपयोधरा;' 'तुंगकुचा;' 'स्त्रीरत्नमतिचार्वाङ्गी द्योतयन्ती दिशत्विषा *(दुर्गासप्तशती, गीता प्रेस, गोरखपुरसँ संकलित)*; सुवर्णकलशाकारा पीनोन्नतपयोधराम् (तन्त्रकौमुदी, पृ० 26) आदिक प्रयोग द्वारा नारी अंग-सौन्दर्यक अभिव्यंजनाक पुष्कलता दृष्टिगोचर होइछ। एही प्रकारक सौन्दर्य-दृष्टिक कारणेँ ललिताक वदनमे अरविन्द एवं अधरमे बिम्बाफलक रूपकत्व तथा नयनक विशालता ओ आकर्णदीर्घता परिकल्पित अछि। हुनक अंग-प्रत्यंगकेँ विविध आभूषणसँ युक्त कहल गेल अछि *(स्तोत्र रत्नावली, गीताप्रेस)*। शंकराचार्यक 'मीनाक्षीपंचरत्न' एवं 'आनन्दलहरी' एही परम्पराक अनुगामी अछि। सरस्वतीक ध्यानमे 'मन्दस्मितैर्निन्दित शारदेन्दुं वन्देऽरविन्दासन सुन्दरि त्वाम्'क प्रयोग, देव्याः आरात्रिकम्मे नारीसौन्दर्यक उत्कृष्ट स्वरूपक विवृत्ति सेहो रसराज शृंगार निमज्जित शाक्त भक्त कविहृदयक सहज स्फुरित भावविन्यस्त सौन्दर्यचेतनाक अंश थिक। 'यदि हरिस्मरणे सरसं मनो यदि विलासकलासु कुतुहलम्'क संतुष्टि द्वारा भक्ति ओ शृंगारक आबद्ध-निबद्ध स्वरूपक अभिव्यंजनाक जयदेवकृत गीत-गोविन्दक सरस रसधारा एहि प्रकारक ध्यान ओ स्तोत्र सभमे सहजहि अभिव्यक्त अछि।

लालेलाल विशाल नयनयुत अरुणाकृति करुणा घन लम्ब।
रक्त दुकूल फूलमाला चन्दन चर्चित त्रिभुवन अवलम्ब।।
सब शृंगारेँ शोभित सस्मित मुख कमला विमलाकृति वेश।
प्रस्फुट पीन पयोधरसँ जितने पंकज अभिमान विशेष।।

(राधाविरह, पृ० 75)

ध्यानक परवर्त्ती अंशमे भुवनेश्वरीकेँ नारीस्वरूपधारी सुरवृन्दक वन्दनीया कहल गेलनि अछि तथा सविशेष हिनक पाद-पंकज-नख-दर्पण बिम्बक वर्णन कयल गेल अछि–

सहस नयन भुज-मुखयुत तेँ देविक लग वनिता बनि सुरवृन्द।
ऋषि मुनि सहित नाम जपि-जपि से पिबइछ भक्तिक अमृत अमन्द।।
जनिक पाद-पंकज-नख-दर्पणमे विम्बित ब्रह्माण्ड अखण्ड।
स्मृति कऽ भुवनेश्वरी जानि आ' अपना एक तनिक बुझि खण्ड।।

(तत्रैव, पृ० 76)

आदिशक्तिक माहात्म्यसूचक ई काविभावना देवीभागवतमे किञ्चित् परिवर्त्तनक संग उल्लिखित भेटैत अछि। एहिमे कहल गेल अछि जे ब्रह्मा, विष्णु आ महेश जखन आदिशक्ति भुवनेश्वरीक निकट हुनक स्तुति करबाक इच्छासँ पहुँचलाह तँ आदिशक्ति हुनकालोकनिकेँ रूपवती युवतीक स्वरूप प्रदान कऽ देलथिन। एही युवती स्वरूपसँ भगवान विष्णु भुवनेश्वरीक स्तुति सेहो कयने छलाह। ब्रह्मा-नारद संवादक रूपमे ग्रथित एहि कथामे आदिशक्तिक चरणकमलक नख-दर्पणमे सम्पूर्ण ब्रह्माण्डक अभिदर्शन होयबाक तथ्य एहि रूपेँ उल्लिखित भेटैछ–

शृणु नारद प्रवक्ष्यामि यद्दृष्टं तत्र चाद्भुतम्।
नखदर्पणमध्ये वै देव्याश्चरण पंकजे।।
ब्रह्माण्डमखिलं सर्वं तत्र स्थावरजंगमम्।
अहं विष्णुश्च रुद्रश्च वायुरग्निर्यमो रविः।।

(देवीभागवत पुराण, प्रथम खण्ड, 15 / 14 - 15)

ध्यानक पश्चात् श्रीकृष्ण द्वारा भगवती भुवनेश्वरीक वन्दनाक वर्णन भेल अछि। एहिमे कविचूड़ामणि मार्कण्डेय पुराणक देवी माहात्म्यमे ग्रथित देवीक प्रथम चरित, मध्यम चरित ओ उत्तरचरितक कथावस्तुकेँ अत्यन्त संक्षेपमे कहलनि अछि। एही क्रममे महामाया द्वारा मधुकैटभ, महिषासुर, रक्तबीज, चण्ड-मुण्ड, धूम्रलोचन तथा शुम्भ-निशुम्भादि दानवक विनाशक कथा आयल अछि। मार्कण्डेय पुराणमे वर्णित देवी पार्वतीक ई जनप्रिय आख्यान मिथिलाक शाक्त मानसकेँ अदौसँ अभिभूत कयने रहल अछि आ देवीक विभिन्न स्वरूपक अभ्यर्चनासँ सम्बद्ध पदमे एहि पौराणिक आख्यान सभक स्पर्श होइत रहल अछि। मधुपजी सेहो भुवनेश्वरीक वन्दनामे एकरा अस्पृष्ट नहि छोड़लनि अछि।

परवर्त्ती वन्दनामे शक्तिस्वरूपाक महत्ताकेँ विज्ञापित कयल गेलनि अछि। एहिमे ब्रह्मा, विष्णु ओ महेशकेँ शक्तिक अभावमे निश्चेष्ट ओ उदासीन कहल गेलनि अछि। संगहि सूर्यक प्रभा, चन्द्रक कान्ति, अनलक दाहकता, पवनक वेग, धरतीक धारणाशक्ति,

जलक शीतलता, गगनक विस्तार ओ समस्त चराचरक क्रियाशीलतामे पराशक्तिक प्रभावकेँ विज्ञापित करैत कवि नारीमात्रकेँ पराशक्तिक अंशक रूपमे अभ्यर्थना कयलनि अछि।

एहिठाम भाव ओ शिल्पक दृष्टिये कविचूड़ामणि मधुपजीकेँ आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन'जीक *गंगातरंगिणी* प्रभावित कयने होयतनि, से ऊह्य थिक। सुमनजी गंगाक महत्ताकेँ विज्ञापित करैत कहने छथि–

शिव की सकितथि विष पचाय यदि लितथि न माथे।
जैतथि सिंधु सुखाय वाड़वानलहिक हाथे।।
की न ठिठुरि हिमवान मरणशय्यागत रहितथि।
यदि न अमरधुनि ! अहँक अमृतरस भाग्यैँ पबितथि।।
शत शत ज्वालामुखी मुख जरि जैतथि भू दग्ध भय।
जँ न जुड़बितन्हि सुधामयि ! अहँक सुधाधिक विमल पय।।

(अर्चना - श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन', मैथिली मन्दिर, राजकुमारगंज, दरभंगा)

ठीक एही शैलीमे मधुपजी भुवनेश्वरीक महत्ता विज्ञापित करैत कहने छथि–

उमत असम्मत चिता भस्मसँ लिप्त जनिक सब आङ।
गर लऽ गरल भूत गन सेव्य नगन फकइत टा भाङ।।
राखि ग्रीव भुज गहना भुजग जटा मे नचइत गाङ।
शिव न कहबितथि. जौं तुअ अंश उमाक न छुबितथि माङ।।

(राधा विरह, पृ० 76)

तथापि भुवनेश्वरीक वन्दनामे कवि जाहि कल्पना-विलासक कारणेँ प्रख्यात भेल छथि से थिक देवीक विविध वर्ण, जाति, पेशामयी स्वरूपक परिकल्पनाक चमत्कार। भुवनेश्वरीकेँ राधा विरहमे एके संग ब्राह्मणी, क्षत्रिया, वैश्या ओ शूद्री वर्णक; खवासिनी, चरवाहिनी, गिरहतनी, महाजनी एवं कुटनी-पिसनी पेशावालीक; कुम्हैनि, गोढ़नी, गोआरि, बरैनि, कानूनि, नौआइनि, लोहैनि, मालिनि, मोदिआनि, सोनारिनि, छोलकढ़नी, रजकी, तेलिनि, कलालिनि, रङरेजिनि, डोमिनि, चमैनि, मेहतरनी, यवनी ओ जोलहिनि व्यावसायिक जातिक तथा डाइन, अघोरिनि, चोरनी, अछूत, अन्त्यजा, तन्त्रमयी, मायाविनी एवं मोहिनी स्वरूपमे साङ्रूपकत्व द्वारा अभिव्यक्त कयल गेलनि अछि। देवीक एहि विभिन्न स्वरूपक वर्णनसँ हिनक सर्वव्यापकता, दिव्य महिमा एवं अपरिमित गुणविस्तार आख्यात भेल अछि, पराशक्तिक एकत्वमे अनेकत्व अभिव्यंजित भेल अछि तथा एहि माध्यमे जातीय समीकरण एवं मानवतावादक प्रतिष्ठा कयल गेल अछि।

कविचूड़ामणिक परिकल्पनाक ई चमत्कार मैथिली शाक्तसाहित्यमे नवोन्मेषक

सूचक अछि। यद्यपि एहि प्रकारक कल्पनाविलास संस्कृत स्तुति परम्परामे म० म० गोकुलनाथक *'शिवस्तुति'*, *'शिवशतक'* मे सेहो भेटैत अछि। ओहिमे कवि एक एक श्लोकमे शिवक विभिन्न रूपक चित्रण कुम्हार, कृपण, कृषक, कवि, अमृत, जोलहा, थानेदार, पहरेदार, अनाथ, दरिद्र, भिक्षु, बूढ़ बाबा, वानर, बेटीक बाप, भूतनाथ, सूत्रधार, स्वामी आदिक साङ्गरूपक द्वारा कयने छथि। मैथिली साहित्यमे एहि शिवस्तुतिक अनुकृतिपरक रचना न्यायाचार्य पं० आनन्दझाक **'महेशशतक'** मे भेल अछि। महेशशतकमे शिवकेँ अनलस पहरूदार, बूढ़ बिलाड़, सूत्रधार, नटराज, गमार चमार, चतुर कुम्हार, धोबी, भिक्षुक, दुधगरि गाय, फणधर काल कराल, भवपथ तस्कर, हरवाह, अकिञ्चन दीन, अमृत कलश, ज्ञानसमुद्र, बताह, सरोवर आदिक साङ्गरूपकत्व द्वारा वन्दना कयल गेलनि अछि। द्रष्टव्य अछि शिवक धोबी स्वरूप–

प्रभुवर छी अहँ निश्चित धोबी।
अहँक भक्त हम उचिते बाजी बनी ने अतिशय रोबी।।
वेद वेद निर्वेद रूप अहँ सानी सज्जी माटी।
भक्तिक पाट पटकि कत हृत्पट अतट कपट मल छाँटी।।
मिथ्यामतिज वासना जे तहँ दाग विषम रह लागल।
धर्म्म ज्ञान वैराग्य ईशता कलपहि भाग अभागल।।
शशिधर! निज शशधर कर उज्ज्वल बनबी कलुषित पटकेँ।
आनन्द कह कहु कोना ऋही नहि पटुधोबी बटु अहँ कें ।।

(रसनिर्झरणी – आनन्दझा, दीक्षित बुक डिपो, काशी. संवत 2006)

एहि आलोकमे राधाविरहमे भगवती भुवनेश्वरीक धोबिनक स्वरूप सेहो द्रष्टव्य अछि–

आइ धोआइ बिना देने जगतीमे धोबि न एक।
साफ करै पट साफ साफ कहि दितहुँ दबाब अनेक।।
स्मृति करितहँ अकैतव तव केहनो आत्मा हो मैल।
तौँ रजकी रज की किछु छोड़ह बनबह निर्मल चैल।।

(राधाविरह, पृ० 87)

एहि ठाम धोबिनक सांगरूपकत्वमे कविचूड़ामणि सज्जी माटि, पाट, दाग, कलप आदिकेँ नहि समेटि सकलाह अछि। तथापि कतोक स्वरूपक चित्रणमे कविचूड़ामणिक सांगरूपकत्व अत्यन्त उत्कृष्टहु परिवेश लऽ रामुपस्थित भेल अछि। यथा – द्रष्टव्य अछि देवीक लोहारिनिक स्वरूपमे वर्णित हर, हरीश, पालो, भाथी, कुलहड़ि आदिक श्लेष समन्वित वर्णन–

हर हरीश दिकपालो सविधि सदा नव नव बनबैत।
पति निचिन्त निज लूरिक सम्पत्ति सँ गिरहस्त डेबैत।।
लगा पसार अनन्त जीव भाथी सदिखन चलबैत।
कुलहरि कते बनाए लोहारिन केर छह स्वांग धरैत।।

(तत्रैव, पृ० 88)

चारिम सर्गमे श्रीकृष्ण द्वारा भगवती भुवनेश्वरीक ध्यान-स्तवनमे शाक्त तत्त्व अत्यन्त परिनिष्ठित ओ सम्पुष्ट अछि। पाँचम सर्गमे भुवनेश्वरीक द्वारा श्रीकृष्ण प्रबोधन करैत कामक मद-मर्दनक हेतु अभिमन्त्रित करबाक कथा वर्णित अछि आ परवर्त्ती बारहो सर्गमे राधाकृष्णक लीला विस्तारक अनुकीर्त्तन भुवनेश्वरीक आदेशक अनुरूपहिँ देखाओल गेल अछि। स्वभावतः कृष्ण ओ राधाक दिव्यादिव्य प्रेमलीला सम्पूर्ण महाकाव्यमे पराशक्तिक प्रभावान्वितिसँ आबद्ध-निबद्ध देखि पड़ैत अछि ।

एतावता कहल जा सकैछ जे राधाविरह महाकाव्यमे शाक्त तत्त्व उत्कृष्टतया अभिव्यंजित भेल अछि। यद्यपि शाक्त तत्त्वक अभिव्यंजनामे तंत्र ओ पुराणक अविकल प्रभाव स्पष्ट अछि, पराशक्तिक स्वरूप विवेचनमे नवीनताक उद्भावना नहिओ जकाँ भेल अछि तथापि राधाकृष्णक विलासलीलामे पराशक्तिक सन्निवेशसँ वैष्णव ओ शाक्त मतक समन्वयवादी पंचदेवोपासक मैथिल उपासना पद्धतिक रेखांकन कवि नव्यता ओ भव्यताक संग कयने छथि।

रामकथागायक : हरेकृष्णलालदास

कविकुल कमल दिवाकर महाकवि विद्यापति ओ हुनक काव्यपरम्परासँ मैथिली साहित्यक मध्यकाल आच्छादित देखि पड़ैत अछि। हिनका द्वारा प्रवर्त्तित काव्यपरम्परा आसाम, बंगाल, उड़ीसा ओ नेपाल धरिक काव्य साहित्यकेँ सुवासित कयने रहल आ हिनक अनुसरणमे पुष्कल कृष्णकाव्य, शैव ओ शाक्त साहित्यक त्रिवेणी प्रवाहित होइत रहल। रामकाव्य अवश्य मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे प्रमुखता नहि पाबि सकल।

मुदा उनैसम शताब्दीक चतुर्थ चरणमे युग प्रवर्त्तक चन्दाझाक आविर्भाव जन्य रामकथा साहित्य एक गोट प्रबल धाराक रूपमे प्रवहमान देखि पड़ैत अछि जकरा लालदासक *रमेश्वरचरित मिथिला रामायण* एवं परवर्त्ती रामकथाधारा क्रमशः परिपुष्ट करैत गेल। रामकाव्यक ई शास्त्रीय धारा सीताराम झा, विश्वनाथ झा 'विषपायी', खड्ग, वल्लभ दास 'स्वजन', छेदी झा 'द्विजवर', वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु', रामलोचन शरण आदिक माध्यमे संवर्द्धित भऽ मैथिली काव्यमे अपन विशिष्ट स्थान बनओलक।

तथापि मिथिलाक लोकजगतमे शास्त्रीय रामकाव्यक प्रणयनहुँसँ पूर्वहिसँ सोहर, बधैया, सम्मर, चैतावर, फागु तथा विविध व्यवहार ओ संस्कार गीतक रूपमे रामकाव्य वर्त्तमान छल जाहिमे राम ओ सीताक कथाकेँ उपजीव्यक रूपमे ग्रहण कयल गेल अछि तथा हिनकालोकनिक समाजीकरण कयल गेल अछि। उनैसम शताब्दीक पूर्वार्द्धसँ जखन एहि लोक रामकाव्य परम्पराकेँ सन्तशिरोमणि लक्ष्मीनाथ गोसाञि; साहेबरामदास, अपूछदास, रामसनेही दास सन सन साधुलोकनिक भाषा ओ भंगिमा भेटलैक, तखन ई काव्यपरम्परा अपन साम्प्रदायिक स्वरूपमे आबद्ध होमऽ लागल जकर परवर्त्ती स्वरूप रामाश्रयी वैष्णव सम्प्रदायक मधुराभक्ति काव्यरूपमे समक्ष आयल आ बीसम शताब्दीक पूर्वार्द्ध धरि करीब सय वर्ष धरि अनेकानेक भक्त कविलोकनि एहि साम्प्रदायिक रामभक्ति काव्यक प्रणयनमे दत्तचित्त रहलाह। साम्प्रदायिक ओ ग्राम्य प्रकृतिक एहि छिटफुट रामकाव्यक प्रति इतिहासकार ओ अन्वेषकलोकनिक उपेक्षा भावक कारणेँ मैथिलीक ई प्रभूत काव्य-सम्पदा विवेचन-विश्लेषणसँ अद्यावधि फराके राखल गेल अछि तथापि अछि धरि मैथिली रामकाव्य परम्पराक एक गोट सम्पुष्ट धार जे आधुनिको कालमे प्रवहमान अछि। मोदलता, स्नेहलता, रसनिधि, नेमलता, कनकलता,

नारायण भक्त 'श्रीमाली', रूपलता आदि भक्त कविलोकनिक द्वारा रचित रामकाव्यक ई विशिष्ट निधि पर्याप्त पर्यवेक्षणक अपेक्षा रखैछ।

मैथिली रामकाव्यक एही साम्प्रदायिक भक्ति काव्यक रचयितागेसँ एक गोट विशिष्ट कवि छलाह हरेकृष्णलालदास जे अपन तीन गोट पोथी क्रमशः *हरेकृष्ण विनोद, श्रीसीताराम जन्म संकीर्त्तन तथा सीता स्वयंवर संकीर्त्तनक* रचनाक द्वारा मैथिलीक साम्प्रदायिक रामभक्तिकाव्यकेँ सम्पुष्ट कयने छलाह।

एहि महानुभावक जन्म ई० सन् 1891 मे भेल छलनि। पिता स्व० गूदरलालदास मुख्तार छलथिन। हिनकालोकनिक मूल निवास छनि हाटी, सरिसबपाही, मधुबनी, मुदा लहेरियासराय, दरभंगामे कबिलपुर चट्टी पर सेहो स्थायी आवास छनि जे गूदर भवनक नामे प्रसिद्ध अछि। हरेकृष्णलालदास लहेरियासरायमे प्रथम श्रेणीसँ मैट्रिक उत्तीर्ण भेलाक उपरान्त किछु दिन धरि एही ठामक मिड्ल स्कूलमे शिक्षकक काज कयने छलाह। तत्पर मुख्तारीक लाइसेन्स प्राप्त कऽ लहेरियासराय कचहरिएमे प्रैक्टिस करऽ लगलाह। ई कर्ण कायस्थ महासभाक सचिव पदकेँ सुशोभित कयने छलाह। अपन परिश्रमक माध्यमे पिताजीक अर्जित सम्पत्तिकेँ गामो पर आ लहेरियासरायमे बढ़ौलनि तथा गाम पर राम दरबारक विग्रह सम्पन्न मन्दिरोक निर्माण करौलनि। ई प्रारम्भहिसँ वैष्णव प्रकृतिक छलाह आ परवर्त्ती कालमे रामानन्दी मतमे दीक्षित भऽ गेलाह। क्रमशः हिनका द्वारा रामाश्रयी शाखाक मधुरोपासना सम्बन्धी पदावली रचित ओ प्रकाशित भऽ भजन-संकीर्त्तन मंडलीक कंठहार बनैत गेल। मैथिलीक कतोक लोकगीत सभक संकलनमे तँ हिनक छिटफुट पद दृष्टिगोचर होइछ, मुदा हिनका द्वारा रचित तीन-तीन गोट पोथी विरलता ओ अप्राप्तिक कारणेँ जेना लोकजगतसँ अपवारित भऽ गेल। सम्प्रति हिनक कनिष्ठ सन्तान ओ तृतीय सुपुत्र श्रीपरमानन्दलालदासजीक सौजन्येँ तीनू पुस्तकाकार रचनाक अवलोकनक सौभाग्य हमरा प्राप्त भेल अछि।

हरेकृष्णलालदास छब्बीस अगस्त 1956 ई. मे गोलोकवासी भऽ गेलाह आ अपना पाछाँ भरल-पूरल सन्तति परम्परा छोड़ि गेल छथि। हिनक आठ गोट सन्तानमे पाँच गोटे जीवित छथिन जाहिमे तीन गोट भाइ क्रमशः श्रीतारानन्दलालदास, दयानन्दकर्ण ओ परमानन्दलालदास छथिन। एहिमे प्रथम गामेक प्राथमिक विद्यालयमे शिक्षक छथिन आ अन्य दुइ अधिवक्ताक रूपमे लहेरियेसरायमे पेशारत छथिन। हिनकालोकनिक दुइगोट बहिन क्रमशः शान्ति देवी ओ किशोरी देवीमे द्वितीया आधुनिक मैथिली साहित्यक महान नायक बाबू भोलालाल दासक पुतोहु तथा प्रसिद्ध अंग्रेजी शिक्षक ओ मैथिली साहित्यकार जगदीशप्रसादकर्णक पत्नी छथिन।

हरेकृष्णलालदासक प्रथम कृति थिकनि **'हरे कृष्ण विनोद'**। एहि ग्रन्थक रचनाक सम्बन्धमे कवि कहने छथि—*'तेरह तेताल दसम भादव कँह ग्रन्थ समापन कैल'*। अर्थात्

ई ग्रन्थ 1343 सालमे पूर्ण भऽ गेल छल। एहिमे गणेश स्तुति, चित्रगुप्त स्तुति तथा राम, कृष्ण, बजरङ्गबली तथा शंकर भगवानसँ सम्बन्धित अड़सठि गोट पद अनुगुम्फित अछि। एहि पद सभक भाषा किछुमे सधुक्करी प्रकृतिक आ किछुमे ठेठ मैथिली अछि। कीर्त्तन-भजनसँ सम्बद्ध एहि पद सभमे विभिन्न राग-तालक सेहो निर्देश कऽ देल गेल अछि। गीत सभमे पारम्परिक मैथिली लोकधुन यथा सोहर, चैतावर, महेशवाणी आदिक प्रयोग भेल अछि। द्रष्टव्य अछि परिछनिक ई गीत-

परिछन चललि सखी सब मङ्गल गाबय हे।
दशरथ कयल विचार लगन नियरायल हे।।
वसन भूषण अति शोभय बहुत मन लोभय हे।
चकित रहय नर नारि जनकपुर मोहय हे।।
जनक लली गौरी पूजथि हिय मन हर्षय हे।
सखि सब परम हुलास सजन मन भावय हे।।
सारि सरहज प्रभु लावोल मंडप नैसाबय हे।
'हरेकृष्ण' परम हुलास की जोड़ी मिलाबय हे।।

हरेकृष्णलालदासक दोसर कृतिक अभिधान छनि **'सीता स्वयंवर संकीर्त्तन'**। एकर प्रकाशन 1936 ई० मे भेल छल। एकर भूमिका मैथिली वाचस्पति धनुषधारीदास द्वारा दू शब्द शोर्षसँ लिखल गेल अछि जाहिमे कहल गेल अछि जे - *"**सीता स्वयंवर संकीर्त्तन**' यद्यपि उच्चकोटिक ग्रन्थ नहि अछि, किन्तु मैथिली साहित्यमे जे संकीर्त्तनक सर्वथा अभाव छल, तकर पूर्ति बहुत अंशमे ई ग्रंथ अवश्य करत। भाषाक प्रचार गीत-काव्य द्वारा अधिक सुगमतापूर्वक सकल साधारणमे शीघ्र भै जाइत छैक। यदि विद्यापति आदि किछु प्राचीन कविक गीतकाव्य नहि रहैत, तौं मैथिली आइ धरि रसातल चल गेल रहैत। नाटक एवं गीतक आधिक्य जाहि भाषामे छैक, आइ वैह भाषा पूर्णोन्नतिक शिखरासीन अछि। जाहि भाषाकेँ स्त्री समाज एवं ग्रामीण जनता पूर्ण रूपेँ अपनावत, वैह भाषा जीवित रहि, पूर्ण विकसित भै सकैत अछि। किन्तु स्त्री समाज एवं ग्रामीण जनता धरि भाषाक सन्देश पहुँचैबाक गीत काव्यक रचनाक अतिरिक्त आन कोनो तेहन दोसर सुन्दर उपाय नहि अछि। ई कार्य मैथिली संकीर्तनक प्रचार सौं सेहो अधिकांशमे सुलभ भै सकैत अछि।"*

स्वयं हरेकृष्णलालदास एहि पोथीक आत्मनिवेदन शीर्षक लेखकीयमे कहने छथि - *"संयोगवश श्रीयुत् भोलालालदास जी, बी.ए., एल.एल.बी., मंत्री, मैथिली साहित्य परिषद्, लहेरियासराय उपर्युक्त 'हरेकृष्ण विनोद' के देखि हमरा कहलनि जे 'मैथिलीमे हरिकीर्त्तनक प्रायः कोनो पुस्तक नहि अछि। अतएव अहाँ मैथिली हरि कीर्त्तन ग्रन्थक रचना करितहुँ तौं मैथिली साहित्यक एक गोट महान अभावक पूर्ति भै जाइत।"*

मैथिली साहित्यक तत्कालीन पुरोधालोकनि धनुषधारी दास ओ भोलालालदासक उक्तिसँ मैथिलीक विकासक हेतु हुनकालोकनिक ओहि समयक चिन्तनक आभास भेटैत अछि। अवश्ये ओहू समयमे भजन-संकीर्त्तनमे हिन्दीक बहुलतासँ प्रयोग आ लोकजीवनमे मैथिलीक प्रवेशमे असौकर्य हिनकालोकनिकेँ अखरैत छलनि जकर फलस्वरूप ओलोकनि लोकसंस्कृतिक एहि अंगकेँ सम्पुष्ट करबाक हेतु मैथिली लेखनकेँ प्रोत्साहित कयलनि आ शास्त्रीय साहित्यक समानान्तर भक्ति साहित्यक लोकानुरंजक धाराकेँ प्रवहमान रखबाक उपदेशकेँ सुप्रचारित कयलनि। हिनकालोकनिसँ प्रेरित हरेकृष्णलालदास **'सीता स्वयंवर संकीर्त्तन'**मे छियालीस गोट पदकेँ प्रकाशित करौलनि जाहिमे सीता स्वयंवरक विभिन्न अंग-उपांग यथा विश्वामित्रक सत्कार, जनक नगरक पुष्पवाटिकाक वर्णन, श्रीजानकीक गिरिजा पूजनयात्रा, गिरिजापूजन, जयमाला, परशुराम सम्वाद, विवाह पत्र, बरियातीक शोभा, परिछनि, रामविवाह, कोहबर, सखीलोकनिक विनोद, चतुर्थी, सउजनक उचिती आदिक क्रमबद्ध पदावलीक संगहि पराती, फागु, चैतावर, मलार, बारहमासा, पूर्वी, लगनी, सोहर, वटगवनी, तिरहुत, विहाग आदिक भासपरक गीत आ बजरंग विनय, महेशवाणी-नचारी, कीर्त्तन, आरती आदिक पद अनुगुम्फित अछि। द्रष्टव्य अछि ई अत्यन्त लोकप्रसिद्ध पद-

रामचन्द्र प्रिय पाहुन हे सखि ! पंखा डोलाउ।
फेर न एहन दिन पायब हे, प्रभु हियमे बसाउ।।
चरण पखारि विमल जल हे, सखि ! आसन बैसाउ।
मणि मुक्तामय कोबर हे, लै ताहि घर जाउ।।
केसरि-रोचन-चन्दन हे, प्रभु भाल चढ़ाउ।
विकसित पंकज-लोचन हे, सखि ! काजर लगाउ।।
बहु व्यञ्जन खिर षट्रस हे, तनि भोजन कराउ।
पान-सुपारी सुवासित हे, भरि पात्र मँगाउ।।
हास्य-प्रेम-रस पूरित हे, रचि विनय सुनाउ।
'हरेकृष्ण' शुभ कोबर हे, सब मोद मनाउ।।

हरेकृष्णलालदास रचित तेसर संकीर्त्तन विषयक पोथी **'श्रीसीताराम जन्म संकीर्त्तन'**क प्रकाशन 1938 ई० मे भेल। एहिमे चौंतीस गोट पद अनुगुम्फित अछि। जानकी नवमी मनाय मिथिला-मैथिलीक प्रति लोकजागरण करयबाक निहित उद्देश्यक पूर्त्यर्थ एकर प्रकाशन कराओल गेल, से ग्रन्थकारक भूमिकासँ स्पष्ट होइत अछि। एहिमे रामजन्म सोहर, जानकीक जन्मक बधैया, सीतारामक झाँकी, बजरंग कीर्त्तन, कोजागरा ओ दीपावलीक लक्ष्मी, विनय, आरती आदिसँ सम्बद्ध पदक अतिरिक्त रामकथाक किछु

विशिष्ट प्रसंग यथा जानकी जन्म कारण, रावणक ब्रह्मासँ स्तुति, ब्रह्मा द्वारा रावणक अभ्यर्थना, ब्रह्मा द्वारा रावणकेँ वरदान, रावणक क्रूरता आदिक सेहो सविशेष निवेश भेल अछि। कवि दुइ गोट पदमे मिथिलाक गौरवक बखानो कयने छथि, मुदा एक गोट पदमे मिथिलाक अधोगतिजन्य चिन्तासँ सेहो ग्रस्त देखि पड़ैत छथि, यथा–

जखन जखन देशक अवनति भेल शक्ति लेल अवतार।
छल मिथिलाक मनोहर गौरव जगतजननि ! विस्तार।।
किन्तु हाय, ओ दिव्य महामणि भूषित मिथिला आज।
नहि अपनासँ परिचित किछुओ करइछ प्रत्युत लाज।।
और कथा की माँक जन्म दिन विस्मृत छल सब ठाम।
परम पवित्र दिवस गौरव नहि छलइ कतहुँ एहि ठाम।।
भेटत की ओ गत गौरव पुनि दीन जन्तु के अम्ब।
अहँक कृपाक कटाक्ष हैत की 'हरेकृष्ण' जगदम्ब।।

एतावता कहल जा सकैछ जे हरेकृष्णलालदास मैथिली साहित्यकेँ विविध रूपेँ विकसित करबाक बलवती प्रेरणासँ सक्रिय सखी सम्प्रदायक भक्ति काव्यधाराक एक गोट उल्लेखनीय कवि छथि जनिक समेकित मूल्यांकन अपेक्षित अछि।

●

डा० शैलेन्द्रमोहनझाक बाल साहित्य

बाल साहित्यसँ ओहि समस्त साहित्यक बोध होइत अछि जे बालमनोविज्ञानक अनुरूप रचित आ बालकक अवचेतन मनकेँ सहज रूपेँ ग्राह्य तथा ओहि पर अपन अमिट छाप छोड़बाक सामर्थ्यसँ युक्त होइत अछि। प्राणीक विकासक संगहि लोकजगतमे साहित्य चेतनाक क्रमिक विकास भेल आ लोकजगतमे व्याप्त साहित्ये कालक्रममे परिनिष्ठित साहित्यहु गध्य स्थान पबैत गेल। बाल मनक मनोरंजनक संगहि लोकजगतक ज्ञान-संवर्द्धनक हेतु साहित्य रचनाक अविच्छिन्न परम्परा रहल अछि। संस्कृत साहित्यमे पंचतंत्र, हितोपदेश आदि एही परम्पराक रचना थिक जाहिमे मानवेतर प्राणी सभकेँ सेहो पात्र रूपमे राखि लोकरंजक कथाक माध्यमे लोकशिक्षणक उच्चतम स्तरक परिचय देल गेल अछि।

मैथिली बालसाहित्यक विपुल अंश लोकजगतमे छिड़िआयल अछि। मैथिली साहित्यक एहि विशिष्ट सम्पदाकेँ मौलिक रूपेँ लेखनीबद्ध करबाक दिशामे सुनियोजित प्रयासक अभाव रहल अछि। स्वभावतः श्रुतपरम्परासँ लोककंठमे संरक्षित ई सम्पदा क्रमशः विलोपनक अवस्थामे अछि। तथापि एहि सम्पदाक संरक्षणक दिशामे विद्वानलोकनि समय-समय पर प्रयास करैत अयलाह अछि। विद्वानलोकनिक ओहि परम्पराक प्रारंभिक ओ विशिष्ट कड़ीमे छलाह डा० शैलेन्द्रमोहनझा।

प्रतिभा, व्युत्पत्ति ओ अभ्यास ई तीनू काव्यक हेतु कहल गेलैक अछि। डा० झाक मौलिक ओ सहजा प्रतिभाक अवदान थिकनि हिनका द्वारा रचित **प्रतिमा** ओ **मधुश्रावणी** उपन्यास, **पथहेरथिराधा** ललित निबन्ध संग्रह तथा विकीर्ण कथा ओ कविता सभ। हिनक उत्पाद्या प्रतिभा ओ व्युत्पत्ति तथा अभ्याससँ परिचय-निचय, मैथिली साहित्यः प्रमुख कवि, विद्यापति, ज्योतिरीश्वर आदि विविध आलोचना ग्रन्थक प्रणयन भेल; विद्यापति गोष्ठी, असमिया साहित्यक इतिहास, जयदेव, शरत्चन्द्रः व्यक्ति एवं कलाकार सदृश ग्रन्थक अनुवाद भेल। गद्यश्री, निकष, संकलन, अगिलही एवं अन्य कथा, चतुरचतुर्भुज एवं गीत सप्तदशी, सिद्धिनरसिंहमल्ल आदिक संकलन-सम्पादन द्वारा डा० झा मैथिली साहित्यक आयामकेँ विस्तार देने छलाह तथा ब्रजबोली साहित्यक उत्खनन कऽ प्राचीन मैथिली साहित्यक समृद्धि ओ प्रभाव विस्तारकेँ प्रतिष्ठापित कयने छलाह। मातृभाषा मैथिलीक साहित्य भंडारक अमूल्य रत्न सभकेँ समेटि एकरा समृद्ध

करबाक जाहि अदम्य उत्साहसँ डा० झा ओतप्रोत छलाह, ओकरे परिणाम थिक, हिनका द्वारा संकलित **'कथाकहानी'** शीर्षक बालकथा संग्रह, जे मैथिली बालसाहित्यमे हिनक विशिष्ट अवदानक रूपमे प्रख्यात अछि। डा० भीमनाथझा हिनक एक गोट अन्य बालोपयोगी संग्रह **कथा पुराण**क चर्चा कयलनि अछि (परिचायिका), मुदा से उपलब्ध नहि भऽ सकल।

कथा कहानीमे चौदह गोट बालकथा संगृहीत अछि। प्रत्येक बालकथा लोकजीवनक दर्पण थिक। एहि सभमे लोकजगतक सुख-दुःख, आशा-निराशा, भावानुभाव, आचार-व्यवहार, हर्ष-विषादक सहज ओ अकृत्रिम अभिव्यंजना अछि।

पहिल बालकथा थिक *'पर्वत मोहार पर खोंता रे खोंता'*। एहिमे एक गोट चुनमुन्नीक कथा अछि जे एक गोट ब्राह्मणक खेतमे चीन खयबाक कारणेँ पकड़ल जाइत अछि। ब्राह्मण हाथी, घोड़ा पर्यन्त देलहुपर चुनमुन्नीकेँ उन्मुक्त करबाक हेतु तैयार नहि होइत छथि। मुदा जखन हुनका एकटा तुढ़िया अपन खुद्दीक पोटरीक बदलामे चुनमुन्नीकेँ उन्मुक्त करबाक प्रार्थना करैत छनि, तँ ब्राह्मण एहि विनिमयक हेतु तैयार भऽ जाइत छथि आ चुनमुन्नी अपन खोंतामे घुरबामे समर्थ होइत अछि। एहि कथामे मानवक सर्वाधिक प्रमुख आवश्यकता अन्नकेँ विलासिता सम्बन्धी समस्त अन्य आवश्यकता हाथी, घोड़ा, धन सम्पत्तिसँ ऊपर देखाओल गेल अछि। भूखक शान्तिक बादे आन कोनो आवश्यकता जन्म लऽ सकैत छैक, तेँ मानव जीवनमे अन्नक मर्यादा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण छैक, एहि कथामे एहि तथ्यकेँ विज्ञापित कयल गेल अछि। संगहि एहि बालकथामे सचेतन मानव-हृदयक करुणा ओ उदारताकेँ सेहो विज्ञापित कयल गेल अछि। एही मानवोचित भाव सभक कारणेँ लोक कोनो पीड़ित पक्षियहुकेँ देखि अपन सम्पूर्ण सम्पत्तियो लुटाकऽ ओकर रक्षाक हेतु सन्नद्ध होइत अछि। भारतीय जीवन दर्शन ओ लोकजगतक यथार्थसँ संपुटित ई बालकथा बालमस्तिष्ककेँ सुसंस्कृत करबामे सर्वथा सक्षम अछि।

दोसर बालकथा थिक *'हजाम'*। एहिमे एक गोट मूर्ख राजाक कथाप्रियता तथा एक गोट धूर्त्त हजाम द्वारा ओकर हठधर्मिताकेँ नष्ट करबाक कथा अछि। एहिमे हठधर्मिताक प्रति बाल मनमे जुगुप्सा उत्पन्न करायब तथा बुद्धि ओ विवेकक संबलसँ केहनो हठधर्मीकेँ परास्त करबाक लोकशिक्षण अछि।

तेसर बालकथामे *'सुरहिन'* नामक एक गोट गायक कथा अछि जे बाघकेँ वचन दऽ देबाक कारणेँ ओकरासँ दूरो भऽ गेलाक बाद पुनः अपन शरीर ओकरा समर्पित कऽ वचनक पालन करऽ चाहैत अछि। एहिमे भारतीय लोकमानसमे वचनक प्रतिष्ठाक हेतु सर्वस्व लुटा देबाक जे संस्कृति अछि, तकरे अनुगायन भेल अछि। गायक संगहि ओकर बाछाक सेहो बाघक हेतु समर्पणमे भारतीय पारिवारिक जीवनने पारस्परिक स्नेह

ओ सहअस्तित्वकेँ अतिरंजित कयल गेल अछि। संगहि बाघ द्वारा एहन वचनपालिका गाय ओ ओकरा 'मामा' कहि सम्बोधन कयनिहार बाछाकेँ अभय प्रदान कयल गेल अछि जे निदर्शन अछि व्यवहार कुशलतासँ शत्रुओक मनकेँ जीति लेबाक संभावनाक।

एहिना *'मयूर ओ मैना'* शीर्षक बालकथा लोकजगतमे धूर्त्त ओ वञ्चकक संग वस्तुक आदान-प्रदान नहि करबाक संदेश दैत अछि। *'मेलक बल'*मे एकताक सामर्थ्यकेँ अंकित कयल गेल अछि, जे आइ परिवार, समाज, राष्ट्र ओ विश्वमानवक हेतु अनिवार्य भऽ गेल अछि।

'कौआक आनल समाद' मिथिलाक रूढ़िग्राही समाजक लोकजीवनक अन्तरंग कथा थिक। मिथिलामे एहन मान्यता छैक जे काग सर्वज्ञ होइत अछि आ ओकर कुचरब किछु ने किछु अर्थ रखिते छैक। ओ भविष्यद्रष्टा होइछ आ आगू आबऽवला मंगल अथवा अमंगलक सूचना अपन शब्दमे कऽ देल करैछ। मंगल ओ अमंगल ओकर कुचरबाक समय ओ ध्वनि पर निर्भर करैत छैक। दुपहरमे ओकर कर्कश ध्वनि आगत कोनो अमंगलक सूचना दैत अछि, तँ प्रातःकाल ओकर मधुर स्वरात्मक कुरड़बसँ कोनो अतिथिक आगमनक पूर्वसूचना भेटैछ। प्रवासी पतिक आगमन कोनो चिरवियोगिनीक हेतु कतेक हर्षक भऽ सकैत छैक से तँ भुक्तभोगिनिये अनुभव कऽ सकैत छथि। ओ सभ अपना अङ्गनामे कागक कुरड़ब प्रवासी प्रियतमक आगमनक सूचना मानि कागकेँ अत्यधिक सम्मान करैत रहैत छथि जाहिसँ ओ हुनको आङ्गनमे कुरड़नि। महाकवि विद्यापति एकठाम लिखने छथि—

मोरा रे अङ्गनमा, चनन केर गाछिया

ताहि चढ़ि कुरड़य काग रे।

सोने चोंच मढ़ाय देब वायस

जओ पिया आओत आज रे।।

मैथिली ललनाक एही मानसिकता तथा देओर-भाउजिक सहज स्नेह सम्बन्धक अभिव्यक्ति *'कौआक आनल समाद'* बालकथामे भेल अछि।

गोनूझा मैथिली लोककथाक एक गोट विशिष्ट पात्र थिकाह। हिनकासँ सम्बद्ध अनेक कथा लोकजगतमे प्रचलित अछि जाहिमे हिनक धूर्त्तता ओ प्रत्युत्पन्नमतित्वक सविशेष उल्लेख भेल अछि। *'पजबहि पैर'* शीर्षक बालकथामे गोनूझाक स्वार्थलोलुपताक संगहि मैथिल मानसिकता 'भोजमे आगु, रणमे पाछु'केँ अभिव्यक्ति भेटल अछि। स्वार्थी मनुष्यक मोन कोना क्षणहिमे पलटि जाइत छैक, अपन लाभ देखैत देरी ओ कोना विनत भऽ जाइछ, तकरा ई बालकथा अत्यन्त सुष्ठु रूपेँ रेखांकित कयलक अछि।

'चतुर बोतू' बुद्धिक आगू बलक पराजेयताक कथा थिक। एहि कथामे बोतू

अपनासँ कतोक गुना बलबान बाघहुसँ निर्भयतापूर्वक सवाल-जबाब कऽ ओकरा परास्त करैत अछि तथा जखन बोतूकेँ मारबाक हेतु बाव दोसर बेर गीदरक मंत्रणा पर अबैत अछि तँ बोतू गीदरक षड्यंत्रमे ओकरे फँसाय मरबा दैत छैक आ अपनो जान बचा लैत अछि। एहि बालकथाक द्वारा बालमस्तिष्ककेँ आपत्तिकालहुमे धैर्य, शौर्य ओ बुद्धिसँ समस्याक समाधान तकबाक हेतु संघर्षक मन्त्र देल गेलैक अछि।

अगिला कथा अछि *'ब्राह्मण-पुत्र'*। एहि कथामे बालविवाह ओ वरजेठ विवाह जन्य विसंगतिक संकेत देल गेल अछि। तत:पर *'आंझुलि'* कथामे जुआ खेलनिहारक विषम चरित्रक परिचय दऽ एहि खेलक प्रति वितृष्णा उत्पन्न कयल गेल अछि। जाहि जुआक खेलमे युधिष्ठिर अपन राज-पाट ओ पत्नी पर्य्यन्तकेँ हारि गेल छलाह, से लोकजगतमे उपहासक विषय बनल रहल अछि। 'आँझुलि' बालकथामे राजाक बेटा अपन बहिन आँझुलिकेँ जुआमे डोमक हाथेँ हारि जाइत छथि तथा परिणाम स्वरूप कठोर राजदंडक भागी होइत छथि।

*'दानदाइ'*क कथा लोकजगतक आशा-आकांक्षा, हर्ष-विषाद तथा आदर्श ओ यथार्थक द्वन्द्व पर आधारित अछि। एहि कथामे एकटा भाउजि अपन ननदिकेँ बेर-बखत पर अपन चुनरी दैत छथिन, मुदा सशर्त्त जे ओहिमे दाग नहि लगैक। संयोगसँ ओहिमे दाग पड़ि जाइत छैक आ भाउजि एही कारणेँ अपन स्वामीकेँ कहि ननदिक हत्या करबा दैत छथि। बादमे ननदि दानदाइ अपन पतिक प्रयाससँ पुनः जीवित होइत छथि। एहि कथामे ननदि ओ भाउजिक आन्तरिक स्पर्द्धाजन्य द्वेषभावक सहज आकलन भेल अछि। भाउजिक कहला पर भाइ द्वारा बहिनिक हत्यामे अतिरंजना रहितो कुंठित मानसिकतासँ युक्त पुरुषक तथाकथित *जोरूक गुलाम* बनबाक निदर्शन देल गेल अछि, जकरा इंगित करैत महात्मा तुलसीदास कहने छलाह-

ससुरारि पिआरि भइ जब तें।
रिपु रूप कुटुम्ब भए तब तें॥

एहि बाल कथामे रोचकताक सर्जनक संगहि कन्याक जीवनमे माता-पिता, ससुर, भैंसुर, पति आदिक स्थान ओ महत्त्वक निरूपण कयल गेल अछि। भारतीय लोकजीवनक उदारताकेँ सेहो एहि बालकथामे उद्घाटित करैत दानदाइ द्वारा अपन भाइ ओ भौजाइकेँ क्षमा कऽ देल गेलनि अछि।

कथाकहानीमे ग्रथित *'ढेढ़बितना'* बालकथा एक गोट एहन चरित्रक कथा थिक जे अत्यन्त कमजोर रहितहुँ राजा सन धनबल-जनबलसँ सम्पन्न लोकहुँसँ अराड़ि मोल लऽ कऽ अपन बापकेँ छौड़ैबामे समर्थ होइत अछि। एहि कथामे एहि चरित्रक ई विशेषता देखाओल गेलैक अछि जे ई अपना संग प्रतीकात्मक रूपेँ समाजक सभ वर्णक सङोर करैत चलैत अछि जेना-बिढ़नी, आगि, पानि, साप, लाठी इत्यादि। बालमनमे सामाजिक

प्रत्येक जाति, वर्ग, लिंग, समुदाय ओ धर्मक प्रति समरसताक भावोदय करा सभक प्रति सम्मान ओ समदर्शिताक भावक सर्जन एहि कथाक उद्देश्य बुझना जाइत अछि। यैह भावना सामाजिक-सांस्कृतिक तथा राष्ट्रिय भावनात्मक समन्वयक जननी होइछ।

'बरही बरही खुट्टा चीर' कथामे एक गोट फुद्दीक दालि जाँतमे अँटकि गेलाक बाद ओहि दालिकेँ प्राप्त करबाक हेतु ओकर प्रयत्नक निरन्तरता ओ तदुत्तर साफल्यक वर्णन अछि। अपन दालिकेँ प्राप्त करबाक हेतु ओ क्रमशः जाँत, बरही, राजा, रानी, साप, लाठी, आगि ओ पानि लग जाइत अछि। क्रमशः असफल होइछ मुदा निराश नहि आ जेना कि कहल गेल अछि **'सत्यश्रमाभ्यां सकलार्थ सिद्धिः'**, तहिना ओहि फुद्दीक श्रम सफल होइत छैक। ओ दालि प्राप्त कऽ लैत अछि। असफलताक बाद निराश नहि भऽ पुनः पुनः नवीन उत्साहक संग प्रयत्न करबाक मार्गदर्शन एहि कथाक उद्देश्य थिक।

कथा कहानीक अन्तिम बालकथा थिक *'कुट कुट कुट'*। एहिमे एकटा बगड़ा द्वारा कुशसँ चँछा जयबाक बाद चँछयबाक कारणक मूलेकेँ समाप्त कऽ देबाक प्रयत्नक वर्णन अछि। बगड़ा क्रमशः गाय, चरवाह, मालिकीनी, बच्चा ओ चुट्टी लग जा अपन समस्याक स्थायी समाधानक हेतु प्रयत्न करैत अछि। कर्मण्यताक दर्शनकेँ ई कथा आलोकित करैछ।

एहि तरहेँ कथाकहानीक प्रत्येक कथा सोद्देश्य अछि आ विभिन्न प्रतीकक माध्यमसँ एहिमे लोकजीवनक घटनाकेँ आधार बनाय ओहि उद्देश्यकेँ बालमस्तिष्क द्वारा सहज ग्राह्य बनाओल गेल अछि। लोकरंजना तँ ई सभ कथा करितहिँ अछि।

कथाकहानीक भाषा अत्यन्त सरल अछि। एहिमे लोकजीवनक शब्दावली तथा कथ्यभंगिमाक प्रयोग भेल अछि। अपन मौलिक रूपमे लोककंठसँ गृहीत रहबाक कारणेँ एहि कथा सभमे कतहु कृत्रिमताक लेश नहि अछि। कदलीवन, सारिल सुग्गा, चेरिया खबासिन, झांझी कुक्कुर आदि लोककथाक स्थल ओ पात्रक सहज ग्रहण एहि बालकथा सभमे भेल अछि।

सम्यक् रूपेँ कथाकहानी शीर्षक डा० शैलेन्द्रमोहनझा द्वारा संकलित बालकथाक संग्रह पर विचार कयला उत्तर ई स्पष्ट अछि जे ई संग्रह मैथिली बाल साहित्यक समृद्ध क्षेत्रक बानगी थिक। एकरा लोकजगतसँ प्राप्त कऽ तथा प्रकाशित कराऽ डा० झा बालसाहित्य संकलनक हेतु मार्गनिर्देश दऽ गेल छथि। हुनक निर्देशन अनुसन्धित्सुलोकनिकेँ मैथिलीक एहि अतुलनीय निधिकेँ सुरक्षित-संरक्षित ओ लिखित-प्रकाशित करा लेबाक आह्वान करैत अछि।

यात्री साहित्यमे युगबोध

देवर्षि तुल्य यात्रीजीक पुस्तकाकार अवदानक रूपमे मैथिलीकेँ मात्र तीन गोट उपन्यास क्रमशः 'पारो', 'नवतुरिया' आ 'बलचनमा' तथा दुइ गोट कविता संग्रह क्रमशः 'चित्रा' ओ 'पत्रहीन नग्न गाछ' मात्र भेटि सकलैक। तथापि जँ हिनक प्रकीर्ण रचना सभकेँ छोड़ियो देल जाय तैओ यैह पाँच गोट रचना हिनका मैथिलीक आधुनिक साहित्यमे अमर बनौने रहबाक हेतु पर्याप्त अछि। तकर कारण ई जे यात्रीजीक एक-एकटा रचना युगक आहि लऽ कऽ प्रस्तुत होइत रहल। कविक युगद्रष्टा ओ युगस्रष्टाक छवि हिनक रचनावलीक कण-कणमे परिव्याप्त भेटैत अछि। यैह कारण थिक जे मातृवाणीकेँ हिनक रचनाधर्मिताक यद्यपि अल्पांशे भेटलनि आ सम्पूर्णतामे ई राष्ट्रभाषाहिक प्रति समर्पित रहलाह, तथापि मैथिली एहि वरद पुत्रकेँ पाबि सनाथा होइत रहलीह।

यात्रीजी जनकवि छलाह। अपन माटि-पानि, देसकोस, भाषा-भूषाक संभार हिनक सभटा रचनामे सहज रूपेँ समादृत देखि पड़ैत अछि। हिनक रचनामे मिथिलाक लोकजीवनक यथार्थ, असन्तोष ओ तकर निवारणार्थ चलैत संघर्षक सूक्ष्म निदर्शन भेटैत अछि। चन्दाझाक छद्म प्रगतिवादक चिनगी हिनक रचना सभमे धधकैत बुझना जाइत अछि। सामाजिक-साहित्यिक मार्गक दिशानिर्देशनपरक युगबोधसँ हिनक रचना सभ ओतप्रोत छनि। परम्पराक पाकल गूर सभकेँ ई चीरि-फाड़ि क' निष्णात वैद्य जकाँ साफ करैत रहलाह आ मिथिलाक विशिष्ट रूपेँ तथा भारतवर्षक सामान्य रूपेँ स्वस्थ सामाजिक-साहित्यिक-सांस्कृतिक जीवनक संचरणक हेतु व्यग्र रहलाह।

प्रगतिवादी दृष्टि यात्रीजीक अन्यतम विशिष्टता रहलनि। जाति-वर्ग विभेद, छूआछूत, खाद्याखाद्य विवेचन, नारी समस्यासँ संत्रस्त; अशिक्षा ओ अज्ञानान्धकार तर कुहरैत, विषमता जन्य हीन भावनासँ ग्रस्त, आत्माभिमानसँ वंचित तथा दुनू साँझक दालियो रोटी जुटा पयबामे असमर्थ मिथिलाक व्यापक समूह हिनक साहित्यिक आत्माकेँ झकझोरैत रहलनि आ ओकर चीत्कार, आक्रोश आ संघर्ष हिनक लेखनीसँ निःसृत होइत रहल। *'बाँसक ओधि उपाड़ि करइछी जारनि, हमर दीन नहि घूरत की जगतारनि'* सदृश रचना हिनक सामाजिक यथार्थक उद्घाटनपरक रचना थिकनि।

यात्रीजीक लेखनी अपन प्रतिभाक चमत्कार तखनेसँ देखायब शुरू कऽ देने छल जखन भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन अपन स्वरूप पकड़ने जा रहल छल आ क्रमशः उग्र होइत मिथिलाकेँ अपन प्रभाव-परिवेशमे आनि चुकल छल। गाँधीजी लोककेँ राम-राज्यक स्वप्न देखा चुकल छलथिन। लोक स्वतंत्रता पबितहिँ *'दैहिक दैविक भौतिक तापा। रामराज्य काहुहि नहि व्यापा।'* क प्रति आश्वस्त भऽ क्रमशः सचर होइत चल गेल छल।

मुदा एहिकालमे *'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्'* क मंत्र जाहि भूमिक संदेश बनल छल ओकरे भूमिपुत्रमे क्यो जँ विलासिताक चरम सीमा धरि जयबाक सामर्थ्य रखैत छल तँ दोसर दिस ओहने वर्गक आधिक्य छलैक जे वासोक भूमिसँ वंचित छल आ वासक हेतु दासवृत्तिक अतिरिक्त आन कोनो जोगाड़ नहि छलैक एहन लोकक हेतु। जेना ओ भूमिपुत्र होयबे नहि करय। समाजमे जमींदार, ओकर अमला आ सामान्य कृषक मजदूर यैह तीनटा वर्ग छलैक। जतऽ जमींदार आ ओकर अमला मजूरेक श्रमशक्तिक बल पर ऐश करैत छल ततहि मजूरवर्ग शोषण-उत्पीड़नक तर दबल कोनहुना जीवैत जा रहल छल। यात्रीजीक *'आइ गूड़ा कालिह खुद्दी एहिना, तोहर बहिकिरनी कोना निमहैत छहु, साँझ दइ छहु हाथ ओ पतलो जरा, गारि फज्झति मोन मारि सुनैत छहु'* आ कि *'जिन्दगी भरि जे अमृत मंथन करय, जिन्दगी भरि जे सुधा संचित करय'* आदिमे एहि सामाजिक-आर्थिक विसंगतिक यथार्थपरक चित्रण भेल अछि।

तथापि एहि दलित वर्गकेँ अपन शक्तिसँ बेसी भगवानक भक्तिएटा पर भरोस करबाक विवशता छलैक। *'कखन हरब दुख मोर, हे भोलानाथ! दुखहि जनम भेल दुखहि गमाओल सुख सपनहु नहि भेल।'* आ कि *'केहन कलेह भोला गरीबकदीन। एकटा तऽ लोटा छल बेटा छल तीन। पानि पीबैकाल होइअए छीनम छीन,'* गाबि-गाबि ओ मस्त रहैत छल। बाल विवाह ओ वृद्ध विवाहसँ प्रताड़िता महिला समाजक जीवन अत्यन्त गर्हित भऽ गेल छलैक, जकर अभिव्यंजना यात्रीजीक **'बूढ़वर'** ओ **'विलाप'** क माध्यमे अत्यन्त स्फुट अछि। मुदा क्रमशः स्वतंत्रता आन्दोलनक स्वतंत्रता, समानता भ्रातृत्व, एकता, आन्दोलन, अछूतोद्धार, नारी-जागरण आदि शब्द जनसामान्यक जहनिमे प्रवेश करऽ लागल छलैक। प्रत्येक वर्गमे आत्मसम्मानक उद्बोधन होमऽ लागल छलैक। पूर्वजन्मक कर्म आ भाग्य पर आधारित ऊँच-नीच आ गरीब-अमीर होयबाक संकल्पना क्रमशः सामाजिक संरचनाक प्रतिफलक रूपमे चीन्हल जाय लागल छलैक। स्वस्थ ओ स्वतंत्र जीवनक आलोककेँ प्राप्त करबाक हेतु मिथिलाक जनजीवनमे उत्साहक संचार होमऽ लागल छलैक।

यात्रीजी मिथिलाक जनजीवनमे होइत एहि युगबोधक प्रवक्ताक रूपमे समक्ष अयलाह। सामाजिक समीकरणक बदलैत स्वरूप तथा दलितो-उत्पीड़ितक अपन

अस्मिता ओ नागरिक अधिकारक प्रति सजगताकेँ चित्रित करैत ओ लिखलनि-

राड़ भय गेल आइ फूजल ऊक
गोआर-गोंढ़ि अमात धानुक केओट
क्यो खयते ने ककरो ऐंठि
डोम धोबि चमार नहि पवनओट लेब' आओत
दुरदुरएबइ त' उनटि क' देत ओहो टोक
की करबैक?

नारी जागरणक प्रति साकांक्ष यात्रीजी प्रेमक स्वरूपकेँ फ्रायडक मनोविश्लेषणवादक आधार दऽ 'पारो'क रचना कयलनि आ युवा चेतनाकेँ वृद्धविवाहक विरुद्ध नवतुरिया उपन्यासमे ठाढ़ करौलनि। नारी शोषणकेँ त्राणद स्थिति धरि पहुँचयबाक हेतु ओ एहन पात्रीक सृष्टि करैत रहलाह जे अपन श्रमशक्तिक बलपर पुरुष वर्गक समानान्तर होयबाक लेल अकुलाय लगैत छथि आ ओकर मनमानीक विरोध सबला बनि कऽ करऽ लगैत छथि, यथा -

खेपब हम चरखा काटि, मुदा
नहि जायब नैहर एहि बेर
ओहि साल जकाँ.......
काटब चरखा काटब टकुरी
हम खेपि लेब अप्पन कहुना

स्वतंत्रताक प्रति जन-आकांक्षाक स्वरूप १५ अगस्त ४७ दिन प्रणीत यात्रीजीक एहि पंक्ति सभमे स्फुट भऽ कऽ समक्ष आयल -

खयता ने अयाची आब साग
ककरो खासतैक किएक पाग
केओ आब कथी लए मूर्ख रहत?
केओ आब कथी लए कष्ट सहत?
केओ किअए हएत भूखें तबाह?
केओ किअए हएत फिकरें बताह?
नहि पड़ल रहत भेटतैक काज!
सभ करत मौज सभ करत राज!
पढ़ता गुनता होयताह पास
जुगल कामति छीतन खबास

जे काजुल से भरि पेट खएत
ककरो नहि बड़का धोखि हएत
कहबओता अजुका महाराज
केवल कामेश्वरसिंह कालिह
हमरालोकनि जे खाइत छी
खयताह ओहो से भात-दालि

मुदा स्वातंत्र्योत्तर भारतमे राजनीतिक समीकरणटा बदलल छलैक, व्यवस्था नहि बदललैक। राजनीतिक परिवर्त्तनसँ जाहि आमूल परिवर्त्तनक लोक आशा कयने छल से क्रमशः विलुप्त होइत चल गेलैक। जमींदार ओ ओकर अमला-फइलाक जाहि सामन्तवादी मनोवृत्तिसँ लोक त्राण पाबऽ चाहैत छल, तकरे फैलात्र प्रतिस्थानी नेता ओ सत्ताधीश-नौकरशाही भऽ गेल छलैक। क्रमशः नेता वर्ग पैरवी, पहुँच ओ फूसि आश्वासनक पर्याय होइत गेलाह। ईलोकनि चपल लोकक स्वार्थपूर्तिक साधन बनैत गेलाह। एहने परिस्थितिकेँ इंगित करैत अमरजी लिखने छलाह-

जगकेँ युग परतारि रहल अछि।
बनिया ओ टुटपूँजिया नेता
सब कोठी अजबाड़ि रहल अछि।

यात्रीजी सेहो एहि बदलैत परिस्थितिक मूकदर्शक नहि रहलाह। ओहो एहि तथ्यकेँ अभिव्यक्त करैत कहने छलाह-

बनिया अफसर लीडर तीन त्रिमूर्त्ति
क' रहला अछि अपन मनोरथ-पूर्त्ति
अपना लय सब अनका लेल बङौर
तइपर फाटन्हि रहि-रहि कते बुकौर

महगी आकाशमे ठेकऽ लागल। जनतंत्रक अभिनेतालोकनि राष्ट्रिय जीवनमे सुधारक हेतु नित्य नव घोषणा करथि, मुदा जनसामान्यक कल्याण कार्यमे कतहु प्रगतिक लक्षण नहि देखि पड़ैत छल। ताहि पर व्यंग्य करैत यात्रीजी यथार्थक अभिव्यक्ति एहि शब्दें कयने छलाह-

धन्न रहू हे भारत माता धन्न
महगिक मारल लोक कनैछ हकन्न
ढाकिक ढाकी पास होअय प्रस्ताव
तइओ बढ़ले जाइछ सबथुक भाव

एहने विषम परिस्थितिमे यात्रीजी लोकजीवनगे मंगलकामनाक दृष्टिञे, सामाजिक समरसता, समानता ओ सद्भावक उद्भावकक रूपमे श्रमिक वर्गक पक्षधर भऽ पूजीवादी व्यवस्थाक प्रतिरोध कयलनि आ श्रमक विधातृ शक्तिकेँ जगजियार करबाक हेतु, ओकर प्रतिष्ठाक हेतु हुंकार कयलनि-

धन्य हे श्रमशील मानव
विश्व भरि मे व्याप्त
धन्य तोहर जाति।

हिनक *पिता-पुत्र संवाद* कविता जँ भोगवादी व्यवस्थाक प्रति जुगुप्सा उत्पन्न करैत अछि तँ *'ताड़क गाछ'* श्रमिक वर्गक अजेय सामर्थ्यक उद्बोधन करैत अछि। एकान्त भक्तिक तरंगमे अन्ध बनल शोषित समाज लग भक्तिक वस्तुपरक व्याख्या कऽ' यात्रीजी ओकर स्थितिमे परिवर्तन करयबाक हेतु स्वयं नियामक होयबाक सन्देश *'नव नचारी'* क माध्यमे देलथिन। तीन जनवरी १९४८ कऽ' स्वाधीनताक लगले बाद गांधीजीक हत्यासँ मर्माहत यात्रीजी *'गांधी'* कविताक माध्यमे राष्ट्रिय जीवनमे एकताक महत्त्व ओ स्वतंत्र भारतमे नागरिक समानताक संवैधानिक व्यवस्थाक व्याख्या कयलनि-

अहिना हिन्दू मुसलमान सिख
बौद्ध जैन खिष्टान पारसी
रहओ एक भ'
रहओ एक ठाँ
सभ मनुक्ख थिक
सभ एक्के थिक
देश आइ स्वाधीन भेल अछि
सभक मेल सँ

तथापि जाहि सामाजिक समरसता ओ समानता, एकता ओ सम्पन्नता, स्वतंत्रता ओ सुव्यवस्था तथा शोषणविहीन शांतिपूर्ण समाजक मंसूबा भारतीय स्वातंत्र्य आन्दोलनक संजीवनी रहल छल, तकरा भोटक तंत्र गर्तमे मिलौने जा रहल छल। जमींदारी तँ समाप्त कऽ देल गेल, मुदा भू वितरणमे नागरिक समानताकेँ ध्यानमे नहि राखल गेल। स्वतंत्रताक बादो जँ केओ सोड़ह सए बीघा जमीनक मालिक बनले रहल तँ ककरो सोड़ह धूरक बासो अपन नहि भऽ सकलैक। एहने विकट परिस्थितिमे तेलांगनामे जमीनक लूटि सशस्त्र क्रांतिकेँ प्रोत्साहित कयने छलैक जकर रिक्थक रूपमे साम्प्रतिको परिवेशमे कम्यूनिस्ट आन्दोलनक जमीन पर लाल झंडा गाड़ि कब्जा करबाक प्रवृत्ति, लागल जजाति लूटि लेबाक प्रवृत्ति मध्य बिहारकेँ तबाह कयने अछि आ कतोक

प्रदेशमे जातीय सेनाक उद्भव तथा गोलीकांड सभक कारणक रूपमे यदा-कदा उभरि कऽ अबैत रहैत अछि। एहि सशस्त्र क्रांतिक प्रतिकारक हेतु विनोबा भावे भूदान यज्ञक रूपमे अहिंसक क्रांतिक जन्म देलनि। एहि यज्ञक माध्यमे जमींदारलोकनिकेँ प्रेरित कऽ' हुनकालोकनिसँ दानक रूपमे जमीन लऽ भूमिहीनक बीच सरकारक माध्यमे वितरणक व्यवस्था कऽ राष्ट्र भरिमे क्रमशः जाग्रत अराजकताक शमनक उपाय सोचल गेल। मिथिलाक मसिजीवीलोकनि सेहो एहि राष्ट्रिय क्रांतिक उद्गाताक रूपमे पाछू नहि रहल छलाह। दिसम्बर १९५२ ई० मे विद्यापति गोष्ठी, लहेरियासराय द्वारा प्रस्तुत *भूमिदान यज्ञ* नामक पुस्तिका एहि दृष्टिञे ऐतिहासिक कहल जा सकैछ।

एहिमे भूदानसँ सम्बद्ध पाँच गोट हिन्दी गीतक समावेश अछि आ रचनाकारलोकनि छथि क्रमशः सुधांशु शेखर चौधरी, यात्री-नागार्जुन, अमरेन्दु, मस्त ओ श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'। ई गीत सभ भूदान आन्दोलनमे मिथिलाक साहित्यिक योगदानक दृष्टिञे अमर कृति सभ थिक। व्यंग्यात्मक शैलीमे नागरिक समानताक अधिकारक अनुकूल भू-वितरण व्यवस्थाक प्रति यात्रीजीक रुझानक स्वर हिनक एहि ऐतिहासिक कवितामे देखल जा सकैछ-

बाँझ गाय बाभन को दान - हर गंगे
मन ही मन खुश है भगवान - हर गंगे
ऊसर बंजर ओ शमसान - हर गंगे
संत विनोवा पावै दान - हर गंगे
कौआ करे गंग असनान - हर गंगे
फिर हड्डी का टुकड़ा दान - हर गंगे
पैदल चलकर देते प्रान - हर गंगे
फिर भी न पिघले पाखान - हर गंगे
संत विनोबा हैं भगवान - हर गंगे
बांधो स्वागत हेतु मचान - हर गंगे
दूध-दही मेवा मिस्टान - हर गंगे
ले आये बाबू-बबुआन - हर गंगे
जिनके हैं नौलखा मकान - हर गंगे
वे हैं सर्वोदय की शान - हर गंगे
दस हजार मन जिनके धान - हर गंगे
जौ भर भूमि करे वह दान - हर गंगे

छठवां भाग करो तुम दान	-	हर गंगे
छुट्टा लूटो सगर जहान	-	हर गंगे
खुली रहैं कानूनी म्यान	-	हर गंगे
चलै अहिंसा की किरपान	-	हर गंगे
ठगैं तुम्हें बाबू-बबुआन	-	हर गंगे
सुनो विनोबा संत महान	-	हर गंगे
भूमिहीन पाबे भुइदान	-	हर गंगे
निकलबाइये यह फरमान	-	हर गंगे
फाजिल धरती या कि मकान	-	हर गंगे
सब तर बाँटो एक समान	-	हर गंगे
आधा होय तुरंत लगान	-	हर गंगे
पाबै मदद मजूर किसान	-	हर गंगे
सबके मुँह पर हो मुस्कान	-	हर गंगे
भुंइ पर सबका हक्क समान	-	हर गंगे
क्यों कोई लेगा भुंइदान	-	हर गंगे
धरती माँ के सब संतान	-	हर गंगे

एहि कवितामे बेकारे भूमिटाकेँ दान करबाक जमींदारलोकनिक मानसिक त्रिद्रूपता, वैधानिक फरेबक द्वारा भूदान ओ वितरण, भ्रष्टाचार आदिक प्रति कत्रिक आक्रोशकेँ स्पष्ट देखल जा सकैछ।

समष्टिमे, यात्रीजी परतंत्र ओ स्वतंत्र भारतक संक्रमण कालमे प्रबुद्ध मैथिली कविकर्ममे निरत रहि अपन चारूकातक समस्त सामाजिक-धार्मिक-आर्थिक-राजनीतिक-सांस्कृतिक गतिविधिक मूकद्रष्टेटा नहि बनल रहलाह अपितु ओकरा सभकेँ प्रखर अभिव्यंजना प्रदान करैत रहल छलाह। समसामयिक युगबोधसँ आप्लावित यात्रीजीक कविव्यक्तित्व युगीन प्रवृत्तिसँ आगूओ धाप मारि युग प्रवर्त्तनक हेतु क्रियाशील देखि पड़ैत अछि।

किरणजीक 'सत्य सन्देश'

आधुनिक मैथिली साहित्य जाहि महामनीषीलोकनिक नवीनताक आधानक प्रवृत्ति द्वारा जनचेतनाक प्रतिनिधि साहित्यक रूपमे साकार, भव्य ओ विराट स्वरूप ग्रहण कयलक अछि, ताहिमे डॉ० काञ्चीनाथझा 'किरण'क स्थान महत्त्वपूर्ण छनि। मैथिली साहित्यक विविध विधामे रचना द्वारा एक दिस जँ ई मैथिली साहित्य-भांडारकेँ सम्पुष्ट करबामे निरत रहलाह तँ दोसर दिस अपन आन्दोलनी व्यक्तित्वक प्रभावसँ जन-जनपदमे मैथिलीक अस्मिताक स्थापनार्थ आजीवन संघर्षरत रहलाह। मैथिली भाषा-साहित्य-सेवाक रचनापक्ष ओ क्रियापक्ष दुहूमे हिनक व्यक्तित्वक स्पष्ट छाप अंकित भेटैत अछि।

ओना तँ कविता (कतय नुकायल छी हे श्याम, मिथिलाक वसन्त, माटिक महादेव, खूसर बाबू इत्यादि); कथा (करुणा, कस्मै नमः, धर्मरत्नाकर, मधुरमणि इत्यादि); बालकथा (अभिमन्यु, ध्रुव); महाकाव्य (पराशर); एकांकी (जय जन्मभूमि, कर्ण, शीतलसेनी, महाराज शिवसिंह, बन्दी राजकुमार इत्यादि); नाटक (विजेता विद्यापति); उपन्यास (चन्द्रग्रहण); निबन्ध (फकड़ा, कीर्त्तनिञा नाच छल की नाटक, मैथिलीक शब्द समाज, कोन महल नाम रखबै एकर, हस्तलिखित पत्र-पत्रिका इत्यादि); आलोचना-अनुसंधान-संस्मरण, बालसाहित्य आदि विविध विधा पर हिनक कलम-अकुंठित-अबाध रूपेँ चलैत रहलनि, तथापि कविता, एकांकी ओ कथाविधाकेँ युगानुरूप दिशा प्रदान करबामे ई सर्वांशतः सफल सिद्ध भेलाह।

मैथिली भाषा-आन्दोलनकेँ त्वरित करबाक हेतु हिनक प्रयासक बहुविध स्वरूपमे गाम-गाममे विद्यापति-दिवसकेँ व्यापक करबाक प्रयास स्तुत्य रहल। संगहि साहित्यकारक निर्माण ओ संवर्द्धनमे सेहो ई निरन्तर लागल रहलाह। श्रीप्रबोधनारायणचौधरी, ग्राम+पो०-कुर्सो नदियामी (दरभंगा)क 'बीछल फूल' कथा संग्रहक संशोधनपूर्वक प्रकाशन हिनक साहित्यकार निर्माणक प्रवृत्तिक स्पष्ट साक्ष्य अछि। एहि कथासंग्रहकेँ मैथिलीक प्रथम कथासंग्रह कहयबाक सौभाग्य प्राप्त भेलैक। एहिना पं० नंदनझा, ठाढ़ीक पौराणिक कथासंग्रह पतिव्रतासत्यकोपाख्यान'क संशोधन कऽ प्रकाशित करयबाक साहित्यमनीषीक गुरुतर कार्यकेँ सेहो ई सम्पादित कयने छलाह।

मैथिली भाषा-आन्दोलनसँ जीवन भरि संपृक्त किरणजी एकरा गत्यात्मक स्वरूप देबाक सुदृढ संवाहक पत्र-पत्रिकासँ सेहो निरन्तर आबद्ध-निबद्ध रहलाह। *मिथिला*

मोदक द्वितीय जन्मक प्रकाशनकालमे ई ओकर सम्पादनसँ जुड़ल छलाह (हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर - डॉ० जयकान्तमिश्र, साहित्य अकादमी, दिल्ली, पृ०२२९)। मुदा हिनक नाम पत्रिकाक सम्पादकक रूपमे उल्लिखित नहि रहलाक कारणेँ हिनका नेपथ्य सहायकेटा मानबाक बाध्यता अछि। आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन' द्वारा दरभंगासँ १९४८मे सम्पादित अल्पकालिक मुदा गरिमामय मैथिली मासिक 'स्वदेश'क सम्पादन परिषदमे सेहो किरणजीक योगदान छलनि। अजमेरसँ प्रकाशित हिन्दी-मैथिली मासिक 'मैथिल बन्धु'क सम्पादनमे हिनको सहयोग छलनि (मैथिली साहित्यक रूपरेखा, द्वितीय खण्ड, चेतना समिति, पटना, पृ० ८३)।

तथापि जाहि पत्रक सम्पादक-मण्डलमे हिनक नाम स्पष्ट उल्लिखित दृष्टिगोचर होइछ से थिक *अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद पत्रिकाक* शिशिरांक जे १९६२ ई०मे मात्र एके अंक प्रकाशित भऽ सकल। एकर कार्यकारी सम्पादक पं० श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर' छलाह, तेँ सम्पादकमण्डलमे नाम रहने किरणजीकेँ एहि पत्रक सम्पादन-सम्बद्धतासँ बेसी एकर गरिमाक हेतु योजितटा मानल जा सकैत छनि। तथापि ई स्पष्ट करैछ जे पत्रकारिता आन्दोलनकेँ ई निरन्तर सहयोग करैत रहल छलाह।

मैथिली पत्रकारिताक प्रति किरणजीक सूक्ष्म दृष्टि ओ समर्पणभावक अमूल्य दृष्टान्त अछि हिनक सम्पादनमे प्रकाशित 'सत्यसन्देश' नामक मासिक पत्र। ई पत्र काशीसँ संवत् २००० तदनुसार प्राय: १९४३ ई०क माघ मासमे मात्र एके अंक प्रकाशित भऽ सकल। डबल क्राउन १/८ आकारमे प्रकाशित एहि पत्रिकामे केवल आठ पृष्ठ अछि।

एहि समय धरि मैथिली पत्रकारिताक एक गोट विशिष्ट युग समाप्त भऽ गेल छल। मैथिली पत्रकारिताक इतिहासक एहि अन्धकार युगमे मनस्वी किरण टिमटिमाइत प्रदीप लऽ कऽ ठाढ़ भेलाह एवं मैथिली पत्रकारिताक नैरन्तर्यक हेतु दत्तचित्त भेलाह। एहि पत्रक 'प्रथम निवेदन' शीर्षमे अभिव्यक्त भावना किरणजीक अदम्य साहस, अप्रतिम उत्साह ओ भावुक मैथिलीप्रेमकेँ स्फुट करैत अछि। एहि शीर्षकमे कहल गेल अछि -

'मैथिली मर्मज्ञ विद्वानक द्वारा सम्पादित तथा सुप्रबन्धित 'भारती' 'साहित्यपत्र' 'मोद' 'विभूति' नहि चलि सकल। एहन स्थितिमे हमरा सन व्यक्तिक हेतु पत्र प्रकाशनक साहस करब, 'बड़ बड़ गेला तऽ मोछवला एला'केँ चरितार्थ करब थिक, से हम मानैत छी। किन्तु हमर मतेँ- 'अपन शक्तिक अनुसार समाज ओ साहित्यक सेवाए द्वारा मनुष्य अपनाकेँ विशिष्ट प्राणी सिद्ध कय सकैछ। अन्यथा आन जानवरसँ मनुष्यमे कोनो भिन्नता नहि छैक। अलम्।'

एहि पत्रक प्रथम पृष्ठ पर सबसँ ऊपर उद्बोधन वाक्य अछि। एहि उद्बोधन

वाक्यसँ किरणजीक अक्खर व्यक्तित्वक दृढता एवं मिथिला-मैथिलीक प्रति समर्पण भाव प्रतिभासित होइत अछि। उद्बोधन पद्यमे देल गेल अछि, जे एहि स्वरूपक अछि-

मिथिला मैथिल मैथिलीक हित आजीवन व्रत राखब।
धन, पद यश वा मानक लोभेँ फूसि न कथमपि भाखब।।
उचित कथा हम कहब सबहिकेँ धनी रहू, की रंक।
आँच साँचमे लागि सकय नहि तेँ छी हम निश्शंक।।

पछाति कविवर सीतारामझाक लिखल संवर्द्धनाक एक गोट पद अछि -

थिक से देश सुदेश ओ से नरेश सुनरेश।
सदन सदनमे सर्वदा जतै 'सत्यसन्देश'।।

प्रथम पृष्ठक आधासँ अधिक भागमे क्रमश: डॉ० सर गंगानाथझा, स्वामी विवेकानन्द, सर होमी मोदी तथा महावीर प्रसाद द्विवेदीक आप्त वाक्य छपल अछि। सर गंगानाथ झाक आप्त वाक्यमे भारतीय एकताक आह्वान कयल गेल अछि। स्वामी विवेकानन्दक आप्त वाक्यमे भूतक अपेक्षा वर्त्तमानकेँ श्रेष्ट सिद्ध करबाक प्रेरणा देल गेल अछि। सर होमी मोदीक आप्त वाक्यमे सफलताक हेतु अटल आत्मविश्वासक आवश्यकता पर बल देल गेल अछि तथा महावीर प्रसाद द्विवेदीक आप्त वाक्यमे साहित्यनिर्माणक बाद भाषा-शैलीक स्थिरीकरणक तथ्य कहल गेल अछि। एहि समस्त आप्त वाक्यकेँ मुखपृष्ठ पर देबाक सम्पादकीय उद्देश्य बुझना जाइत अछि- पत्रक प्रति आकर्षण उत्पन्न करब। केवल महावीर प्रसाद द्विवेदीक आप्त वाक्य *'पहिने साहित्यक निर्माण करू। भाषाशैली पछाति स्थिर होइत रहतैक।'* वस्तुत: किरणजीक मैथिली वर्तनीक प्रति भावनाकेँ उद्घाटित करैछ। पत्रक दोसर पृष्ठ पर एहि तथ्यकेँ स्पष्ट करैत कहल गेल अछि जे हम संकेतक झगड़ासँ दूर रहि लेखकीय रुचिक पालन करब'। अर्थात् वर्तनीक प्रति किरणजीक दृष्टिकोण उदारवादी छलनि आ अपन पत्रोमे ई कोनो सुनिश्चित वर्तनीक उपयोग नहि कऽ लेखकक वर्तनीकेँ यथावत् रखबाक सिद्धान्तक परिपालनकेँ अङेजि लेने छलाह।

एहि पत्रक दोसर, तेसर ओ चारिम पृष्ठ पर सम्पादकीय टिप्पणीक रूपमे *मैथिलीक उन्नतिक उपाय* पर विचार अभिव्यक्त कयल गेल अछि जाहिमे हिन्दीक संक्रमणसँ ग्रस्त मिथिलावासीक मैथिलीक उपेक्षाभावक भर्त्सना करैत एहिसँ उबरबाक उपाय सभ सुझाओल गेल अछि। एहिमे प्रारम्भिक शिक्षामे मैथिलीक प्रवेश, विविध विषयक पाठ्योपयोगी एवं पठनीय ग्रन्थक मैथिलीमे प्रकाशन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम सभमे मैथिलीक प्राधान्यक स्थापना आदिक सुझाव देल गेल अछि। एहि टिप्पणीसँ किरणजीक भाषा आन्दोलनी व्यक्तित्व स्फुट होइत अछि।

एहि पत्रक स्वरूप साहित्यिक अछि। एहिमे मात्र तीन गोट लेखकक रचना संगृहीत

छनि जाहिमे दुइ गोट कविता ओ एक गोट कथा अछि। प्रथम कविताक शीर्षक अछि 'उद्बोधन' ओ एकर रचयिता छथि पं० आनन्दझा 'न्यायाचार्य'। दोसर कविता स्वनामधन्य उपेन्द्रठाकुर 'मोहन'क थिकनि। एकर शीर्षक अछि – 'एकाकी जीवन निरानन्द'। 'एक चित्र' शीर्षक कथा जे एहि पत्रमे छपल अछि, तकर लेखकक नाम उद्धृत अछि भीमनाथझा। कहल जाइछ जे ई किरणजीक छद्म नाम थिकनि।

साहित्यक विभिन्न विधाकेँ सम्पुष्ट करबाक प्रवृत्ति मैथिली पत्रकारिता आन्दोलनक विशिष्टता रहलैक अछि जे वर्त्तमानोमे परेखल जा सकैछ आ तत्कालीन परिस्थितिमे तँ एहि वैशिष्ट्य ओ सीमाक आवश्यकते छल। स्वभावतः किरणजी अपन एहि पत्रमे समाचार-विचारक प्रति अनुन्मुख भेल छथि। ई हुनक *'लीक छोड़ि कऽ चलबाक प्रवृत्तिक प्रतिकूल देखि पड़ैत अछि।*

एहि पत्रमे संगृहीत कथा *'एक चित्र'* वस्तुतः बालविवाहक प्रतिरोधकेँ उद्देश्यमे राखि विरचित अछि। वस्तुविन्यास, चरित्र चित्रण, वर्णन चातुर्य ओ भाषा प्रयोगक दृष्टिऍं ई कथा अत्यन्त मनोरम अछि, मुदा एहिमे संवाद योजनाक अभाव अखरैत छैक तथा औत्सुक्यक निर्वाह एवं चरम परिणति धरि पहुँचबामे हडबड़ी कथाकेँ कमजोर कऽ देने छैक जे सिद्ध करैछ जे ई कथा किरणजीक एहि विधामे प्राथमिक प्रयास मध्य रहल होयतनि।

एहि पत्रक अन्तिम पृष्ठ उपेन्द्रठाकुर 'मोहन'क कविता मात्रसँ आच्छादित अछि। एहि कवितामे कवि पुरुष ओ प्रकृतिक पौराणिक सम्बन्ध-बन्धक चर्चा करैत लोकजगतमे पुरुषकेँ परिचालित करबाक हेतु शक्तिस्वरूपा नारीक महत्ताकेँ अभिव्यक्त कयलनि अछि। कविताक भाषा तत्सम बहुल तथा भाव दर्शनपरक एवं गम्भीर अछि। द्रष्टव्य अछि एकर किछु पाँती, यथा–

एकाकी जीवन निरानन्द!
नहि छल संयोजन उषा-हास,
नयनाह्लादक नहि चन्द्रकला;
झखड़ल गाछीक विराग व्याप्त,
निस्पन्द, ताल-त्रयहीन जगत;
आप्लावित जलमे सकल सृष्टि!
मनहीन, चेतनाहीन, शून्य!!
सत् चित् आनन्द ब्रह्म उन्मन,
उद्विग्न विकल भै उठल व्यग्र

'सहि एकाकी' तेँ नहि रेमे,
एसगर एकान्त होयब यदर्थ!!
....
जगतक उछाह जीवन नारी!
श्रम विह्वल जर्जर व्यस्त सूर्य,
जीवित आलोकित करय विश्व!
पालोमे बान्हल बड़द जकाँ
मानव विश्लथ जग-खेत बीच!
सन्ध्याक अरुणिमा सन स्मित कै
नारी सभ श्रम बिसराय दैछ।
आस्वादित कै ओ चन्द्रकला
उत्फुल्ल होइ अछि स्थगन पुरुष!
निःसाधन, भारोपम जीवन
स्पृहणीय एहि मधुपान हेतु!
जगतक उछाह-जीवन-नारी!

एक अंकीय ओ अल्प कलेवरसँ युक्त रहितो ई पत्र मैथिलीक विकासधाराक क्रांतिकारी मार्गदर्शक बुझना जाइछ। खास कऽ एहिमे छपल उद्बोधन कविता तँ मैथिली-उत्थानक हेतु सन्नद्धताक सिंहनादे थिक। तेँ एहि कविताकेँ यथावत् उद्धृत कयल जाइछ –

जागू जागू मैथिल समाज!
'सन्देश सत्य' अछि निकट आज।।
तन्द्रालस दिन बितओल अनेक।
तेँ लै अयलहुँ हम सलिल सेक।।
जा जागब नहि ता रहब ढारि।
ध्रुव कान बीच ई सत्य वारि।।
हे युवकसिंह! दीअऽ दहाड़।
जे गूँजि उठै नर वन पहाड़।।
मिथ्या पशु लै बनु अलि कृपाण।
पाबै जहि सँ निज देश त्राण।।

देशक जे कोनो अछि कुरीति।
समुचित तकरा सँ नहि पिरीति।।
झञ्झानिल सम बनि वेगवान।
झट तोड़ू खलश।खीक मान।।
नव नव समुदय लै सहसपाद।
बनि नाशू अहँ तामस विषाद।।
मैथिल उत्थानक बनु प्रतीक।
बनि सत्यनिष्ठ ओ विनिर्भीक।।
फूकू नादक बल शंखानाद।
छपि जाय जतै नाना विवाद।।
देशक गौरव पर राखि ध्यान।
करु उदय हेतु नव नव विधान।।
निश्चय नहि साहस विफल हैत।
माँ मैथिली कत गुन अहँक गैत।।

एहि तरहेँ किरणजीक *'सत्य सन्देश'* मैथिलीक उत्थानक विशिष्ट उद्‌वाहक संदेश सावित होइछ आ ई मैथिली पत्रकारिता आन्दोलनक प्रारम्भिक प्रतीक रूपमे आइयो ऐतिहासिक महत्त्वक अछि।

प्रतिज्ञा पाण्डव : कवि ओ काव्य

मौलिक लेखनक क्षेत्रमे विशिष्ट कृतिक रूपमे ईस्वी सन् २००१क साहित्य अकादेमी पुरस्कार जाहि पोथीकेँ भेटल छलैक से छल **'प्रतिज्ञा पाण्डव'**। ई पोथी स्व० बबुआजीझा 'अज्ञात' (१९०४-१९९६) द्वारा रचित महाकाव्य थिक जकर प्रकाशन १९९५मे भेल छल। एहिसँ पूर्व अज्ञातजीक एक गोट अन्य महाकाव्य **'रुक्मिणी परिणय'** मैथिली अकादमी, पटना द्वारा १९८०मे प्रकाशित कयल गेल छल। अज्ञातजीक मैथिली रचना संसार दुइ गोट महाकाव्य ओ किछु मुक्तक रचना धरि सीमांकित रहलनि। हिनक मुक्तक रचनाक अधिकांश डॉ० सुरेश्वरझा द्वारा साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीक 'भारतीय साहित्यक निर्माता' शृंखलामे रचित 'बबुआजीझा अज्ञात'क परिशिष्टमे समाहित कऽ लेल गेल अछि। एकरा सभकेँ कवि 'तरंगिणी' नामे संगृहीत कयने छलाह। आचार्य सुमनजी 'प्रतिज्ञा पाण्डवक अभिज्ञप्ति : कवि ओ काव्य' शीर्षक भूमिकामे अज्ञातजीक सम्बन्धमे १९९४मे लिखने छलाह जे *'कवि अपन प्रथम वयसमे कोसी अंचलक अभिशप्त भूमिपुत्रक रूपमे पशुचारण ओ कोदारि-खुरपीक संचालन करैत खेतक आरि पर बैसल कविता गुनगुनाइत रहल छथि। प्राकृतिक मुक्त वातावरणमे मिथिलाक खेतिहरक बाढ़ि-रौदीक भीजल टटायल जीवनक कटु अनुभव करैत प्रथम मधुवयस बितबैत ओ तखनहु कविताक करुण तान लगबैत रहल छथि। अथ च ओहि सुर-धुनिक प्रच्छन्न प्रवर्तनासँ अपन बीसीक बाद ओ विद्यारम्भ कय जाहि श्रमे आचार्यत्व प्राप्त कयलनि, विद्यालयमे विद्या दान करैत साहित्य सरस्वतीक साधना कयलनि, ओकरे सिद्धिस्वरूप अपन अवकाश जीवनकेँ सार्थक करैत काव्य रचनामे संलग्न छथि, ई ज्ञात कथ एहि 'अज्ञात' उपनामा कवि-अग्रणी पं० श्री बबुआजी झाक व्यक्तित्वक प्रति, एवं अद्यतन बिरानबे वर्षक वृद्ध वयसहुमे हिनक उन्मीलित प्रतिभा,* व्यापक व्युत्पत्ति एवं प्रतिबद्ध अभ्यस्तता परेखि ककर मस्तक श्रद्धानत नहि होइछ?' 'प्रतिज्ञा पाण्डव'क पाण्डुलिपि पर आचार्यक ई अभिमत अज्ञातजीक व्यक्तित्व पक्षकेँ सर्वथा समुद्‌घाटित कऽ दैत अछि।

अज्ञातजीक जन्म मधुबनी जिलाक मधेपुर थानाक बाथ ग्राममे २६ मार्च १९०४ ई०मे भेल छलनि आ हिनक मृत्यु १९९६मे भेलनि। 'हमर जीवन यात्रा' शीर्षकसँ ई एकटा आत्मसंस्मरण प्रतिज्ञा पाण्डवक परिशिष्टमे संगृहीत कयने छथि। एहि संस्मरणक अनुसार प्रतिज्ञापाण्डव १९९१मे रचल जा चुकल छल। एही पोथीक 'आत्मप्रसंग' शीर्षक परिशिष्टमे कवि कहने छथि-

देखल चैत बहत्तरि कहियो रहल न जीवन शान्त
निष्ठुर नियति बनौने रहली सभ दिन चिन्ताक्रान्त
किछु लिखैक मन इच्छा रहितहुँ छल कुंठित उद्योग
चिन्तातुर स्वयमेव हृदय की दैत कोनो सहयोग
देलनि किछु अवकाश शारदा उठल हृदय उद्वेग
वृद्ध अवस्थहु उद्वेलित भय कलम उठौलक डेग

एहि आधार पर ई कहल जा सकैछ जे अज्ञातजी अपन वार्द्धक्यावस्थाक बहत्तरिमसँ अठासीम वर्षक आयुक बीच मा मैथिलीक चरणारविन्दमे दुइ गोट महाकाव्यक पुष्पाञ्जलि अर्पित कऽ कृतार्थ भेल छलाह। अज्ञातजी कोसिकन्हाक जीवनक कंटकाकीर्ण पथ पर निरन्तर संघर्ष करैत; वैदाइ, मास्टरी ओ खेतीसँ आजीविका ग्रहण करैत, अदम्य स्वभाषाप्रेमक वशीभूत भऽ मैथिलीमे रचनाशील भेलाह। 'रुक्मिणी परिणय' महाकाव्यमे व्यक्त हुनक उद्‌गारक ई पाँती सभ द्रष्टव्य अछि –

कोसी नदीक निकट अछि बस्ती बाथ
जन्मभूमि, जलजीवन नियतिक हाथ
महिंसिक पीठ चढ़ल किछु चित पित मारि
कविता एखन लिखै छी खेतक आरि
कवि समाजसँ रहलहुँ सभ दिन कात
नाम अपन तेँ रखलहुँ हम 'अज्ञात'।

अज्ञातजी मिथिला-मैथिलीक सर्वहारा वर्गक कवि छलाह। पिता कंटीरझा निरक्षर छलथिन, माता द्रौपदी देवी तँ सहजहिँ। उत्तम खेती घरक आमदनीक साधन। तेँ महिस पोसने रहथि, बड़द पालैत रहथि। शिक्षाक कोनो महत्त्व किंवा साधन घरमे रहनि नहि। तेँ बालक बबुआजी विधिवत् शिक्षारम्भ नहि कऽ सकलाह। मुदा हिनक सतत जिज्ञासु प्रवृत्ति हिनका कृषि ओ पशुपालनसँ अवकाशक क्षणकेँ अध्यवसायमे बितयबाक हेतु प्रोत्साहित करैत रहलनि। गाममे एकटा पंडितजीसँ ई संध्यावन्दन, पूजा-पाठ, उपनयन, विवाह, सत्यनारायण पूजा आदि करयबाक ब्राह्मणवृत्तिपरक ज्ञान प्राप्त कऽ लेलनि। जिज्ञासाक उत्तरोत्तर वृद्धि ओ पढ़बाक व्यसनक कारणेँ ई तुलसीकृत रामायण, अध्यात्म रामायण, दुर्गासप्तशती, चन्दाझा रामायण, हिन्दी व्याकरण, चन्द्रकान्ता, शिशुबोध, मुहूर्त्त चिन्तामणि, लघुजातक, वृहज्जातक, लघुकौमुदी, कुमारसंभव आदि ग्रन्थक संगहि हिन्दी, मैथिली, संस्कृतक अनेको पोथी पढ़ैत गेलाह। क्रमशः हिन्दी, मैथिली ओ संस्कृतक साहित्य ओ व्याकरणसँ ई पूर्ण परिचय प्राप्त कऽ लेलनि। स्वाध्यायक ई पथ बबुआजीक हेतु अत्यन्त कष्टकर छलनि जकर ने कोनो लक्ष्य छलैक, ने साधन आ

दुरूह ततेक छलैक जे व्याकरण पढ़बाक हेतु हिनका अपना गामसँ तीन माइल दूर मधेपुर जाय पं० लक्ष्मीनाथझासँ पढ़ऽ पड़नि, सेहो दुपहरमे जे महीसिक चरवाहीमे अवकाशक समय रहैत छैक। मुदा सत्ये कहल गेल छैक–'सत्यश्रमाभ्यां सकलार्थसिद्धिः' से फलित भेल आ बबुआजीकेँ क्रमशः दिशा आ आलोक भेटऽ लगलनि। हिनका गामसँ चारि कोस उत्तर गाड़ाटोल छैक। ओहिठामक पं० हरिनारायणझाक प्रेरणासँ ई प्रथमा परीक्षामे बैसलाह आ प्रथम स्थान प्राप्त कयलनि। ई १९३० ई०क घटना थिक यावत् बबुआजीक जीवनमे २६ गोट वसन्त आबि कऽ जा चुकल छलनि आ विधिवत् शिक्षाक समय कालातीत भऽ गेल छल।

प्रथमा परीक्षामे प्रथम अयबाक कारणेँ बबुआजीकेँ चारि टाका वृत्ति भेटऽ लगलनि। चारि टाका वृत्ति आइ भने हास्यास्पद बुझना जाय मुदा ताहि दिनुक अल्पवित्तीय परिवारक हेतु तँ ई जेना कुबेरक भंडार छल, एकटा सामान्य परिवार धरि चला सकबाक संसाधन। तेँ की कंटीरझाक आँखि फुजलनि? युवक बबुआजी अग्रिम शिक्षाक हेतु स्वतंत्र नहिञे कयल गेलाह। हुनका गृह कारण नाना जंजालसँ पलखति तखन भेटलनि जखन ओ अपन बदला महींस चरयबाक हेतु एकटा नोकर दू टाका मासिक वेतन पर रखबा देलथिन। जेना-तेना एहि विषम पारिवारिक परिस्थितिक सामना करैत बबुआजी १९३२ ई०मे मध्यमा परीक्षोत्तीर्ण भेलाह। ततःपर लोहना विद्यापीठक प्राचार्य पं० त्रिलोकनाथमिश्रक सान्निध्य प्राप्त कऽ साहित्य शास्त्री दुनू खण्ड उत्तीर्ण भेलाह। आब गाम पर रहि आगू पढ़ब संभव नहि छलनि, तेँ कलकत्ता जाय आयुर्वेदक अध्ययनार्थ छात्रवृत्तिक बलेँ विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी हॉस्पीटल, एमहर्स्ट स्ट्रीटमे अध्ययन करऽ लगलाह। ततःपर १९३६ ई०मे कलकत्तासँ काव्यतीर्थ, बिहारक आचार्य ओ बड़ौदा गायकवाड़ राजक दान परीक्षा साहित्योत्तमा उत्तीर्ण कयलनि। बड़ौदा राजक परीक्षोत्तीर्णता हिनका सद्यः अर्थकरी सेहो भेलनि। पछाति विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी संस्कृत महाविद्यालयक लेख परीक्षामे प्रथम स्थान प्राप्त कयलनि, स्वर्णपदक जितलनि आ महावीर प्रसाद द्विवेदीजीक कतिपय पुस्तक उपहारस्वरूप प्राप्त कयलनि। १९३६ ई०सँ १९४२ ई० धरि अज्ञातजी विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल, कलकत्तामे उपवैद्यक आजीविका ग्रहण कयलनि। मुदा १९४२मे भारत छोड़ो आन्दोलनमे कलकत्ताक स्थिति अस्त-व्यस्त भऽ गेल छलैक। तेँ ई कलकत्ता प्रवास त्यागि गाम घुरि अयलाह। हिनका गाम अबिते कोशीक ताण्डव शुरू भेल। बिहारक ई शोक नदी कोसिकन्हाकेँ झकझोरऽ लगलैक। बाढ़ि, कास-पटेर, बालुक ढेरीक संगहि कोसिकन्हा मलेरिया, कालाजार आ हैजाक नैहर बनि गेल। अज्ञातजीकेँ मानवसेवाक अवसर भेटलनि आ चलतीवला वैद्यकक बलेँ आजीविका सेहो। ई क्रम १९५६ ई० धरि चलैत रहलनि आ एहि अवधिमे ई अलीगढ़सँ प्रकाशित धन्वन्तरि नामक वैद्यकक पत्रिकामे आयुर्वेदसँ सम्बद्ध अनेक लेख

लिखैत रहलाह (प्रतिज्ञा पाण्डव, पृ० १३४)। १९५६ सँ १९६८ ई० धरि ई बलुआ-निर्मली संस्कृतोच्च विद्यालयमे प्रधानाध्यापकक रूपमे कार्यरत रहि संस्कृत, हिन्दी, आ मैथिलीक अध्यापनमे लागल रहलाह। अल्प वेतनक कारणेँ अवकाश प्राप्तिक निर्धारित अवधिसँ दू-अढ़ाय वर्ष पूर्वहिँ अवकाश ग्रहण कऽ लेलनि आ पुनश्च गामे पर खेती-बाड़ी देखऽ लगलाह।

जीवन संघर्षकेँ जीवनक संबल मानि चलनिहार एहि महान चरितनायकक पारिवारिक जीवन कतेक कंटकाकीर्ण छलनि से तँ शिक्षावधियहिमे ई उपभोग कऽ चुकल छलाह। शिक्षाक प्रति पिताक दृष्टिकोण आ पुत्रक जिज्ञासा सीरा आ भाटा जकाँ विपरीत दिशापरक तँ छले संगहि हिनक किशोरावस्थहिमे माताक मृत्यु आ पिता द्वारा क्रमशः दुइ गोट विमाताकेँ, एकटाक मृत्युक बाद दोसरकेँ अनैत रहबाक प्रवृत्ति आ अपनहुँ विवाह १६-१७क अल्प वयसमे भऽ जयबाक कारणेँ पारिवारिक जीवन जटिलसँ जटिलतर होइत चल गेलनि। हिनका जीविकापन्न देखैत देरी पिता भिन्न कऽ देने छलथिन। ई अर्थाभाव ओ प्रवास जीवनक कारणेँ ज्येष्ठ पुत्र रमानन्दझाकेँ मिडिल धरि पढ़ाय खेतीमे लगा देने छलथिन। छोट बालक इन्दिरानन्दझा ओभरसियरी धरि पढ़ि जीविकापन्न भेलथिन। एकटा कन्या सेहो छलथिन जे हिनक जीवन कालहिमे सन्तति परम्परा दऽ दिवंगता भऽ गेलि छलथिन।

अज्ञातजीकेँ साहित्यसँ नेनपनहिसँ स्नेह रहलनि। सूर, तुलसी ओ विद्यापतिक गीत पढ़ैत-गबैत ई ३०-३५ गोट स्वनिर्मित गीतकेँ पुस्तकाकार कऽ 'भाषा भजन भास्कर' नामे सुदर्शन प्रेस, दरभंगासँ प्रकाशित करयबाक सूचना देने छथि, मुदा ई पोथी हिनका जीवने कालमे विलोपनक स्थिति प्राप्त कऽ लेने छल (*तत्रैव पृ० १३५*)। मिथिला मोद, मिथिला दर्शन ओ वैदेहीमे सेहो हिनक कविता छपल छलनि। कोसिकन्हाक जीवन पर आधारित एकटा कविता-संग्रहक ई रचना कयने छलाह। मुदा ओहो काल कवलित भऽ गेलनि। एहि तरहेँ साहित्य निर्माणक प्रति हिनक प्रतिबद्धता काल द्वारा बेर-बेर वञ्चित होइत रहल। तावत् हिनक अवस्था तेसर चरणक अन्तिम विन्दु पर जा जूमल छलनि। काव्य हेतुक तीनू कलश प्रतिभा, व्युत्पत्ति आ अभ्यास छपोछप भरि गेल छलनि आ ताहीसँ छिलकल पहिने 'रुक्मिणी परिणय' महाकाव्य आ परवर्त्ती आलोच्य 'प्रतिज्ञापाण्डव'।

'रुक्मिणी परिणये' वस्तुतः अज्ञातजीकेँ मिथिला-मैथिलीक कविवर्यलोकनिक बीच ज्ञात बनओलकनि। स्व० किरणजी ओ पं० अमरजी हिनक एही महाकाव्य पर बिनु कोनो तारतम्यक हिनका महाकवि मानि लेलथिन जकर परिणामस्वरूप ई महाकाव्य मैथिली अकादमीक प्रक्रियावस्थामे अस्वीकृति ओ उपेक्षाक दंश सहलाक बादो अन्ततः छपि सकल। तेरह सर्गमे निबद्ध प्रसिद्ध पौराणिक कथावस्तु पर आधारित ई महाकाव्य महानायक श्रीकृष्ण ओ रुक्मिणीक परिणय प्रसंगकेँ लक्षणानुसारी महाकाव्यक रूपमे

ग्रथित कयने अछि। ई महाकाव्य वर्णन विन्यासक हेतु मैथिली जगतमे सतत मोन राखल जायत। अनेक ठाम एकर वर्णन सभ ततेक मनोरम अछि जे सहजहिँ सहृदयकेँ लोभा लैत अछि। उदाहरणक हेतु हेमन्त कालक धनकटनीक दृश्यावलीक ई पदावली द्रष्टव्य–

पाकल धान चलल धनकटनी हलचल भेल किसान
खेतक शोभा कटि-कटि लागल जुटय आबि खरिहान
काजक पाछु हरान बाधमे दिन भरि लोक बुझाइ
घर आङन खरिहान साँझमे भरल धानसँ जाइ
झुकि-झुकि धान कटै अछि छप-छप, खप-खप छोपय सीस
बान्हय बोझ चलय दुलकी दय गाम नगर पुर दीस
लच-लच बहिंगा करय कान्ह पर उछलय बोझ अपार
टुटि-टुटि बाटहुमे लागय कत धानक टूर पथार
कतहु खेतमे गीत चलैये कतहु लगैये पान
कतहु विभूति लगाबथि पंडा जय शंकर भगवान
मुरही लाइ भरल पथिया लय घुरय बाध हलुआइ
धिया-पुता सभ बदलि धानसँ मुड़-मुड़-मुड़-मुड़ खाइ

मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशन-व्यय वहनसँ प्रोत्साहित अज्ञातजी प्रतिज्ञापाण्डव प्रबन्धकाव्यक प्रणयनक दिशामे उन्मुख भेल छलाह। मुदा सम्पन्न कयने छलाह ओकरा वृहदाकार चम्पू काव्यक रूपमे!

मान्यवर पं० श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'जीक अनुशंसा पर अज्ञातजी ओकरा पूर्णतः पद्यमय आ सारस्वरूप कऽ महाकाव्यक स्वरूप प्रदान कयने छलाह।

आलोच्य महाकाव्यक नाम थिक प्रतिज्ञापाण्डव। ई नाम सर्वथा सार्थक सिद्ध अछि किएक तँ एहि मे वर्णित घटनाचक्रक चरम परिणति पाँचो पाण्डवक प्रतिज्ञाक रूपमे होइत अछि। स्वभावतः एहि महाकाव्यक नायक *सद्वंशः क्षत्रियोवाऽपि धीरोदात्त गुणान्वितः, एकवंशभवो भूपाः कुलजा बहवोऽपि वा* के विश्वनाथक परिभाषाक अनुकूलें युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन,नकुल ओ सहदेव पाँचो पाण्डव छथि। एकाधिक नायकसँ युक्त संभवतः ई मैथिलीक प्रथमे महाकाव्य थिक। पाञ्चाली द्रौपदी एहि महाकाव्यक नायिका थिकीह जनिक मानमर्दन भरल सभामे दुर्योधन, दुःशासन, कर्णादि खलनायक सभक द्वारा कयल जाइत अछि आ गौण पात्रक रूपमे एहिमे धृतराष्ट्र, गान्धारी, विकर्ण, विदुर, कणिक आदिक कार्य-व्यापारक वर्णन भेल अछि।

एहि महाकाव्यक पहिल सर्गमे मंगलाचरणक रूपमे सूर्यक वन्दना कयल गेलनि अछि आ कवि सूर्यवंशक कथा कहबाक अपन औत्सुक्यकेँ सूचित कयलनि अछि।

कथारंभमे जनमेजय नृप वैशम्पायन ऋषिसँ महाभारत युद्धक कारणक पृच्छा करैत छथि। वैशम्पायन एकरा देआदी झगड़ा कहि जनमेजयक जिज्ञासाकेँ शान्त करऽ चाहैत छथि, यथा-

ककरो यदि उत्थान उदय श्रम जन्य देखै अछि
बहुतो जन सामान्य हृदयसँ हर्षित ह्वै अछि
मुदा तकर प्रतिकूल प्रायशः देखि पड़ै अछि
निकटक अपन देयाद द्वेषसँ कुहरि मरै अछि

वैशम्पायन महाभारतीय कथाकेँ अत्यन्त सार रूपमे कहैत जनबैत छथिन जे कुरु वंशक आधा राज पाँचो पाण्डवकेँ भेटलनि जे अपन परिश्रमक बलेँ ओकर उत्थान करैत गेलाह। एम्हर कौरवलोकनि अपन व्यवहारकुशलताक अभावमे अवसन्न रहऽ लगलाह आ पाण्डवलोकनिसँ द्वेष करैत रहलाह। पाण्डवक राजसूय यज्ञमे सम्पन्नता ओ उपहार देखि दुर्योधन द्वेषसँ ततेक मर्माहत भऽ गेल जे खटवास लऽ लेलक।

दोसर सर्गमे कर्ण, शकुनि, दुःशासन आदि दुर्योधनक मनक व्यथाक जिज्ञासा करैत छथिन आ से जानि कर्ण हुनका युद्धक लेल उकसबैत छथिन। मुदा दुःशासन अप्रत्यक्ष युद्धक मन्त्रणा दैत छैक आ युधिष्ठिरकेँ द्यूत पर बजयबाक हेतु कहैत छैक।

तेसर सर्गमे धृतराष्ट्र अपन पुत्रक शोकाकुलताक जिज्ञासा करैत छथि आ कर्ण द्वारा द्यूतक हेतु निमन्त्रण देबाक प्रस्तावकेँ पुत्रमोहक कारणेँ स्वीकार कऽ लैत छथि।

चारिम सर्गमे धृतराष्ट्र आ गान्धारीक शयन कक्षमे नास्तिकतावादक महान विद्वान कणिकाचार्य लग धृतराष्ट्र आ गान्धारीक वार्त्तालाप होइत छनि जाहिमे धृतराष्ट्र पुत्रक व्यामोहमे पड़ल रहबाक कारणेँ राजा विदुर, कृपाचार्य, भीष्म, द्रोण आदिक मतक विरुद्ध रहितो युधिष्ठिरकेँ द्यूतक आमन्त्रण देबाक अपन सहमतिसँ गान्धारीकेँ अवगत करबैत छथिन। गान्धारी हुनक मतक विपरीत मन्त्रणा दैत छथिन खाहे पुत्र मरि किएक नहि जाइनि। कणिकाचार्य अपन कपटपूर्ण संभाषण ओ नास्तिकतावाद बलेँ धृतराष्ट्रक मतक स्थापना कऽ रानीक अभिमतक हेतु हुनका दिस तकैत छथि।

पाचम सर्गमे गान्धारी आस्तिक मतक समर्थन द्वारा कणिकक स्थापनाकेँ खण्डित-विखण्डित कऽ दैत छथिन जाहिसँ धृतराष्ट्र किंकर्त्तव्यविमूढ़ भऽ जाइत छथि।

छठम सर्गमे व्यासजीक कुटीमे विदुरक संग हुनक वार्त्ताक वर्णन अछि जाहिमे द्यूतकेँ कुरुवंशक विनाशकारी बुझि विदुर व्यासकेँ ओकर निवारणक हेतु उपाय करबाक मन्त्रणा दैत छथिन। व्यासजी स्थितप्रज्ञ कर्मयोगी जकाँ फलक आशा छाड़ि विदुरकेँ कर्महि धरि अपन सोमा रखबाक उपदेश दैत छथिन।

सातम सर्गमे हारि-दारि कऽ विदुर कर्णकेँ एहि प्रवंचनापूर्ण आमन्त्रणसँ बचयबाक

उपाय करबाक हेतु विचार दैत छथिन। मुदा कर्ण अपन दोष नहिओ रहैत जातिच्युत कऽ देल जयबाक ओ पाण्डवसँ निरन्तर प्रतिशोधक अग्निमे दहकैत रहबाक कारण जनबैत अपन असमर्थता देखबैत छथिन।

आठम सर्गमे धृतराष्ट्रक संवाद पर विदुर हुनका लग जाइत छथि आ हुनका द्यूतक निमन्त्रण पत्र पंच पाण्डव लग पहुँचयबाक राजाज्ञा होइत छनि। विदुर धृतराष्ट्रकेँ एहि महाअनर्थकारी द्यूत कर्मसँ मुँह मोड़बाक मन्त्रणा दैत छथिन, मुदा धृतराष्ट्र तकरा टारि दैत छथिन, जाहिसँ विदुर खिन्न भऽ निमन्त्रण देबाक हेतु चलि पड़ैत छथि।

नवम सर्गमे विदुरक आगमन ओ आमंत्रण पर पाँचो पाण्डव आ द्रौपदी शंका व्यक्त करैत छथि। विदुर दौत्यधर्मक कारणेँ चुपचाप सभक बात सुनैत रहि जाइत छथि।

दशम सर्गमे कुरुराजक सभाभवनमे विदुर पुनः धृतराष्ट्रकेँ एक बेर कहैत छथिन जे ओ दुर्योधनकेँ द्यूतकर्मसँ अपवारित करथि। एहि पर दुर्योधन हुनका दुर्वचन कहैत छनि। अन्ततः जूआ होइत अछि आ पाण्डव अपन सर्वस्व हारि जाइत छथि। द्रौपदीकेँ दाओ पर राखल जाइत छनि आ फेर पाण्डव हारि जाइत छथि। लगले दुर्योधन द्रौपदीकेँ भरल सभामे अनबाक आदेश दैत छैक। दुःशासन झोंट पकड़ि द्रौपदीकेँ सभाभवनमे अनैत छनि आ हुनका नग्न करऽ चाहैत छनि। दुर्योधनक भाइ विकर्ण प्रतिरोध करैत छैक आ कर्ण द्रौपदीक तिरस्कारपूर्वक चुटकी लैत अछि। दुर्योधन द्रौपदीकेँ चुम्मा देबाक तथा जाँघ पर बैसबाक आदेश दैत छनि। एहि पर भीम बिगड़ि कऽ उत्पात करऽ चाहैत छथि। युधिष्ठिर हुनका हारल होयबाक कारणेँ रोकैत छथिन। ताहि पर भीम युधिष्ठिरक जूआ खेलनिहार हाथकेँ जरा देबाक कटु वचन कहैत छथिन। अर्जुन हुनका शमित करैत छथिन। द्रौपदी न्यायक हेतु भीष्म लग जाइत छथि। भीष्म अपन असमर्थता व्यक्त करैत छथिन। अन्तमे द्रौपदी कृष्णसँ प्रार्थना करैत छथिन आ द्रौपदीक लाज श्रीकृष्ण वसन रूपमे प्रगट भऽ रखैत छथिन। विदुर धृतराष्ट्रक गंजन करैत छथिन। धृतराष्ट्र अपमानिता भक्तिन द्रौपदीकेँ भयपूर्वक दूटा वरदान दैत छथिन जाहिसँ युधिष्ठिर ओ आन सभ पाण्डवभ्राता दास्यभावसँ मुक्त होइत छथि। मुदा विकर्ण ओ युयुत्सुकेँ समस्या समाहित नहि बुझना जाइत छनि।

अन्तिम एगारहम सर्गमे पाण्डवलोकनिकेँ विमुक्त कऽ देबाक कारणेँ दुर्योधन पिता पर बरसैत अछि। धृतराष्ट्र ओकरा पाण्डवक संग मैत्रीक उपदेश दैत छथिन। मुदा दुर्योधन पुनः द्यूतक्रीड़ाक आमन्त्रण पठयबाक हेतु धृतराष्ट्रकेँ विवश करैत छनि जाहिमे हारि भेला पर पाण्डवकेँ बारह वर्ष वनवास आ तेरहम वर्ष अज्ञातवासमे रहऽ पड़तनि। अज्ञातवासक अवधिमे ज्ञात भऽ गेने पुनः वनवास ओ अज्ञातवासक चक्र चलितनि। गान्धारी धृतराष्ट्रकेँ पुत्रक व्यामोहमे पड़बासँ मना करैत छथिन मुदा धृतराष्ट्र नहि मानैत छथिन। पुनः द्यूतकर्मक आयोजन होइछ। जनता तकर विरोध करैछ। पाण्डव फेर हारैत

छथि आ वनवासक हेतु प्रस्थान करैत काल क्रमशः पाँचो भाइ कुरु वंशकेँ नष्ट कऽ न्यायक प्रतिष्ठा करबाक प्रतिज्ञा करैत छथि। अन्तमे दुर्गाक वन्दनाक संग महाकाव्यक समापन होइछ।

आलोच्य महाकाव्य लक्षण ग्रन्थक अनुरूप सभटा अनुशासनकेँ ध्यानमे रखैत लिखल गेल अछि। एहिमे ११ गोट सर्ग अछि, सद्वंशीय क्षत्रिय पाण्डवलोकनि एकर नायक छथि, एकर अंगी रस वीर छैक, धर्मक प्रतिष्ठा एकर फलप्राप्ति थिकै। एकर आदिमे नमस्क्रिया ओ अंतमे मंगलकामनापरक भरतवाक्यक समावेश भेलैक अछि। कथावस्तुक आधार प्रसिद्ध महाभारतीय आख्यान अछि, सर्गान्तमे छन्द परिवर्त्तन सामान्य अछि। वर्णनक जे वैविध्य महाकाव्यक आवश्यक लक्षण मानल गेल छैक, जाहिमे सज्जन प्रशंसा, दुर्जन निन्दा, षड्ऋतु वर्णन, प्रातः, संध्या, प्रदोष, राति, मध्याह्न, सूर्य, चन्द्र, मृगया, वन, सागर, महोत्सव, संयोग, वियोग, यज्ञ, उद्यान, जलक्रीड़ा, मधुपान आदि अबैत अछि, तकर एहिमे अभावे जकाँ भेटत। तथापि महत् काव्यक अधिकांश गुणसँ ई महाकाव्य समन्वित अछि।

मुदा लक्षणानुसारी महाकाव्य होयबाक कारणेँ जँ एकरा परम्पराश्रित मैथिली महाकाव्यक रूपमे देखल जाय तँ से एहि महाकाव्यक संग सर्वथा अन्याय होयत। वस्तुतः एहि महाकाव्यमे परम्परित कथाकेँ आधुनिक परिप्रेक्ष्यमे प्रस्तुत कयल गेल अछि। एहि महाकाव्यमे महाभारतीय कथानकसँ बेसी साम्प्रतिक भारतकेँ प्रस्तुत करबाक चेष्टा भेल अछि।

आधुनिक युग गणतन्त्रक युग अछि। सम्पूर्ण विश्वमे गणतन्त्रहिंकेँ समादरक दृष्टिये देखल जाइत छैक। राजतंत्र उजाड़ि-उपटि जकाँ गेल अछि। एकर कारणक खोज करैत कवि वस्तुस्थितिकेँ एहि शब्देँ व्यक्त कयलनि अछि-

सुरसा सन नृप लोकनि क्षुधा नमरौने गेल।
भोगवाद दिस पैर अवाध बढ़ौने गेला
निर्दयता अतएव नृपक कुहराम मचौलक
तेँ नव नीतिक माङ एखन जनकण्ठ उठौलक।

गणतन्त्रक प्रशंसा करैत कवि कहलनि अछि-

शासन पद आसीन मनुष्यक जँ अछि धैर्य अटूट
लालच लोभक लेल परस्पर जँ नहि है अछि फूट
धर्म अपन बुझि प्रजापालनक जँ जँपैत अछि मन्त्र
की नहि दय सकैत अछि जनता केँ शासन गणतंत्र

मुदा तन्त्र कोनो हो, राजनीति जँ स्वच्छ ओ कल्याणकर नहि रहैछ तँ जनजीवनमे

अस्त-व्यस्तता ओ हाहाकारक वर्त्तमान रहब स्वाभाविक भऽ जाइत छैक। आधुनिक राजनीतिक-सामाजिक जगतमे व्याप्त विशृंखलता ओ विसंगति पारम्परिक कथाक माध्यमे कतेक सटीक बाँचल गेल अछि से एहि पाँती सभमे द्रष्टव्य अछि-

बिनु श्रम अर्जन मे अछि लागल समुदय चण्ड चलाकक
बुड़िबक बुद्धू बुझल जाइ छथि औचित्यक परिपालक
सभ तरि वातावरण अशान्तिक शोचनीय जनजीवन
बुद्धि ज्ञान धन धर्मक कयलक अर्थक लोभ उकन्नन

आइ भारते नहि सम्पूर्ण विश्व राष्ट्रिय ओ अन्तःराष्ट्रिय आतंकवादसँ पीड़ित अछि। मानव बमक रूपमे आतंकवादी अपन जान देबामे ओ दोसराक जान लेबामे कनेको संकुचित नहि देखि पड़ैछ। मानवतावाद जेना समाप्तप्राय भेल जा रहल अछि। मुदा आतंकवादोक जड़िमे विश्वक अर्थतंत्रेक अव्यवस्था अछि। आतंकवादक प्रति कविक युगदृष्टि एहि पंक्तिमे व्यक्त भेलनि अछि- *'एक दोसरक प्राण लैत अछि जखन पाड़ पर'।*

राष्ट्रियता आधुनिक भारतमे ततेक धूमिल भऽ गेल अछि जे राष्ट्रचेतनाक अभावमे राजनीतिज्ञेटा नहि, चर, सेनानायक ओ गुप्ततम दस्तावेजो धरि बिकाउ भऽ गेल अछि। तकरे पर दृष्टिनिक्षेप करबैत कवि दुःशासनक मुहेँ कहबैत छथि-

कीनि सकै छी अरिक युक्ति युत शक्ति सहायक
युद्ध जीति हम लेब परिस्थिति मंगलदायक

सभक हेतु अनिवार्य शिक्षा गणतन्त्रक मूलमन्त्र थिक आ स्वतंत्र भारतक हेतु आवश्यको, मुदा एहि दिस वर्त्तमान शासन तंत्रक विमुखता राष्ट्रकेँ पाछाँ धकेलि रहल अछि। तेँ अनिवार्य शिक्षाकेँ कवि गणतन्त्र शासनक विशिष्ट उपलब्धिक रूपमे इंगित कयने छथि जे राष्ट्रक हेतु कल्याणकर उद्भावना थिक-

शिक्षा अछि अनिवार्य कतहु नहि रहय अशिक्षित लोक।
अनुशासनसँ प्रेम अशेषक नाहि संशय नाहि शोक।।

सत्य आ अहिंसा भारतीय दर्शनक मूलमंत्र थिकैक। मुदा अनीतिकेँ नष्ट करबाक हेतु हिंसा आवश्यक भऽ जाइछ तथा मानव कल्याणक हेतु हिंसाक मार्ग वर्ज्य कऽ देने राष्ट्र कमजोर भऽ जा सकैछ। तेँ शत्रु राष्ट्र पर विजय अभियानक काल आ राष्ट्रक पोषण अथवा हिंस्र व्यक्ति वा पशुसँ प्रजाक रक्षाक लेल हिंसाकेँ पाप नहि बूझल जा सकैछ। एहि मतकेँ अभिव्यक्त करैत आ संगहि अपन सांस्कृतिक प्रतीककेँ प्रतिष्ठापित करैत कवि 'अगौं'केँ व्याख्यात करैत कहलनि अछि-

मनुजक जीवन लेल किसानक हिंसा अछि अनिवार्य
मानल जा न सकै अछि तकरा दोष दुरितकर कार्य

प्रायश्चित्त करै अछि तैयो तकरे कय अनुमान
प्राप्त अन्नसँ अगौं करै अछि दीन दुखीमे दान

जनसंख्या वृद्धि आइ विश्वसमस्याक रूपमे चिह्नित अछि। एकर कारण ओ परिणाम दूहू पर कवि विचार उपस्थित कऽ मानव समाजकेँ एहि समस्यासँ उबरबाक हेतु झकझोरलनि अछि-

काम नियंत्रण हीन मनुष्यक संख्या अछि उधिआइत
नहि नियमित सहवास विपुल मुख नित नव अछि बहराइत
जीवन चिन्ताक्रान्त बनाबय बहुत अधिक सन्तान
कामुक क्रीड़ालीन कियै नहि दै अछि तै पर ध्यान?
अगानहिमे क्यो कतौ करै अछि गुत्थमगुत्थ लड़ाइ
विपुल अपत्यक दुःखेँ दम्पति अन्त काल पछताइ

नारी उत्पीड़न भारतमे महाभारतकेँ जन्म देलक तथापि आधुनिक समाजमे ई समस्या बनले आछ। दहेज ओ कन्यादाह एहि दिशामे सर्वाधिक घिनौन समस्या बनि कऽ भारतोय राष्ट्रक हेतु चुनौती बनि गेल अछि। एहि समस्याक प्रति कविक संवेदनशील लेखनीक स्वर छनि-

नारी शीलहरण पर जहिँ तहिँ उतरल मनुज घिनौना
प्राण हरण पर उतरल नारिक व्याहि चाहि धन सोना
उत्पीड़क लय तिलक मङैये यौतुक अमित पछारी
नहिँ देलक तँ प्राण लैत अछि नारिक नर अविचारी

नारीक एहि दुरवस्था पर कविक सोच सामाजिक आक्रोशक रूपमे अभिव्यक्त भेलनि अछि जे युगान्तकारी ओ परिवर्त्तनकामी छनि-

दया धर्म सम्बन्ध औचितिक नहि किछु कतहु पुछारी
बापक दुख अवलोकि कने छथि देशक आइ कुमारी
अपमानित भय रहल जेना छथि आइ धरा पर नारी
बूझि पड़ै अछि आबि रहल छै काल कोनो बड़ भारी

नारी स्वतंत्रता आइ युगक मांग आ सामयिक अवधारणा अछि। एहि तथ्यकेँ प्रतिष्ठापित करैत कहल गेल अछि-

नर नारिक सहयोग वस्तुतः सृष्टिक हेतु बनैये
तेँ दुनूक अर्द्धांग कल्पना भारत भूमि करैये
वैवाहिक सम्बन्ध दम्पती सख्य भाव सम्पादक

कोनो कृतिमे भय सकैत अछि सहमतिये निष्पादक

एही तरहेँ व्यापारी वर्गमे भ्रष्टाचार, सरकारी कार्यालयमे घूसपेंच, कृषक वर्गक शोषण, जाति प्रथाक दुर्गुण, जातिवादक समस्या, सामन्तवादी प्रवृत्तिक प्रति विद्रोह, मद्यपानक निषेध, युद्धक विनाशकारी प्रभाव, भारतीय पारिवारिक अनुशासन, मानवत्व ओ दानवत्वमे विभेद, सुपुत्रक लक्षण, एकेश्वरवाद, हिंसा-अहिंसाक औचित्य ओ सीमा, कर्मयोग ओ पुरुषार्थसाधन, नास्तिक दर्शन, आर्थिक-सामाजिक विषमता, धनाढ्यक हाथमे सत्ताधारीक नकेल रहबाक विवशता, लोककल्याणहिमे धर्मक मर्म बुझबाक प्रवृत्ति, मँहगी आदि विविध विषयक तत्त्वपरक चिन्तनसँ ई महाकाव्य घनीभूत व्यंग्यकाव्यक शर्त्तकेँ जँ एक दिस पूर्ण करैछ तँ दोसर दिस अत्याधुनिक विषयक प्रवक्ता बनि समक्ष आयल अछि।

सम्पूर्ण महाकाव्यमे राष्ट्रियता ओ राष्ट्रप्रेमक भावना तथा राष्ट्रचिन्तन एहि महाकाव्यकेँ कोनो आधुनिक भारतीय भाषाक महाकाव्यक समकक्ष ठाढ़ करबामे समर्थ अछि।

केन्द्रीय सत्ताधारीलोकनि अपन कुर्सीक हेतु नित्य दलबदली ओ नव दलक गठनमे लागल रहैत छथि। ई भारतीय राजनीतिक अत्याधुनिक समस्या आ दुर्भाग्य थिक। पारम्परिक लक्षणानुसारी महाकाव्यक प्रणेता अज्ञातजी कतेक आधुनिक छथि तकर दृष्टान्त स्वरूप एहि पाँती सभमे ओहि राजनीतिक-परिस्थितिक चित्र ओ परिणामक वर्णन देखल जा सकैछ-

अपने सुख सुविधा पर केवल शिखरक केन्द्रित ध्यान
से की करत विकल जनता केर सुखशान्तिक ओरिआन
भूख पियासक ज्वालामे अछि देशक लोक जरैत
अपन अचल पद लेल लड़ैये नित नव दल बनबैत

अज्ञातजी एहि तथाकथित ऐतिहासिक कथाधृत परम्परामूलक छन्दोबद्ध महाकाव्यमे आधुनिकताकेँ अन्तस् धरि समाविष्ट देखय चाहलनि। लक्षणग्रंथमे नाटकमे उत्तर-प्रत्युत्तर (उतराचौरी) शैलीमे कथोपकथनक समावेश एकटा विशिष्ट शैली कहल गेल अछि, मुदा अज्ञातजी ताहूसँ एक डेग आगाँ बढ़ि एहि महाकाव्यमे आधुनिक नाराबाजीकेँ स्थान देलनि अछि जे अभिनव ओ अत्याधुनिक प्रयोग थिक। एहि प्रयोगमे नेता आगू-आगू बजैत अछि आ जनसमूह पाछू-पाछू ओहि बातकेँ दोहरबैत गेल अछि।

प्रतिज्ञापाण्डवक भाषा प्रसाद गुण सम्पन्न, तत्सम ओ ठेठक संयुक्तिसम्पन्न सामान्य लोकक भाषा थिक। उपमा ओ उत्प्रेक्षाक सहज प्रयोगसँ महाकाव्य मंडित भेल अछि। लोकोक्ति ओ मोहाबराक प्रयोग एकर भाषामे चमत्कार उत्पन्न कयलक अछि। किछु उदाहरण द्रष्टव्य-

(क) अपना कण्ठक घेघ ताकि नहि अनका माथक टेटर तकबैं

(ख) मुहमे रामक नाम निरन्तर काँखक तर अछि कूट कटारी
(ग) जाँतक तरमे अन्नक संगहि घूणहुँ के पिसबौते
(घ) भेल निरर्थक महिसिक आगू केहनो वीण बजौने
(ङ) फन्ना दिस नहि ध्यान घुर-घुरा केवल दृक्‌पथ गेलनि
(च) बूनथि बीआ जखन बबूरक आम कहाँसँ चुनता
(छ) खसता अपनहिँ ओन्ह-पोन्ह भय तेँ जनु खत्ता खुनता
(ज) लंकामे कपि आगि लगाबथि वायु बहय उनचास
(झ) नहि मारथि परतच्छ डाँग विधि बुद्धि ज्ञान हरि लै छथि
(ञ) सभ गुड़ गोबर कयल पिताजी नहि राखल किछु शेष
(ट) जाइ अछि मदमत्त हाथी बाट पर अगुताइ नहि
झाँउ झाँउ करैत कूकुर अछि कोनो परवाहि नहि

प्रतिज्ञापाण्डवमे पर्याप्त प्रासंगिक कथा अनुस्यूत अछि जे कविक व्युत्पन्नताकेँ सहृदयक समक्ष राखि दैत अछि। ई प्रासंगिक कथा सभ रामायण ओ विविध पुराण सभसँ सम्बद्ध तथा प्रसिद्ध लोककथा सभ अछि। अनेक ठाम कवि ओहन कथाकेँ कनेमे पादटिप्पणी दऽ स्पष्ट कऽ देलनि अछि जाहिसँ पाठककेँ कोनो असौकर्य नहि होइन। ई हुनक पाठकीय प्रतिबद्धताकेँ प्रस्तुत करैत अछि।

एहि ग्रन्थक पृष्ठ १३७ पर कवि लिखैत छथि- 'हम तुलसीदासक ऋणी छियनि, जनिक रामायण हमरा संस्कृतमे प्रवेश करबाक शक्ति प्रदान कयलक।' ग्रन्थकेँ पढ़लाक बाद बुझना जाइछ जे कवि तुलसीकृत रामायणकेँ आत्मसात् कयने छथि जे जखन तखन हुनक महाकाव्यमे प्रकट भऽ ओकर मौलिकताकेँ भने प्रभावित करय, सौन्दर्यकेँ अवश्ये बढ़ा देलक अछि। एहिना अनेक अवसर पर कवि बहुश्रुत श्लोक सभकेँ सेहो अपन महाकाव्यमे आत्मसात् कऽ लेलनि अछि, यथा-

तुलसी- *अति रागरष करे जा काई। अनल प्रगट चंदन ते होई।।*
प्रतिज्ञापाण्डव- *काठक मध्य रहै अछि पावक नहि से ककरहु भान।*
धधकि उठै अछि शिखावान बनि पड़ितहि रगड़ महान।।
श्लोकार्द्ध- *आहार निद्रा भय मैथुनं च सामान्यमेतद् पशुभिः नराणाम्।*
प्रतिज्ञापाण्डव- *अशन शयन भय मैथुनमे अछि जगतक जीव समान।*

सम्पूर्णतामे कहल जा सकैछ जे 'प्रतिज्ञापाण्डव'क कवि मैथिली साहित्य जगतक विभूति छलाह आ हुनक ई कृति आधुनिक मैथिली साहित्यक मूल्यवान निधि थिक।

●

शब्द-सम्पदा

❊ बँसकरम सम्बन्धी शब्दावली

बँसकरम सम्बन्धी शब्दावली

भारतीय दर्शनमे शब्दकेँ परब्रह्म कहल गेल अछि-

अनादि निधनं ब्रह्म शब्दतत्त्वम् यदक्षरम्।
निवर्त्ततोऽर्थ भावेन प्रक्रिया जगतो यतः।।
तथापि, शब्दब्रह्मणि निष्णातः परम् ब्रह्माधिगच्छति।

महाभाष्यकार पतञ्जलि शब्दक महत्त्वक सम्बन्धमे कहने छथि-

एकः शब्दः सम्यक् ज्ञातः शास्त्रान्वितः,
सुष्ठु प्रयुक्तः स्वर्गे लोके च कामधुग्भवति।

वस्तुतः शब्द-सम्पदा कोनो भाषाक एकाइ होइत अछि। एकरे आधार पर ओहि भाषाक सम्बन्धमे जानल जा सकैछ जे ओ नातबर अछि कि दरिद्र। हमरालोकनिक मैथिली भाषाक मातबरी एकर शब्द-सम्पदे पर आधारित अछि, तेँ एकर शब्दावलीक संकलन, व्याख्या ओ अर्थनिष्पत्ति एकर भाषिक क्षमताक विज्ञापनक हेतु आवश्यक अछि। मैथिलीक जीवन्तता नहि केवल ओहि शब्दावली पर आधारित अछि जकर उपयोग दैनन्दिन जीवनक व्यवहारटामे होइत छैक, अपितु एकर ओहो शब्दावली बेस महत्त्वपूर्ण छैक जे जातीय व्यवसायक आधार सामग्री, औजार ओ उत्पादनक क्रममे विशिष्ट अर्थक अभिव्यक्तिक हेतु प्रयुक्त भेल करैछ। अवश्ये एहन शब्दावली जनसाधारणक सामान्य प्रयोगमे नहि रहबाक कारणेँ साहित्यिक शब्दकोशमे बहुधा अपवारिते राखल जाइत रहल अछि।

निरन्तर सामाजिक परिवर्त्तन ओ वैज्ञानिक अनुसन्धानक फलस्वरूप प्राप्त बहुविध उपयोगी वस्तु ओ सामग्रीक कारणेँ बहुतो व्यवसायक शब्दराशिमे निरन्तर परिवर्त्तन होइत जा रहल अछि। कतोक व्यवसायक समाप्तिक संग ओकर शब्दावली सेहो प्रयोग बहिष्कृत भऽ कऽ लुप्त भऽ गेल। कतोक व्यवसायमे नव भाव, नव वस्तु ओ नव अर्थकेँ व्यञ्जित कयनिहार नवीन शब्द गढ़ाइत रहल अछि। शब्दक आगम ओ लोपक ई निरन्तरगामी प्रक्रिया चलि रहल अछि।

विशिष्ट व्यवसाये धरि सीमित शब्दावलीकेँ व्यावसायिक अथवा तकनीकी शब्दावली कहल जा सकैत छैक जे मैथिली भाषा-साहित्यक महत्त्वपूर्ण सम्पदा थिक। एकरा सभक संकलन, व्याख्या ओ अध्ययन-अनुशीलन जँ समय अछैत नहि कऽ लेल जायत तँ आशंका अछि जे मैथिलीक ई विशाल सम्पदा विलुप्त भऽ जायत। **डा० अम्बा प्रसाद**

'सुमन' एहि समस्या पर विचार करैत कहने छथि जे *'वर्त्तमान युगक भारतवर्षमे नागरिक संस्कृति ओ सभ्यता दिनोदिन बढ़ले जा रहल अछि। विज्ञानक नव आविष्कार प्रत्येक दिन गामक दिस बढ़ल जा रहल अछि। एहन स्थितिमे हमर कृषक ओ शिल्पकारकेँ औजार ओ कार्यपद्धति बदलबामे अधिक समय नहि लगतनि। जखन कृषकक सभ खेत ट्रैक्टरसँ जोतल जाय लागत आ पटौनी बिजलीसँ होमय लागत तँ देशी हर आ ढेकुलसँ सम्बद्ध जनपदीय शब्दावली गामक लोकक जीह परसँ सर्वदाक हेतु उठि जायत (कृषक जीवन सम्बन्धी ब्रजभाषा शब्दावली, भाग १-डॉ० अम्बा प्रसाद 'सुमन'; हिन्दुस्तानी एकेडमी, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद, १९६०, ग्रन्थके सम्बन्धमे पृ० ३-४)।* मैथिलीक व्यावसायिक शब्दावलीओक सम्बन्धमे ई आशंका सर्वथा सत्य थिक।

एहि वस्तुकेँ ध्यानमे रखैत मैथिलीक मनीषीलोकनि व्यावसायिक शब्दावलीक समुचित रूपेँ संकलन ओ अध्ययन-अनुशीलन केर आवश्यकता पर जोर दैत रहलाह अछि। **डॉ० अमरनाथ झा** कहने छलाह जे *'बहुतो शब्द एहन अछि जे बनिआँ, लोहार, सोनार, कुम्हार, चमार, डोम, कमार, खेतिहर, पजियार, पुरोहित, नटुआ, बजनिआँ, धोबि, नापित इत्यादि अपन-अपन व्यवसाय विशेषमे व्यवहार करइत छथि तकर संग्रह आवश्यक (भाषणत्रयी, मैथिली अकादेमी, पटना, १९८३, पृ० १३)।* **सुमनजी** मैथिली शब्दकोष निर्माणमे पारम्परिक जातीय व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावलीक महत्त्वकेँ स्वीकार करैत एकर संग्रह करबाक सम्बन्धमे कहने छलाह जे *'प्रत्येक जाति ओ व्यवसायीलोकनिमे जे पारिभाषिक शब्द प्रचलित अछि तकर संग्रह हेतु यत्नक आवश्यकता' (मिथिला मिहिर, २७ मई १९४४, पृ० ७)।*

मैथिली मनीषीलोकनिक एही चिन्तन प्रवाहकेँ ध्यानमे रखैत एहिठाम बँसकरम (वंशकर्म)सँ सम्बन्धित व्यावसायिक शब्द-सम्पदाक संकलन ओ व्याख्या प्रस्तुत अछि।

बँसकरम शब्द वंशकर्मक तद्भव रूप थिक जकर अर्थ भेल बाँससँ सम्बन्धित उत्पादन कार्य। एहिमे व्यावसायिक रूपमे मिथिलाक डोम जाति लागल देखि पड़ैत अछि। मुदा आब मुसहर, धनिकार, दुसाध, आदि अनेक जाति सेहो एकरा व्यावसायिक रूपेँ अपनौने अछि।

बँसकरमक आधार सामग्री सम्बन्धी शब्दावली

बँसकरमक मूल आधार सामग्री प्रसिद्ध वनस्पति बाँस अछि। एकर आनुषंगिक सामग्री थिक विभिन्न प्रकारक रंग।

बाँसक समूहकेँ **घानि** कहल जाइत छैक। बाँसक घानिसँ युक्त प्रदेशकेँ **बँसबिट्टी/बँसबाड़ि/बसाड़ि/बाँसक कोठि** कहल जाइत छैक। बँसबाड़िक प्रत्येक ओहन भाग जतऽ एकहि बाँससँ अनेक बाँस उगल रहैछ, से **बीट/बीठ** कहल जाइछ।

बीटसँ बाँसक जे अंकुर बहराइत छैक से **कोपड़/कोपल** कहल जाइछ। एक साल

धरिक बाँसक गाछकेँ सेहो कोपर/कोपल कहल जाइत छैक। एकरा **एकसल्ला** सेहो कहल जाइछ। दोसर सालक बाँसकेँ **दुसल्ला/भाउर** कहल जाइत छैक। तेसर सालक बाँस **तिनसल्ला** होइत अछि। एहन बाँसक भीतरी भाग ललौन भऽ जाइत छैक आ एकर वृद्धि अवरुद्ध भऽ जाइत छैक। एहि अवस्थामे एकरा **पाकल** कहल जाइत छैक। पकबासँ पूर्व बाँसक भीतरी भाग उज्जर ओं अपेक्षाकृत मोलायम रहैत छैक। एहन स्थितिमे एकरा **काँच** कहल जाइत छैक।

बाँसक माटिक तरमे रहऽवला भागकेँ **ओध/ओइध/ओधि** कहल जाइत छैक। बाँसक खेतीक हेतु भाउरक ओधि रोपल जाइत छैक। काँच बाँसकेँ काटि देला पर सुखलाक बाद ओकर ऊपरी सतह पर संकुचन उत्पन्न होयबाक क्रिया **चोकटब** होइछ।

कोनो-कोनो बाँसक बीचहिमे कोनो अंश असमये सुखा जाइत छैक। एहन स्थलमे चुट्टी नामक कीट अपन **बिल/बीहरि** बना देने रहैत छैक। एहि ऐबसँ युक्त बाँसकेँ **चुट्टीमार** कहल जाइत छैक। मुट्ठीमे अँटबा योग्य मोटाइवला बाँसकेँ **मुठबाँसी** कहल जाइत छैक। दृढताहीन एवं लचकबाक प्रवृत्तिवला बाँसकेँ **लप्पच/लिबलिबाह** कहल जाइत छैक। कनिको भार पड़ला पर अति नम्रताक भाव **लिबलिब** होइत अछि।

बाँसक आकृति बेलनाकार होइत छैक। एहि बेलनक भीतरी भाग **फोंक** होइत छैक आ थोड़े-थोड़े दूर पर बेलनाकार भागक मुँह बन्द रहैत छैक। दूटा बन्द मुँहवला भागक दूरी **पोर** कहल जाइत छैक। लग-लग पोरवला बाँसकेँ **घनपोर** आ दूर-दूर पोरवला बाँसकेँ **पोरगर** कहल जाइत छैक। अत्यन्त दूर-दूर पोरवला बाँसकेँ **नमपोर/लमपोर** कहल जाइत छैक। जाहि-जाहि ठाम मुँह बन्द रहैत छैक, ओहि स्थल सभकेँ **गीरह/गिड्डह/गिट्टह** कहल जाइत छैक। एही गीरह परसँ बाँसक शाखा-प्रशाखा बहराइत छैक। गीरहक जाहि भागसँ प्रशाखा फूटैत छैक ओकरा **अखुआ/अँखुआ/आँखि** कहल जाइत छैक। अँखुआ पर आरम्भमे एकटा पातर त्रिभुजाकार आवरण रहैत छैक। एकरा **कनसुपती/बनसुपती/सुपती** कहल जाइत छैक। अँखुआ परसँ बहरायल पातर-पातर वंशाकृति प्रशाखाकेँ **कड़ची/कोइन** कहल जाइत छैक।

मिथिलामे बाँसक अनेक प्रभेद उगाओल जाइत अछि। **हरो(डो)त/ हरौ(ड़ौ)ता/ हरौ(ड़ौ)ती/ हरथ/ हरूथी** (बुकनन) बाँस लम्बाइमे छोट मुदा अत्यन्त कठोर किस्मक होइत छैक। ई पातर चीरिकऽ मोडला पर गीरह परसँ टूटि जाइत छैक। तेँ बँसकरममे हारने हरौतक उपयोग होइत छैक। ई बाँस गृह निर्माणक भारवह सामग्रीक रूपमे अधिक उपयोगी होइत अछि।

चाव/चाश/चाभा/चाभी/जाब (बुक०) अपेक्षाकृत अधिक नाम, चिरयबामे सहज ओ पोरगर होइत अछि। अत्यधिक लम्बाइसँ युक्त बाँसकेँ नमछर कहल जाइत छैक। बाँसक **मकोर(ड़)/मकला/मोकला** प्रभेद नमछर, लिबलिबाह ओ लमपोर होइत

छैक। ई दुनू प्रभेद बँसकरमक हेतु प्रशस्त बूझल जाइत अछि।

बाँसक अन्य प्रभेद **बिलैंती** अछि। ई अत्यन्त पातर, छोट आ मजगूत होइत छैक, तेँ एकर व्यवहार खासकऽ लाठी बनयबामे होइत छैक। अत्यन्त मोट बाँसक प्रभेदकेँ **बनबाँस** कहल जाइत छैक।

बुकनन महोदय **पूर्णियाँ** जिलाक तीन गोट बाँसक प्रभेदक उल्लेख कयने छथि–**मलूक, रतन** ओ **घुरघुटिया** *(ऐन स्टैटिस्टिकल एकाउन्ट ऑफ द डिस्ट्रिक्ट ऑफ पूर्णियाँ, पृ० ३०९)।*

आइकाल्हि नेपालक वन्य क्षेत्रसँ आयातित बाँसक सेहो उपयोग होइत अछि। एकरा **नेपाली/पहाड़ी/पहड़िया** बाँस कहल जाइत छैक।

बाँसक गीरह परसँ कड़चीकेँ काटि कऽ पृथक् करबाक क्रिया **पाङब** होइत अछि। पाङला उत्तर कड़चीक जे मूलस्थानीय भाग बाँसमे बचि जाइत छैक, ओकरा **खुट्टी/खोंच** कहल जाइत छैक। खोंचयुक्त बाँसकेँ **खोंचाह/खरखोंच** कहल जाइत छैक। खोंचकेँ छीलि कऽ बाँसकेँ चिक्कन करबाक क्रिया **सजायब/रोलब** (सं० लोलयति) होइत अछि।

बाँसक अन्तिम छोर परक पातरवला भागकेँ **छिप्पी/छिपाठ/ छिपाठी/छीप** कहल जाइत छैक। छिपाठीक बादवला अपेक्षाकृत मोट भागकेँ **अगार(ड़)/अगारी(ड़ी)** कहल जाइत छैक। अगाड़ीक बादवला बाँसक मध्यवर्त्ती भागकेँ **अँधेरा/अँधेरी/मँझगैर** कहल जाइत छैक। **अँधेरी**क बादवला अपेक्षाकृत मोट भाग पोर कहल जाइत अछि। जड़ि दिसुक भागकेँ **जड़ियाठ/जड़ियाठी/जड़ियौठ/जड़ियौठा** कहल जाइत छैक। जड़ियाठ ओ पोरक बीचवला बेस मोटगर भागकेँ **फेरी** कहल जाइत छैक।

जड़ियाठक अन्तिम एक-दूटा पोर **घनगीरह** होइत छैक। एकरा काटि कऽ पृथक् कऽ देल जाइत छैक आ **ठेहा** तथा **मुङरा**क रूपमे व्यवहार कयल जाइत छैक। एहि भागकेँ **मोंहछ** कहल जाइत छैक।

जड़िसँ छीप धरि सम्पूर्ण बाँसकेँ **सरदर/सल्लग/एकसल्लग** कहल जाइत छैक। अकाजक होयबाक कारणेँ छीपकेँ काटि कऽ पृथक् कऽ देबाक क्रिया **छोपब/छिपाठब** होइत अछि। छीप काटल बाँसकेँ **छिपाठल/छिपकट्टा** कहल जाइत छैक।

बाँसकेँ खण्डशः कटबाक क्रिया **टोनब** होइत अछि। टोनला पर बाँसक छोट खण्डकेँ **टोटा/टोंटा/टोनी** कहल जाइत छैक। बाँसकेँ चिरबाक क्रिया **फाड़ब/ओदाड़ब** होइत अछि। बाँसक ओदाड़केँ **चिहुट** कहल जाइछ। काँच बाँसक सुगमतापूर्वक ओदाड़बाक क्रिया **फर फर ओदाड़ब** होइत अछि। सुक्खल बाँसक ओदड़बामे कठिन

होयबाक क्रियाकेँ बाँसक **बैसब/बैसि जायब** कहल जाइत अछि।

बाँसकेँ बीचोबीच चीरिकऽ दू भागमे बँटला पर प्रत्येक खण्ड **फड़ुआ/फाँक** कहल जाइत छैक। फड़ुआकेँ चिरलासँ **फट्ठा/बत्ता** बनैत छैक। पातर फट्ठाकेँ **फट्ठी/बत्ती/बाती** कहल जाइत छैक। चीरल फट्ठा, फट्ठी आदिकेँ **चीर** सेहो कहल जाइत छैक। अँधेरीक चीरकेँ **सिम्मा** कहल जाइत छैक। जाहि चीरमे बाँसक आँखिवला भाग नहि अबैत छैक ओकरा **सझिला/सिधला/सुधला/सोझिला** कहल जाइत छैक। जाहि चीरमे आँखिवला भाग सेहो रहैत छैक ओकरा **गेठिला** कहल जाइत छैक। बाँसक क्रमिक पोरक आँखि विपरीत दिशामे रहबाक कारणेँ गेठिलावला चीरकेँ दू-दू पोर पर गीरह लगसँ काटि देला उत्तर ओ सिधलामे बदलि जाइछ। एहि दू-दू पोरक टुकड़ीकेँ **ओरा/दुपोरा/देपुरा/दोपरा** कहल जाइत छैक।

फाड़ला उत्तर कोनो-कोनो बाँसमे उज्जर रंगक एकटा औषधि भेटैत छैक। एकरा **वंशलोचन** कहल जाइत छैक।

बत्तीक बाह्य त्वचावला भाग **पीठ/पिठिया** कहल जाइत छैक। भीतरी भाग **पेट** कहल जाइत छैक। पेटक उपरका भागकेँ छिलबाक क्रिया **पेट मारब** होइछ। पेट ओ पीठक बीचवला अपेक्षाकृत मोलायम अंशकेँ **गाद/ गादि/ गादी/ गुद्दा/ गुद्दी/ गुड्डी/ छाहा** कहल जाइत छैक। गुद्दाक मोट परतसँ युक्त बाँसकेँ **गदिगर/ गुदगर** कहल जाइत छैक। बत्तीक पिठियावला भाग चीरि कऽ पृथक् कऽ लेलाक बाद गुद्दावला अंशकेँ **गभिया** कहल जाइत छैक।

उपरका भागक अतिरिक्त अंशकेँ छिलबाक क्रिया **छोलब** होइत अछि। छोललासँ जे बेकार भाग पृथक् कऽ देल जाइछ ओकरा **छिल्लन / छीलन / छोलन / झिल्ली / कचरी / कोचरी / खढ़-पतार** कहल जाइत छैक। भीतरी भागक उपरी अंशकेँ छोलबाक क्रिया **गदिआयब** होइत अछि। सतहकेँ छोलिकऽ चिक्कन ओ समतल करबाक क्रिया **चिकनायब** होइत अछि। उपरे-उपरे किञ्चित छिलबाक क्रिया **चाँछब** होइत अछि।

एक पोर नाम बाँसकेँ चीरि कऽ करीब-करीब एक इंच चाकर टुकड़ी सभ बहार कयल जाइत अछि। एहि टुकड़ी सभकेँ **बोइन/बोनि/बोनी** कहल जाइत छैक। बोइनक निचला ओ उपरका भागक मोटाइ एक रंग करबाक हेतु जे अतिरिक्त अंश छीलि कऽ फेकि देल जाइत छैक, ओकरा **कच्चर** कहल जाइत छैक। बोइनकेँ चौड़ाचौड़ी चीरि कऽ निकालल पातर-पातर खंडकेँ **बेंट/बेंत** कहल जाइत छैक। पात सन पातर बेंत सभ **पाट/पाटा/पात/पाता/पाती** कहल जाइत छैक। बन्हनक हेतु उपयुक्त अत्यन्त पातर पाटकेँ **बन्हन/बसौती** कहल जाइत छैक। पाटक छोट-छोट टुकड़ीकेँ **गबहट/गभौट/छीटक** कहल जाइत छैक। काजक क्रममे जे अनुपयुक्त

पाट काटि कऽ फेकि देल जाइत छैक, ओकरा **कट्टुआ** कहल जाइत छैक।

जाहि बत्तीक पेटवला भाग छीलि कऽ चिक्कन कऽ देल गेल रहैत छैक ओकरा **दल/दलिया/दाल/दाइल/दालि** कहल जाइत छैक। मोट दालिवला बत्तीकेँ **दलगर** कहल जाइत छैक। दालिकेँ नामा-नामी चिरलासँ **दलकी/दिलकी** बनैत छैक। चाकर दलकीकेँ **कनरी** ओ गोल दलकीकेँ **काइम/केचुआ** कहल जाइत छैक। काइम ओ कनरीक हेतु सामान्य शब्द **कमची** अछि। पैघ ओ चाकर कमचीकेँ **कमचा** कहल जाइत छैक। अत्यन्त पातर दलकीकेँ **बक्खी/तेरौन/सीट** कहल जाइत छैक। बासनक पेनमे प्रयुक्त तेरौनकेँ **भरनी** कहल जाइत छैक।

दलक चौड़ाइवला भागकेँ ओदाड़िकऽ निकालल पातर-पातर टुकड़ी सभ **कारा/काँरा** कहल जाइत छैक। गिंठयावला काराकेँ **गोइट/गोटि** आ गभियावला काराकेँ **मेण्डा/मण्डी/मेण्डी** कहल जाइत छैक। गोटि, मण्डी आदिक अग्रभागकेँ छीलिकऽ नोखगर करबाक क्रिया **खपब** होइत अछि।

काइम, कनरी, पाट आदिक रौदमे सूखिकऽ कठोर भऽ जयबाक क्रिया **खरायब/खरा जायब** होइछ। बाँसकेँ छिलबाक क्रममे घर्षणसँ त्वचाछेदनकेँ **चँछायब** कहल जाइत अछि आ एहिसँ उत्पन्न विकृतिकेँ **चाँछ** कहल जाइत छैक। कखनो-कखनो बाँसक सूक्ष्म शल्याकृति चाममे घुसि जाइत छैक। एकरा खैंढ़ कहल जाइत छैक।

डोम द्वारा निर्मित बासन सभमे पाटेसँ बन्हन देल रहैत छैक। मुदा बन्हन हेतु तारक पात, ओकर डंटीवला भाग, बेंत एवं थकरी नामक घासक उपयोग सेहो देखल जाइत अछि। तारक पात **छज्जा/छाजा** कहबैछ। पातक डंटीवला भागकेँ **डल्ली/ डमखोरा** कहल जाइत छैक। डल्लीकेँ छीलि कऽ निकालल पातर टुकड़ी सभकेँ **चोप** कहल जाइत छैक।

बँसकरममे सौन्दर्यक हेतु अनेको बासनकेँ रङलो जाइत अछि। एहि हेतु **सिकिया, गुलाबी, गन्हकी** ओ **हरियर** रंगक उपयोग होइत अछि। अत्यन्त लालीयुक्त गाढ़ रंगकेँ सिकिया, हल्का लाल रंगकेँ गुलाबी, पीयर रंगकेँ गन्हकी ओ हरित वर्णकेँ हरियर कहल जाइत छैक।

बँसकरमक औजार सम्बन्धी शब्दावली

बँसकरममे बाँसकेँ कटबाक हेतु, चिरबाक हेतु एवं ओहिसँ पातर-पातर ओदाड़ बहार करबाक हेतु विभिन्न आकृतिक लौह औजारक उपयोग होइत अछि। करीब एक फुट नाम, चारि आङुर चाकर ओ आधा आङुर मोट लौह औजारकेँ **कत्ता/ काता/ कतिआ/ बाँके** कहल जाइत छैक। पैघ ओ टेढ़ आकृतिक कत्ताकेँ **दाब/ दाबि/ दबिया/ दबिला** कहल जाइत छैक। करीब बीत भरि नाम दू आङुर चाकर कत्ताक

प्रभेदकेँ **कोतरा** कहल जाइत छैक। कोतराक अत्यन्त लघु आकृतिकेँ **कोतरी/ चूड़ी/ बन्हकरिया** कहल जाइत छैक।

बाँस फाड़बाक काती पर आघात करबाक लेल बाँसक जड़ि दिसुक एक-दू पोरक खंडक व्यवहार कयल जाइछ। एकरा **मुँगरा/मुङरा/मुङ्गरा/मुङरि/मुङरी** कहल जाइत छैक। फाड़बामे सुविधाक हेतु दूटा अलगल फाँकक बीच देल वंशखण्ड अथवा रोड़ा आदिकेँ **बँसफाड़ा/खुभिया** कहल जाइत छैक।

बसौतीकेँ चिक्कन करबाक हेतु ओकरा एकटा बाँसक पातर टोन पर राखि ओहि पर हल्लुकेसँ कोतरा दऽ बाम हाथें पीचि रंदा कयल जाइत छैक। बाँसक एहि टोनकेँ **बन्हनचच्छा/धीरा** कहल जाइत छैक।

सिरकी बनयबाक हेतु दुइ गोट खुट्टा, सुतरी ओ लकड़ीक गुटकाक उपयोग होइत छैक।

माटिक जाहि वासनपे रंग राखल जाइत छैक, ओकरा **रंगहा** कहल जाइत छैक। तैयार बासनकेँ रङबाक हेतु खजूरक डल्लीक निचला भागकेँ चूरि कऽ बनाओल औजारक उपयोग होइछ। एकरा **कूच/कूची/कुच्ची** कहल जाइत छैक।

बासन छनबाक हेतु एकटा तौला अथवा ओकर कनखावला भागक उपयोग होइत छैक। एकरा **लधना** कहल जाइत छैक।

बँसकरमक उत्पादन सम्बन्धी शब्दावली

बँसकरम द्वारा बाँसक विभिन्न प्रकारक गृहस्थोपयोगी उपकरण सबहिक निर्माण कयल जाइत अछि। बाँसक एहि उपकरण सभकेँ **बसही/बँसही** कहल जाइत छैक।

बाँसक बत्तीसँ अन्न रखबाक अत्यन्त पैघ गोल आकृतिक भांडारगृहक निर्माण कयल जाइत छैक। एकरा **ढाक/ढाढ़/बखारी/बथारी/बदारी** कहल जाइत छैक। अत्यन्त पैघ आकृतिक बखारीकेँ **ढाढ़ा/बखार** कहल जाइत छैक। छोट बखारीकेँ **कोटि/कोठी/ठेकं/ ढक/ढाढ़ी/बेढ़ी/मड़र** कहल जाइत छैक। ढककेँ कतहु-कतहु **मुनहर** सेहो कहल जाइत छैक। **ढक-मुनहर** युग्म शब्दक रूपमे प्रचलित अछि।

बखारीक आधारकेँ **पेन/पेना/पेनी/पेंदी/पेंदो** कहल जाइत छैक। एकर मध्यवर्त्ती खाली भागकेँ **पेट/पेटी** कहल जाइत छैक। बखारीक ढक्कन खऽढ़, बत्ती आदिसँ बनाओल चार रहैत छैक। ठेक आदिकेँ झँपबाक ढक्कनकेँ **पिहना/ पिहान/ पिहानी/ पेहना/ पेहान/ पेहानी** कहल जाइत छैक। बखारीसँ अन्न बाहर करबाक खुलल भागकेँ **मुँह/छेद** कहल जाइत छैक।

अन्नादिकेँ रखबाक ओ स्थानान्तरित करबाक हेतु अनेक आकृतिक बासन सभ बनैत अछि। एहि बासन सभमे कारा, काइम ओ कनरीक उपयोग होइत छैक। एकरा

सभकेँ **अखरा** कहल जाइत छैक।

अखरा बासन सभसँ पैघ प्रभेद **ओड़ा/ओड़िया** होइत अछि। एहिमे दू मनसँ अधिक अन्न अँटैत छैक। छोट ओड़ाकेँ **ओड़ी** कहल जाइत छैक।

छिट्टा-पथिया आदिमे काइम अथवा कनरीक प्रत्येक घेराकेँ **मेढ़** कहल जाइत छैक। पाट सभकेँ सम्बद्ध करबाक हेतु छिट्टाक जड़िमे अपेक्षाकृत चाकर पाटक उपयोग होइछ। एहि पाटकेँ **साटन** कहल जाइत छैक। छिट्टाक उपरी भागमे उपरका मेढ़ सभकेँ नीचा दिस घिचने रहबाक हेतु काइमसँ लहरिक आकारक देल चारूकातक बन्हनकेँ **नथनी** कहल जाइत छैक।

ठाढ़ घेरावला ओड़ीक छोट प्रभेदकेँ **ढाक/ढाका** कहल जाइत छैक। छोट ढाककेँ **ढाकी** ओ एकर लघु प्रभेद **छिटी/छिट्टी/छेंटी** कहल जाइत अछि।

ढालू कोर वला छिट्टाकेँ **पथिया/दउरा** कहल जाइत छैक। छोट पथियाकेँ **पथनी/पथुली/दउरी** कहल जाइत छैक। पान रखबाक छोट पथनीकेँ **पनपथिया/पनबसना** कहल जाइत छैक। सिदहा रखबाक छोट पथिया **सिधौकी** ओ कुटान-पिसानमे व्यवहृत छोट पथिया **कुटपिसिया** कहल जाइत छैक।

कम ठाढ़ घेरावला बासन **टोकरी/टोपरी** कहल जाइत अछि। एकर पैघ प्रभेद **टोपः/टोकरा/टोपरा** होइत छैक।

जाहि छिट्टा आदिमे जतेक अन्न अँटैत छैक ताहि आधार पर ओकरा सभकेँ **पँचसेरी, दससेरी, अधमोनी/अधमन्नी, एकमन्नी/मोनही, दोमोनी/दुमन्नी/दुमोनी** आदि कहल जाइत छैक।

फलादिकेँ एक स्थानसँ दोसर स्थान पर स्थानान्तरित करबाक हेतु अत्यन्त पातर ओ विरल काइमसँ बनल ढक्कनयुक्त टोकरीक व्यवहार होइत अछि। एकरा **खाँची/खाँझी/खैंझी/खोंची/खोङ्ची/झब्बा** कहल जाइत छैक। एकर पैघ प्रभेद **खाँच/खाँचा/खंझा/खैंचा/खैंझा** कहल जाइत अछि आ अधिक छोट प्रभेद **खचिया/खचोली** होइत अछि।

मुसहर माटि उघबाक हेतु एकटा उत्थर बासनक उपयोग करैत अछि! एकरा **मटिकट्टा/टाला** कहल जाइत छैक।

उपरसँ पाटक बिनाइसँ युक्त दोहरा छिट्टाकेँ **धम्मा** कहल जाइत छैक। एकर छोट आकृति सभ **धाइम/धामि/धामी/धमिया** होइत अछि।

चाउर आदि फटकबाक हेतु पाटसँ बीनल वृत्ताकार बासनकेँ **सूप/सूपा**(प्रसिद्ध कहबी: 1. सूपक भाँटा 2. खाइ पियै लय सुखराती, डेङबै लय सूप) कहल जाइत छैक। किछु क्षेत्र ओ वर्गमे एकरा **डगरा**(प्रसिद्ध कहबी: डगराक बैगन) कहल जाइत छैक।

एकर छोट प्रभेद **डगरी** कहल जाइत छैक।

डगराक आधारवला भागकेँ चटबा कहल जाइत छैक। दूटा चटबासँ युक्त डगरा **दोहरा डगरा** कहबैछ। चटबाक नीचा दिसुक पाटकेँ **छान** आ ऊपर दिसुक पाटकेँ **बहरौट** कहल जाइत छैक। एकर चारूकातक मण्डलीकृत घेराकेँ **मर्रा/ मरड़ा/ मर्री/ मरड़ी** कहल जाइत छैक। मरड़ाक हेतु गोटि ओ मण्डीक व्यवहार होइत छैक। एकरा वृत्ताकार परिपथमे मोड़बाक क्रिया **असनायब** होइत अछि। मोड़ल मरड़ामे देल तात्कालिक बन्हनकेँ **बसौती** कहल जाइत छैक। मरड़ाक परितः अपेक्षाकृत कम चाकर दोसर मरड़ाकेँ **केतला** कहल जाइत छैक। मरड़ा ओ केतलाक बीच चटबाक कोरवला भाग फँसल रहैत छैक। एहि मध्यवर्त्ती भागकेँ **गहबन** कहल जाइत छैक। बन्हन देबामे सुविधाक हेतु केतलाक चारू कात अत्यन्त पातर पाटक घेराकेँ **बहरी/ बेहरी/ बेढ़ी/ टोपिया** कहल जाइत छैक। बन्हनक अन्तिम छोर पर ओहिसँ बनल वृत्ताकार परिपथ जकर सहायतासँ डगराकेँ काँटी आदिमे टाङल जा सकैत छैक, से **टंगना / टंगनी** कहल जाइत छैक।

अन्नादिकेँ उठयबाक ओ फटकबाक हेतु पाछू ओ दुनू पाँजर दिस घेरायुक्त बासनक उपयोग होइत अछि। एकरा **कोनिञा(याँ,आँ)/कोनसूप/कोलसूप** कहल जाइत छैक। जाहि समाजमे सूपक हेतु डगरा शब्दक व्यवहार होइछ, ताही समाजमे कोनिआँकेँ **सूप** कहल जाइत छैक। एहि बासनक घेरा आगूसँ पाछू दिस क्रमशः बढ़ल रहैत छैक आ पछिला दूनू छोर पर कोन बनल रहैत छैक! एकर दुनू कातवला भागकेँ **बाँही** ओ पाछूवला भागकेँ **दोना** कहल जाइत छैक। छोट कोनिञाकेँ **सुपती** कहल जाइत छैक।

चिक्कस आदिकेँ चालबाक हेतु एकटा छिद्रमय बासनक उपयोग होइत अछि। एकरा **चलनिञा/चलनी/चालनि**(प्रसिद्ध कहबी: क. 'चालनि दुसलनि सूपकेँ जनिका सहस्सर गोट छेद। ख. कोन पुरुषकेँ भेलहु गाय। चालनि लऽ दुहाबऽ जाय।) कहल जाइत छैक। एहि बासनक चारूकात करीब चारि-पाँच आङुर ऊँच वृत्ताकार घेरा रहैत छैक। घेरावला भागकेँ **खखरी** कहल जाइ छैक। एकर छिद्रमय आधारकेँ **तरी** कहल जाइत छैक। तरीक छेद सभकेँ **बे/आखरि** कहल जाइत छैक। तरीमे दू प्रकारक पाट लगैत छैक। तरवला अपेक्षाकृत कम चाकर पाटकेँ **छनकी** ओ ऊपरवला अपेक्षाकृत बेसी चाकर पाटकेँ **दत्ता** कहल जाइत छैक।

धानक गूड़ाकेँ भुस्सासँ पृथक् करबाक हेतु डगराक आकृतिक छिद्रमय बासनक उपयोग होइछ। एकरा **चलना/गुरचल्ला/गुरचलना/गुरचाला** कहल जाइत छैक।

हवा करबाक चौखूट साधन **बीअ(य)नि/बेना/बेनियाँ(आँ,ञा)** होइत अछि। एकर छोट प्रभेदकेँ **बीनी** कहल जाइत छैक। एकर लम्बाइवला भागक एक दिस दुनू

कातसँ दुइ गोट चाकर मण्डी चौकोर भागकेँ चपने बान्हल रहैत छैक। एकरा **पटकम्हो/पराँच** कहल जाइत छैक। बीयनिकेँ नचयबाक हेतु दूनू पराँचक कातमे एकटा गीरहयुक्त बेँत लागल रहैत छैक। एकरा **डाँट** कहल जाइत छैक। डाँटक निचला भागमे एकटा पातर वंशाग्रक फोंक बेलन घुसाओल रहैत छैक। एकरा **छुच्छी/फोंफी/लारी** कहल जाइत छैक।

कोइलाक चूल्हि पजारबाक हेतु डाँट ओ लारीविहीन दोहरा बीयनिकेँ **पंखा/पंखी** कहल जाइत छैक।

अन्न आदिकेँ जोखबाक उपकरण **तरजू/तराजू/तरजुइ** होइत अछि। तराजूक पलड़ा बाँसोसँ बनाओल जाइत अछि। पलडाक आधारवला भाग कारा ओ काइमसँ बीनल जाइत छैक। एकरा **अखरा** कहल जाइछ। उपरवला भाग पाटसँ बीनल रहैत छैक। एहि भागकेँ **गिलेफ/छाँछी** कहल जाइत छैक। अखरा ओ छाँछीक जोड़ पर देल पातर मंडीकेँ **जीही** ओ गोइटकेँ **मथामि/मथनी** कहल जाइत छैक। जीही ओ मथनीक बीच देल पातर मंडीकेँ **कंठी** कहल जाइत छैक।

पानक बीड़ा रखबाक दूटा परस्पर सम्बद्ध होअऽवला खोलसँ बनल बन्द पात्रकेँ **बिर(ड़)हरा/बिर(ड़)हारा** कहल जाइत छैक। एकर पैघ आकृतिमे टकुरी, सूत आदि सेहो राखल जाइत अछि। कृषि कोषमे एकरा **बेलहर/बेलहारा** कहल गेलैक अछि (कृषि कोष, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, भाग-२,पृ०-२३२)।

पाबनि-तिहार, यज्ञ ओ संस्कारक हेतु सेहो अनेक प्रकारक बासन बँसकरम द्वारा उत्पादित होइत अछि। एहि सभ काजक हेतु डोमेद बनाओल बासनकेँ प्रशस्त बूझल जाइत छैक। एहन बासन सभ **डोमउ** कहल जाइत अछि।

विआहमे धामिक आकृतिक एकटा पैघ बासनक प्रयोजन होइत छैक। एकरा **गँहिरका डाला** कहल जाइत छैक। एकर उपरका भागमे मेहराबक आकृति बनाओल रहैत छैक। एहि आकृतिकेँ **पालकी** कहल जाइत छैक। डालाक आधारकेँ जमीनसँ ऊपर रखबाक व्यवस्थाकेँ **गोड़ा** कहल जाइत छैक। डालाक पालकी ओ बाह्य भागमे अनेक प्रकारक बीनल आकृति सभ खोंसल रहैत छैक। फूलक आकृतिक सजावटकेँ **फुलपत्ती**, जिलेबीक आकृतिक बनावटकेँ **सूगा/पौड़की** कहल जाइत छैक। कोना-कोनो डालामे एकटा चौखूट केन्द्रक परित: पाट सभक दोसर छोर छिड़िआयल रहैत छैक। एहि बुनाइकेँ **घिरनी** कहल जाइत छैक। कतहु कतहु अनेक रंगीन पाटक एक छोरकेँ संश्लिष्ट कऽ दोसर छोर सभकेँ छिड़िआकऽ सौन्दर्य उत्पन्न कयल जाइत छैक। एहि सजावटिकेँ **झार / झुनझुना** कहल जाइत छैक।

डालाक मध्यवर्त्ती भागमे चारूकातसँ मजगूतीक हेतु देल मण्डीकेँ **हड़िड़ा/हड़िला / हिड़ड़ा / हिड़ला** कहल जाइत छैक।

कोजागरा, द्विरागमन आदिमे गोड़ा लागल उत्थर बासनक व्यवहार होइत अछि। एकरा **डाला** सेह कहल जाइत छैक।

कन्याक द्विरागमनक साँठमे गोल आकृतिक गँहीर ढक्कनयुक्त बासन देल जाइत छैक। एकरा **पेटाढ़/पेटार/झाँप/झाँपा** कहल जाइत छैक। एकर पैघ प्रभेद **पेटारा** कहल जाइछ। छोट आकृतिक पेटारकेँ **पेटाढ़ी/पेटारी/पौती** कहल जाइत छैक। शृंगारक वस्तु रखबाक छोट पौतीकेँ **मुँहपोछनी** कहल जाइत छैक। वस्तुजात रखबाक पैघ समतल पौतीकेँ **सखारी** कहल जाइत छैक।

पौतीक नोचावला भागकेँ **तरोटा/तरौटा/तलौटा/सरिखा** कहल जाइत छैक। एकर उपरका गुम्बदाकार भाग **झाँप/झपना/झाँपन** कहल जाइछ।

पौतीक बिनाओट दोहरा होइत छैक। बाहरी भाग कारा ओ काइमसँ बीनल जाइत छैक आ भीतरी भाग पाटसँ। पाटसँ बीनल भाग **पेन्हौटा** कहल जाइत छैक ।

भारमे मिठाइ आदि सँठबाक हेतु पौतीक आकृतिक गँहीर बासनकेँ **दलबा/काठी** कहल जाइत छैक। एहिमे पाटक बिनाइ नहि रहैत छैक।

केरा आदिक भार सँठबाक हेतु काइम ओ कारासँ बीनल अत्यन्त कम घेरा युक्त गोल ओ उत्थर पात्रकेँ **अखरा/दौरा/दउरा** कहल जाइत छैक। अखरापर पाटक बिनाइसँ युक्त दोहरा दौराकेँ **चँगेरा/चङेरा** कहल जाइत छैक। विआहमे प्रथम परिछनकालमे जाहि चँगेरामे ठक-वक आदि राखि वरसँ प्रश्न सभ पूछल जाइत छैक, ओहि चङेराकेँ **चानडाला/जानडाला**(सं० ज्ञानडाला) कहल जाइत छैक। छोट चङेराकेँ **चँगेरी/चङेरी/चँगेली/दउरी/फुलुकी/फुलौकी** कहल जाइत छैक। सांठक हेतु दही पौरबाक छोट चँगेरी **ताइ** कहबैछ। अत्यन्त छोट आकृतिक चँगेरीकेँ **डाली/डलिया** कहल जाइत छैक। गँहीर डालीकेँ **भौकी/मौनिया/मौनी** कहल जाइत छैक। पैघ ओ अधिक गँहीर भौकीकेँ **भौका** कहल जाइत छैक। धियापुताक जलखइ करबाक छोट मौनीकेँ **चाँग/चाङ** कहल जाइत छैक।

भारक हेतु छोट-छोट पथियाकेँ **हकरा पथिया** कहल जाइत छैक। मधुश्रावणी ओ बड़िसातिमे पूजनक हेतु बाँसक एकटा गोल आकृतिक समतल बासनक उपयोग होइत छैक। एकरा **छितनी** कहल जाइत छैक। एकर पैघ प्रभेदकेँ **छितना** कहल जाइत छैक। मधुश्रावणीमे टेमी दगबाक विधिक हेतु जाहि डालीमे घोंघा, लहेरनी आदि पठाओल जाइत छैक, ओकरा **लीलीडाली/लीलीमौनी** कहल जाइत छैक। विआहमे वरकन्या द्वारा लावा छिड़िअयबाक छोट सन सुपतीकेँ **कोनीबेनी/धनडाली** कहल जाइत छैक।

रौद-वर्षासँ बचबाक हेतु पाटसँ बीनल एकटा डंटी लागल गोल उपादानक व्यवहार होइत अछि। एकरा **छत्ता/छाता/मेघडम्बर/मेघडम्मर** कहल जाइत छैक।

जाइत छैक। छेहर बिनौटवला बासन **झाँझर/झझरी** कहल जाइछ। जाहि बासनक बाह्य भाग छिड़िआयल रहैत छैक ओकरा **छितनार** कहल जाइत छैक। बासनक प्रत्येक अंग दोसर अंगक अनुरूप नाम अथवा चाकर नहि रहने ओकरा **बेडोल/बेडौल/बेठब** कहल जात छैक।

बिनौटमे कारा अथवा पाटक संख्या ओ लम्बाइ वस्तुक आकृतिक अनुरूप लेल जाइत छैक। अयुग्म संख्याक हेतु **काग** ओ युग्म संख्याक हेतु **दोस** शब्दक व्यवहार होइत छैक। बिनौटक हेतु कारा अथवा पाटकेँ काग रहब आवश्यक बुझल जाइत अछि। से नहि रहने कारामे बन्हन नहि पड़ि पबैत छैक। एहन बिनौटकेँ **कुबान्ह/ कुबान/ उबान्ह/ उबान** कहल जाइत छैक। एकरा ठीक कयलासँ उत्पन्न बिनौट **सुबान/ सुबान्ह** कहबैछ।

बिनबाक क्रममे काइमक ओझरयबाक क्रिया **छिटकी मारब** होइत अछि। बिनैत-बिनैत काइम खतम भऽ गेला पर ओहि स्थान पर देल नव काइमकेँ **खोचर/खोचरि** कहल जाइत छैक। कोनो कारा छोट कटि गेला पर बिनैत काल ओहि कारामे देल जोड़केँ **पच्चर** कहल जाइत छैक। बासनक भङठीक क्रममे लगाओल काइम, कारा आदिकेँ **चिप्पी/चापी** कहल जाइत छैक। काइम, कारा अथवा पाटक अपन स्थान छोड़ि देबाक क्रिया **सरकब/फसरब** होइत अछि।

एहि तरहेँ बँसकरममे रूढ़, यौगिक ओ योगरूढ़, परम्परागत ओ गृहीत शब्दावलीक प्रयोग होइत अछि। एहिमे संज्ञाक लघु, गुरु आ गुरुतम तीनू कोटि भेटैत अछि। एहिमे प्रयुक्त क्रियापद सामान्ये प्रकृतिक अछि, मुदा विशिष्ट अर्थमे रूढ़ पारिभाषिक प्रकृतिक नामधातुक निदर्शन भेटैत अछि। उच्चारण ओ वर्त्तनी भेदक कारणेँ एहिमे प्रयुक्त शब्द सभमे वैकल्पिकताक बाहुल्य देखि पड़ैत अछि। शब्द-साधनाक अनेक आयामक प्रयोग एहि शब्दावलीक विशिष्टता थिक। ध्वनिक दृष्टिऍ देखला उत्तर एहि शब्दावलीमे मैथिलीक प्रकृतिक अनुरूप बहुधा ह्रस्वतर स्वरक प्रयोग, स्वर गुच्छ ओ व्यञ्जन गुच्छक अवस्थिति दृष्टिगोचर होइछ। ध्वनि ओ अर्थ परिवर्त्तनक विभिन्न आयाम एहि शब्दावलीमे ताकल जा सकैत अछि।

वस्तुतः एहि शब्दावलीक संकलन ओ व्याख्या मैथिलीक व्यावसायिक शब्दावलीक अर्थच्छटाकेँ अभिव्यक्त कऽ सकबाक दिग्दर्शन मात्र अछि आ मैथिलीक शब्द-सम्पदा खास कऽ वृहत् व्यावसायिक शब्दकोशक हेतु शब्द सम्पदाकेँ प्रस्तुत कऽ सकबाक एकल प्रयास, जकर समेकित विस्तार मैथिलीक शब्द-सम्पदाक संरक्षण ओ संवर्द्धनक हेतु परमावश्यक अछि।

ई कृति

- जाहि आलोचनाकेँ लोक मात्र छंद आ शब्द नापयवला फोता भरि बुझैत आयल अछि, जाहि व्यर्थ आ अनर्गल प्रयाससँ आलोचना मात्र बदनामेटा नहि होइत अछि, अपन अस्तित्व सेहो समाप्त कऽ लैत अछि, एहेन स्थितिक ठीक विपरीत डा. योगानन्दजीक ई श्लाघनीय प्रयास समकालीन रचनाक संसारमे समीक्षा कर्मकेँ मान-सम्मान आ विश्वसनीयता सेहो दियौतैक, ई हमर एकान्त आ दृढ विश्वास अछि।
- समीक्षा ओ समालोचना वस्तुतः कोनो भाषा-साहित्यक पाठकवर्गकेँ तैयार करबामे अहम् भूमिका निर्वाह करैत छैक। ई रचनाक प्रातिभ नेओमे पर अपन भवन तैयार करैत अछि। एहि रूपमे ओ अनुचिन्तने थिक, मुदा थिक चिन्तने। एहि पोथीकेँ पढ़ैत काल रैड़ बेर-बेर मोनमे अबैत अछि।
- एहि इमानदार प्रयास पर दृष्टि देबाक ओहि लोक सभकेँ बेसी आवश्यकता छनि जे निराग्रही आलोचनाक भूखल छथि।
- डा. योगानन्दझा साहित्य-सर्जना करैत छथि, साहित्यमे जीबैत छथि, अन्तस्मे गवेषणाक पिआस सदति बनल रहैत छनि। तेँ शिष्ट-विशिष्ट शैलीमे लिखल एहि पोथीसँ मैथिली साहित्यक शोधप्रज्ञलोकनि बेसी उपकृत होयताह।

(पुरोवचनसँ)

मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष

मैथिली पत्रकारिता के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में रचित डा० योगानन्दझा की यह पुस्तक मैथिलेतर जगत् में मैथिली पत्रकारिता के गौरवमय इतिहास को तो प्रस्तुत करती ही है, साथ ही मिथिलावासियों के चिन्तनधारा का भी प्रतिवादन करती है।

(डा० मिथिलेश कुमारी मिश्र)
अनुसंधान पदाधिकारी, लोकभाषा विभाग
बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना